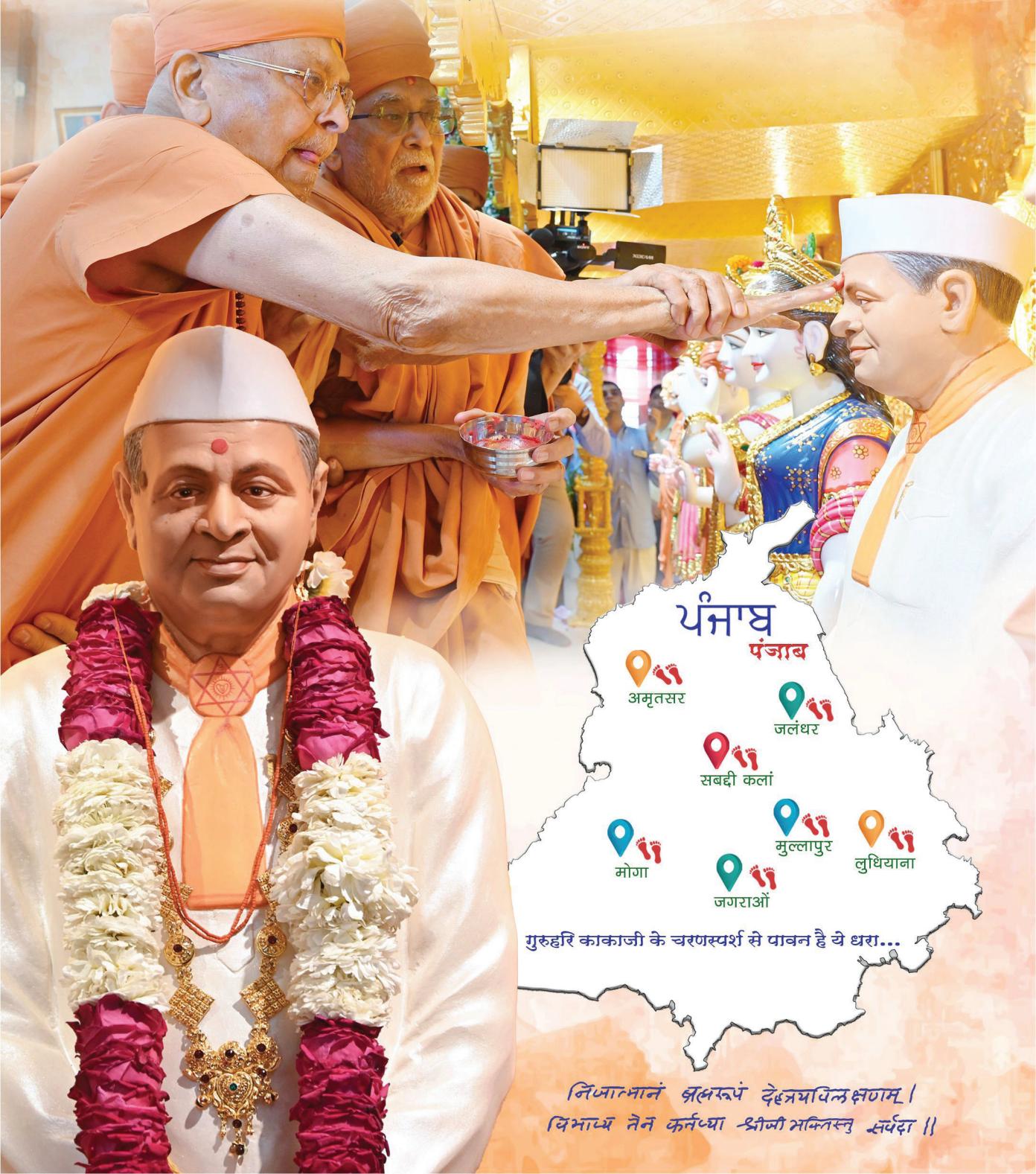


वर्ष: 48 अंक: 2 27.5.2025 मंगलवार (मार्च-अप्रैल) वार्षिक शुल्क : ₹ 111.00

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

# भगवत् कृष्ण

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये



## ਪੰਜਾਬ ਪੰਜਾਬ

अਮृतसर

जलंधर

ਸਬਦੀ ਕਲਾਂ

ਮੋਗਾ

ਮੁਲਾਪੁਰ

ਲੁਧਿਆਣਾ

गुरुहਰि काकाजी के चरणस्थर्ष से पावन है ये धरा...

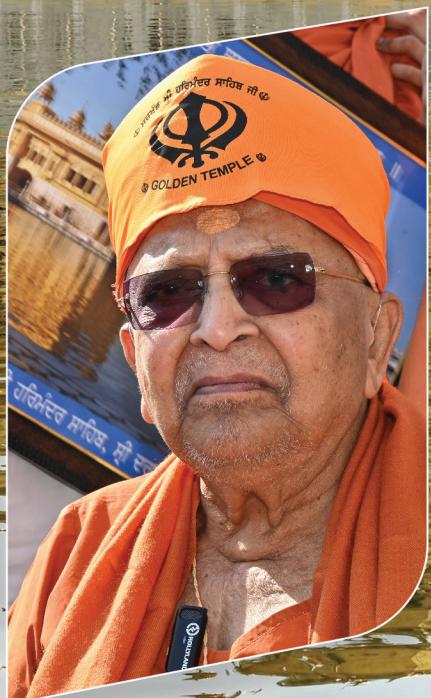
निखात्मानं ब्रह्मरूपं देहजयिन्करणम् ।  
विभाष्य तेन कर्त्त्वा श्रीमी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

20 फरवरी - प.यू. गुरुजी का पंजाब विचरण...



पटियाला में पू. विमल चौधड़ाजी के घर की पावन किया...

21 फरवरी, अमृतसर – ‘हरमंदिर साहब’(Golden Temple) के दर्शनार्थी...





‘हरमंदिर साहब’ (Golden Temple) की स्मृतियाँ...



अमृतसर में पू. सुनीता ग्रोवरजी की बेटी  
पू. शगुन - दामाद पू. राहुल महेश्वरीजी के घर यधरावनी...



22 फरवरी- जगरांव में पू. रविन्द्रजी व पू. सनी जयस्वाल के घर यादशाब्दी...



प.पू. गुरुजी की निशा में पू. राजीव झाँड़ीजी के Rachna Resort में सत्संग सभा...



23 फरवरी  
सबद्वी कलां में मुक्तों के घर



पू. चेतन भार्गवजी



पू. सोनू- पू. बंदन अग्रवालजी



पू. बलवंत सिंहजी



गुरुहरि काकाजी महाराज का प्रासादिक स्थल  
(स्व. पू. धर्मयालजी का घर)



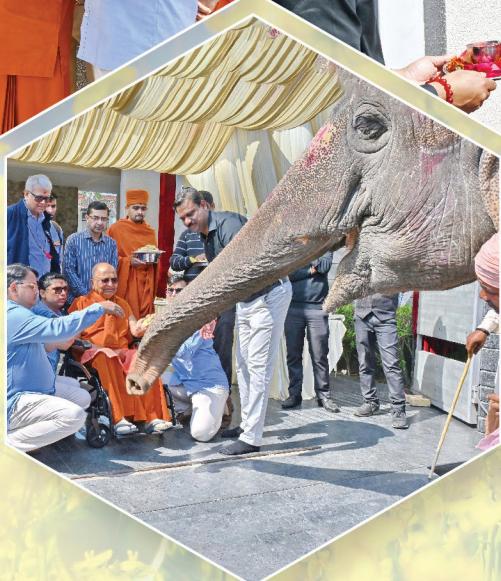
पू. कुलदीप कौरजी

जगरांव के  
पू. रजत अरोड़ाजी के  
Petrol Pump पर पद्धरावनी...



मोगा में पू. विकास वर्माजी के  
घर पर सत्संग सभा...

## सोगा में पू. आशीष अग्रवालजी के घर की स्मृतियाँ...





## 20-24 फरवरी 2025 य.पू. गुरुजी का पंजाब विचरण

भगवान् स्वामिनारायण ने स्वयं आदर्श स्थापित करके अपने संतों को प्रेरणा-आङ्गा दी है कि उनके धारक संत भले ही ऐसी उच्च कक्षा पर पहुँचें कि अपने संकल्प से आश्रितों को सुखी-संपन्न कर सकें, परंतु उनकी आङ्गानुसार 14 जनवरी को ‘मकर संक्रांति’ निमित्त घर-घर भिक्षा मांगने के लिए अवश्य जाकर स्मरण रखें कि साधु का धर्म तो भिक्षा द्वारा जीवन निर्वाह करना है। प्रति वर्ष प.पू. गुरुजी, पू. सुहृदस्वामीजी एवं संतगण दिल्ली एवं उसके आस-पास रहते स्थानीय भक्तों के घर भिक्षा हेतु जाते हैं। 7 जनवरी की भजन संध्या में पंजाब से कुछ मुक्त दिल्ली मंदिर आए हुए थे। उन्होंने भावना व्यक्त करते हुए कहा— संक्रांति निमित्त संतगण पंजाब के भक्तों के घर भिक्षा के लिए आ सकेंगे? अतः जनवरी के अंत में भिक्षा निमित्त पू. सुहृदस्वामीजी व संतों ने पंजाब जाने का कार्यक्रम बनाया। प.पू. गुरुजी को इस कार्यक्रम के बारे में बताया, तो उन्होंने भी पंजाब के मुक्तों को दर्शन देने हेतु साथ चलने की इच्छा जाहिर की। परंतु, प.पू. गुरुजी की तबियत-आयु को देखते हुए तब बहुत सर्दी थी और 3 फरवरी गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन-पाठोत्सव को ध्यान में रखते हुए पंजाब जाना रद्द किया। फिर सर्दी कम होने पर 20 से 24 फरवरी पंजाब जाने का कार्यक्रम बना।

20 फरवरी की सुबह नाश्ता करने के बाद पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, संतों-सेवकों व प.पू. दीदी, बहनों तथा कुछ हरिभक्तों को साथ लेकर प.पू. गुरुजी पंजाब के लिए रवाना हुए। गुणातीत स्वरूप अकसर कहते हैं कि सच्चे संत की हर एक क्रिया ब्रह्मनियंत्रित होती है। अपने दर्शन व संबंध से अनंत जीवों का कल्याण करना ही उनके जीवन का ध्येय है। अतः गुरुहरि काकाजीमय प.पू. गुरुजी ने पटियाला जाते हुए रास्ते में किसी अनजान घर से छाछ पीने की इच्छा प्रकट करी। प.पू. गुरुजी की गाड़ी के साथ कुछ मुक्तों की गाड़ी भी थी। Village Assarpur (CHEEMA FARM), Near Our Lady Of Fatima Convent School, District Patiala में रहते श्री गुरविंदर सिंह (चीमाजी)-श्रीमती लखविंदर कौरजी के घर के बाहर प.पू. गुरुजी ने गाड़ियाँ लुकवाईं। सेवकों और बहनों ने उनके सुपुत्र श्री अर्षदीप सिंह से बात करी कि प.पू. गुरुजी को छाछ पीनी है, तो उनकी माँ श्रीमती लखविंदरजी ने बहुत भाव से न केवल अपने घर की गाय के दूध-दही से छाछ बनाई, बल्कि गरम रोटी बना कर आचार के साथ प.पू. गुरुजी के लिए भिजवाई। जिस आदर-भाव से इस परिवार ने अपने उच्च संस्कारों का परिचय दिया, उससे गुरुहरि काकाजी महाराज के कहे वचन याद आए। वे कहते थे— **पंजाब**

## के लोगों को संतों के प्रति खूब भाव होता है।

दोपहर करीब 3:00 बजे पटियाला में पू. विमल चोपड़ाजी के घर पहुँचे। उन्होंने सभी के लिए भोजन की बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। श्री ठाकुरजी का थाल, धुन-भजन करके प्रसाद लेने के बाद मोगा के लिए प्रस्थान किया। रात को तकरीबन 9:00 बजे मोगा में पू. आशीष अग्रवालजी के घर पहुँचे। प्रसाद लेकर सभी अपने-अपने ठहरने के स्थान पर विश्राम करने गए और प.पू. गुरुजी, संतगण एवं सेवक पू. आशीष अग्रवालजी के घर ठहरे।

पिछले दो साल से जब-जब प.पू. गुरुजी का पंजाब जाना हुआ, तब उन्होंने अमृतसर में स्थित ‘हरमंदिर साहिब’ (Golden Temple) और ‘वाघा बॉडर’ जाने की इच्छा जाहिर की। लेकिन, किसी न किसी कारण वह रह जाता। अबकी बार कार्यक्रम बनाते हुए संतों-सेवकों ने पंजाब-मोगा पहुँचने के अगले दिन अमृतसर जाने का तय किया। सो, 21 फरवरी की सुबह नाश्ता करने के बाद, प.पू. गुरुजी मुक्तों सहित अमृतसर के लिए रवाना हुए। हरमंदिर साहिब (Golden Temple) के दर्शन उपरांत सभी ‘बाबा कुंदन सिंहजी संगत निवास (सराय)’ गए। पू. रवि गुप्ताजी के संबंध से प.पू. गुरुजी के जोग में आए दिल्ली के पू. सोनौजी ने यहाँ प्रसाद की बहुत अच्छी व्यवस्था कराई थी। यहाँ प्रसाद लेकर वैसे तो ‘वाघा बॉडर’ जाने का कार्यक्रम था, परंतु वर्षों से दिल्ली मंदिर से आत्मीयता से जुड़ी पू. सुनीता ग्रोवरजी के बेटी-दामाद पू. शगुन व पू. राहुलजी महेश्वरीजी की प्रबल भावना थी कि प.पू. गुरुजी उनके घर आएँ। भक्तों के अंतर की प्रार्थना भगवान व गुणातीत साधु तक ज़रूर पहुँचती है। सो, मर्यादित समय के कारण वाघा बॉडर जाने का कार्यक्रम रद्द करके प.पू. गुरुजी उनके घर पथरावनी करने गए। यहाँ धुन-भजन व अल्पाहार करके मोगा में पू. आशीष अग्रवालजी के घर लौटे।

22 फरवरी की सुबह करीब 9 बजे पू. सुहृदस्वामीजी के साथ पू. सरयूस्वामी एवं कुछ सेवक व संत बहनें संक्रान्ति की भिक्षा निमित्त जगरांव गए। यहाँ सर्वप्रथम पू. बलवंतराय भारद्वाजजी के घर भिक्षा लेने के बाद नाश्ता करके, फिर करीब 15-20 सत्यंगियों-भक्तों के घर रात तक भिक्षा हेतु गए।

मोगा में पू. आशीष अग्रवालजी के घर सुबह प.पू. गुरुजी ने नित्य पूजा में सबको दर्शन का लाभ दिया। दोपहर को वहाँ पर श्री ठाकुरजी को भोग लगा कर प्रसाद लिया और आराम करने के पश्चात् सायं 5 बजे जगरांव के लिए रवाना होकर पू. सनी जयराल के घर पहुँचे। सुबह से जगरांव में भिक्षा के लिए आए पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी एवं मुक्त भी यहाँ आ गए। प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में धुन-भजन करके पू. आनंदस्वरूपस्वामी के जन्मदिन के उपलक्ष्य



88

में केक-अल्पाहार का सबने प्रसाद लिया। फिर पू. सनी जयस्वाल के घर के सामने उनके चाचाजी पू. रविन्द्र जयस्वालजी के यहाँ पथरावनी करके, जगरांव के पुराने सत्संगी अक्षरनिवासी पू. जीवनलाल झांझी साहेब के सुपुत्र पू. राजीव (राजू) झांझीजी के **Rachna Resorts** के लिए प्रस्थान किया। जगरांव तथा उसके आस-पास रहते भक्तों को प.पू. गुरुजी के दर्शन व समागम का लाभ लेने के लिए यहाँ सत्संग सभा का आयोजन था। धुन व भजन से सत्संग सभा आरंभ हुई और पू. राकेशभाई शाह, पू. दलजीत सिंहजी (जगरांव), पू. पवन शर्माजी (मोगा) ने प्रासंगिक उद्बोधन किया। तदोपरांत प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया और अंत में पू. राजू झांझीजी ने आभार व्यक्त किया। समापन के बाद प्रसाद लेकर सभी अपने गंतव्य स्थान पर गए।

**23 फरवरी** की सुबह प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा में धुन करने के पश्चात् सबने नाश्ता किया। पू. आशीषजी के घर के प्रांगण में पीपल के पेड़ की टेहनियाँ जब बहुत अधिक हो जाती हैं, तो उसकी छंटाई कराने के लिए पू. आशीषजी एक गजराज को बुलाते हैं। **महावत आज गजराज को लेकर आया** था। तो, पू. आशीषजी तथा वहाँ मौजूद अधिकांश मुक्तों ने उसे केले-संतरे खिलाए। हाथी के पुण्य उद्दित हुए कि प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत के स्वहस्त से केले का प्रसाद पाकर कल्याण का पात्र बना। पू. आशीष अग्रवालजी के मकान का नाम प.पू. गुरुजी ने ‘आनंद भवन’ दिया है। मुख्य द्वार पर उन्होंने उसकी name plate लगाई, सो प.पू. गुरुजी द्वारा उसका पूजन किए जाने के बाद प.पू. दीदी ने भी पूजन किया। 22 फरवरी को जगराओं के कुछ घरों में भिक्षा हेतु जाना रह गया था, सो इस दौरान पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी जोड़ के संत एवं कुछ मुक्तों के साथ वहाँ गए। प.पू. गुरुजी, संत-सेवक, प.पू. दीदी के साथ कुछ मुक्त, प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी की प्रेरणा से लुधियाना में बन रहे निर्माणाधीन ‘आत्मीय संस्कार धाम’ में धुन करने गए। पुष्प हार से संतों एवं मुक्तों ने अभिवादन किया। यहाँ जलपान करने के पश्चात् लुधियाना में ही जगरांव के अक्षरनिवासी पू. मुंशीरामजी के सपुत्र पू. राकेशजी के **Hotel Samrat Regency** में पथरावनी करने गए। लुधियाना रहते पुराने सत्संगी पू. कमलदेवजी अपने परिवार के साथ तथा दिल्ली मंदिर के सेवक पू. लवली भड्या की बेटी पू. नेहा अपनी बेटी के साथ दर्शन करने के लिए यहाँ आई।

अल्पाहार करने के बाद प.पू. गुरुजी एवं सभी गाँव सबद्वी कलां के पू. चेतन भार्गवजी के घर के लिए रवाना हुए। पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, अन्य संत एवं मुक्त जगराओं और मोगा से सीधा सबद्वी कलां पहुँच गए थे। प.पू. गुरुजी जब पू. चेतन भार्गवजी के घर के द्वार पर पहुँचे,

तो उनकी पत्नी पू. अंकिता भाभी एवं परिवार हर्षश्रुओं से स्वागत कर रहा था, क्योंकि सालों के बाद प.पू. गुरुजी उनके घर पधार रहे थे। लेकिन, उनके घर में प्रवेश करने से पहले प.पू. गुरुजी उसी गली में आगे उस घर के द्वार तक गए, जहाँ वर्षों पहले स्वर्गीय पू. धर्मपालजी परिवार सहित रहते थे। इन्हीं के परिवार से पंजाब में सत्संग की शुरुआत हुई और... सन् 1981 में तो गुरुहरि काकाजी महाराज ने 'पूजा' के रूप में प.पू. आनंदी दीदी को परिवार वालों से छिपा कर इन्हीं के घर रहने के लिए भेजा था। भगवान भजने के लिए प.पू. दीदी का परिवार वालों से छिप कर रहना तो केवल एक कारण था। दरअसल इसके द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज ने प.पू. दीदी रूपी हीरे को तराशते हुए, साधना के पथ पर चला कर उत्तर भारत में प.पू. गुरुजी की निशा में बहनों की परवरिश करने हेतु तत्पर किया। गुरुहरि काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी उस समय अकसर यहाँ आए। सो, ऐसे महा प्रासादिक स्थल पर प.पू. गुरुजी ने सबको दर्शन देकर स्मृति दी। यहाँ से प.पू. गुरुजी अख्यरथ पुराने सत्संगी पू. बलवंत सिंहजी के घर गए। गुरुहरि काकाजी महाराज के आगमन पर इनके घर सत्संग की सभाएँ होती थीं। यहाँ से प.पू. गुरुजी तो पू. चेतन भार्गवजी के घर चले गए। प.पू. दीदी एक अच्यु पुराने सत्संगी स्वर्गीय पू. प्रेम सिंहजी-स्व. पू. ज्ञान कौरजी की बेटी पू. कुलदीप कौरजी एवं उनके बेटे पू. कमल से मिल कर पू. चेतन भार्गवजी के घर पहुँचे। यहाँ धुन-भजन करके प्रसाद लेने के बाद, पू. सोनू-पू. वंदन अग्रवालजी के घर-दुकान पर पधरावनी करके मोगा के लिए रवाना हुए। रास्ते में जगराओं के पू. मनीष कवकड़जी के मित्र पू. रजत अरोड़ाजी के Ajanta petrol Pump, Near bus stand Jagraon पर पधरावनी करके सायं 7:00 बजे मोगा में पू. विकास वर्माजी के घर पहुँचे। पू. सुहदस्वामीजी मोगा में पू. पवन शर्माजी के यहाँ संक्रान्ति की भिक्षा लेकर पू. विकासजी के घर पहुँचे। यहाँ भी धुन-भजन और छोटी सत्संग सभा की। जिसमें पू. समीरभाई दवे ने सबकी ओर से प्रार्थना की और प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया। रात को सबने प्रसाद लिया और अपने गंतव्य स्थान पर गए।

**24 फरवरी** की सुबह मोगा में पू. आशीष अग्रवालजी के घर पूजा व नाश्ता करने के बाद करीब साढ़े ज्यारह प.पू. गुरुजी एवं सभी ने दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। पंजाब के डिरबा-संगरुर रोड के 'जी हवेली ढाबा' में प.पू. गुरुजी ने सबके साथ मोगा के पू. आशीषजी द्वारा दिया गया प्रसाद लिया। सबको अविस्मरणीय स्मृतियाँ देकर शाम को करीब 6:00 बजे प.पू. गुरुजी दिल्ली मंदिर पहुँचे।

28 फरवरी - कागुन शुक्ल प्रतिष्ठा  
प.यू. गुरुजी की 88वीं प्राकृत्य तिथि...



सत्संग में अपनी बुद्धि लगा कर चप्पल न घिसते रहें, संत के कहे अनुसार खुद को मोड़ लेंगे, तो शांति और सुख अखंड रहेंगे। इस रास्ते पर अग्रसर रह कर सुख-शांति प्राप्त करें इतना ही नहीं, बल्कि आत्मसात् कर लें और अपने संबंध-संपर्क में आते हुए हर एक को बाँठ कर, उसे भी ऐसे प्रेरित करें कि उनके द्वारा सत्संग का कार्य जारी रहे—यही भावना।

— प.यू.गुरुजी



## उत्सवों की श्रृंखला से भरपूर फागुन - चैत्र मास 2025

### 28 फरवरी – फागुन शुक्ल प्रतिपदा, प.पू. गुरुजी की 88वीं प्राकट्य तिथि

अबकी बार फरवरी महीने की अंतिम दिनांक 28 से फागुन मास का शुभारंभ हुआ और... इसी दिन शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के अनुसार प.पू. गुरुजी की 88वीं प्राकट्य तिथि के उपलक्ष्य में सभी कल्पवृक्ष हाँल में सायं 4:30 बजे उनके निरामय स्वास्थ हेतु धुन-प्रार्थना करने के लिए एकत्र हुए। 6:30 बजे धुन पूर्ण करने के बाद संध्या आरती का लाभ लिया। 7:15 बजे से आवाहन धुन और 'प्रगटे गुरुजी वो शुभ दिन आया' भजन गाकर पू. राकेशभाई शाह, पू. डॉ. पंकज रियाज़जी तथा सेवक पू. विश्वास ने सभा की शुल्कात की।

वर्षों से प.पू. गुरुजी अपने संपर्क में आने वाले मुक्तों के लिए निरंतर परिश्रम कर रहे हैं। मुक्तों के स्वानुभव से प.पू. गुरुजी के अथक परिश्रम के जब प्रसंग सुनते हैं, तब ख्याल पड़ता है कि खरूप के प्रति ही नहीं, बल्कि भक्तों की परवरिश हेतु वे अपना सर्वस्व लुटा ही रहे हैं। सो, प्रासंगिक उद्बोधन के अनुक्रम में प.पू. गुरुजी के साथ की स्मृतियों को शब्दों में बयां करते हुए सर्वप्रथम पू. पवन खण्डेलवालजी ने कहा—

...28 साल पहले 1997 में मैं अनुष्ठान शिविर में गुरुजी के संपर्क में आया। 2002 में *father* के जाने के बाद गुरुजी को ही सब कुछ माना और गुरुजी भी ऐसा व्यवहार करते हैं। अपनी छोटी बहन चित्रा की शादी के लिए चावड़ी बाज़ार से card का sample लाया। उसे देख कर गुरुजी बोले कि ये अच्छे नहीं और फिर गर्मी में खुद मेरे साथ चावड़ी बाज़ार में साझेकिल रिक्शे में बैठ कर गए और card परसंद किया...

मेरी पत्नी संगीता खाने से ज्यादा तो दवाइयां खाती है। मगर गुरुजी की grace से इतने सालों में कभी उसे ऐसा नहीं हुआ कि आप ठीक क्यों नहीं कर देते? बस यही रहता है कि गुरुजी सब संभाल लेंगे।

फिर भी हम देह से तो जुड़े हैं। हठ, मान, ईर्ष्या की मानसिक कमियाँ सुहृदभाव से जीने में बाधारूप बनती हैं। अनजाने में हो गई ग़लती तो माफ़ होती है, मगर हम ग़लियाँ दोहराएँ नहीं। गुरुजी हमें जो लाभ देना चाहते हैं, वो अपनी कमियों के कारण ले नहीं पाते।

हमारे लिए वर्णी रूप में महाराज ने मानसरोवर आदि की ठंड में अपने शरीर पर कितना सहन किया और रामानंदस्वामी ने उन्हें नाम भी कैसा अद्भुत दिया—सहज आनंद! महाराज की



संत-प्रणाली के स्वरूपों ने उच्च कक्षा पर पहुँचने के लिए खूब तपस्या की है। योगीबापा ने 40 साल तक रसोई संभाली। सब का स्वाद अलग होता है, कई बार देर रात को बिना किसी सूचना के भक्त आते, लेकिन शास्त्रीजी महाराज को राजी करने के लिए वे सेवा में लगे रहते। अगर हमारे घर में बिना बताए यदि महेमान आ जाएँ, तो हम परेशान हो जाते हैं... ऐसे ही काकाजी ने भी खूब परिश्रम किया। बापा के वचन से नव्वाजी के लिए चुनाव प्रचार में जुटे। वे तो धुन के राजा थे, ठंड के मौसम में खुली जीप में बैठ कर वे दिल्ली से पंजाब तक धुन करते हुए जाते। गुरुजी भी धुन पर खूब जोर देते हैं। गुरुजी और आनंदी दीदी के पास जब बैठते हैं, तो मन में ऐसा होता है कि समय ही रक जाए और हम आनंद लेते ही रहें।  
कबीरजी का दोहा है—

‘सब धरती कागज करँ, लेखनी सब बनराय,  
सात समुद्र की मसि करँ, गुरु गुण लिखा न जाय...’

अर्थात्—यदि मैं पूरी धरती को कागज बना लूँ, सभी पेड़ों को कलम और सातों समुद्रों की स्याही बना लूँ, तब भी गुरु के गुणों का वर्णन पूरी तरह से नहीं हो सकता।  
ऐसे हैं हमारे गुरुजी।

महाराज से प्रार्थना कि गुरुजी और दीदी का स्वास्थ्य निरामय रखें, हमें उनकी खूब ज़रूरत है। हमारी गलतियों को सुधारने वाले भी आप ही हो। आप हमें अपने जैसा पूर्ण बना देना।

तत्पश्चात् सत्संगी परिवार में जन्मे और मानो प.पू. गुरुजी की गोद में ही पले-बढ़े पू. निश्चय मेहता ने प.पू. गुरुजी से प्राप्त लौकिक व अलौकिक अनुभवों का वर्णन करते हुए स्वानुभव बताए—

मैं बड़ा भाग्यशाली कि जन्म होते ही गुरुजी और दीदी की गोद मिली। जैसे कहते हैं कि *born and brought up in some city*, तो वो हमारे लिए मंदिर है। बचपन में गर्मियों की छुटियों में मंदिर लकना। जो बच्चा सुबह 6 बजे की धुन में नहा धोकर हाजिर हो जाए, उसे *chocolate* का प्रसाद मिलता। रात को गुरुजी के हाँल में सोना और सुबह उठ कर पीछे छपिया कमरे में दोबारा सोने का मन होता, पर *chocolate* की लालच में न सोकर, *bathroom* के बाहर लाइन लगा देतो। मुझे *cold drink* पीने का बहुत शौक था। बचपन में उसे पुंटिंग बोलता था। गुरुजी ने वो खूब पिलाई। वे अपने लिए *fanta* मंगवाते और उसमें काला नमक डाल कर एक धूँट पीकर मुझे दे देते। फिर एक न्यूज़ आई कि *black beverage* में *pesticide* डलता है। तो



88

એક દિન ગુરુજી ગુજરાત અપાર્ટમેંટ આએ ઓર મુઝે, ધારુ, સોનલ, સબકો pepsi કી એક-એક બડી bottle પીને કો દી ઓર ફિર બોલે—**અબ કમી મત પીના। એસે ઉન્હોને વહું પીને કી હુમારી આદત છુઢવા દી ઓર રક્ષા ભી કી...**

એક બાર ગુરુજી કે પાસ *parcel* આયા, મેં વહીં સેવા મેં થા। ઉન્હોને મુઝસે કહા—તું કેંચી સે કાટ, મેં *packet* કો પકડ્યતા હૂં। ગુરુજી ને તો કસ કર પકડા થા, પર મેં ડિઝાઇન રહા થા, તો એકદમ ઝાટકા-સા લગા। તો ઉન્હોને મુઝે સમજ્યાયા કેસે કાટતે હોયાં। *Stapler pin* કિસા *angle* પર લગાની, વો ભી સિખાયા। *Dusting* કેસે કરની, યે સબ ચીજોં ફુઠને ઊંચે લેવલ પર હોતે હુએ હમ જેસે બન કર હમેં સિખાઈ હોયાં। હમારે ભીતર કી સફાઈ તો ઉન્હોને કરી હી, લેકિન જગત મેં કેસે રહના વો ભી બતાતે હોયાં। યે *school* યા કિસી ઓર *institute* મેં સીખ નહીં પાણું। આજ *job* કરતે હુએ *letter drafting* જેસી ચીજોં મેં ઉનકી સીખ કામ આતી હૈ।

તબલા સીખને કી આજ્ઞા ભી ગુરુજી ને દી થી। એક સમય ઐસા આયા કિ તબલા બજાને કી લચિ અતમ હો ગઈ, પર ગુરુજી કો ગરજ થી। જબ મી મેં મંદિર આતા, તો ‘વાહ! તાજ’ કા ચાય કા ડબ્બા મેરે સામને રખતે, ક્યોંકિ ઉસ્તાદ જાકિર હુસૈન ઉસકે વિજ્ઞાપન મેં આતે થોયો। રાકેશ અંકલ, ચિરાગભાઈ, સબ ઉત્સાહિત કરતો। બારહવીં કક્ષા મેં મેં *over confident* હો ગયા થા, તો *result* ખરાબ આયા। તબ મેં મંદિર મેં હી થા ઓર થોડા રોને લગા કિ અબ *college* મેં *admission* કેસે હોગા... ગુરુજી ને મુઝસે કહા કિ **તુઝે અગર મુઝ પર વિશ્વાસ હો, તો રોયેગા નહીં।** ગુરુજી ને મુઝે ઘડી દી ઓર બોલે—ફરિયાદ કર જો *exam* દેગા, અચ્છા જાએગા। *B.B.A.* કા *exam* બઢિયા ગયા, તો મુઝે ફિર સે યે હુઅા કિ મેરી કાબિલિયત હૈ। તબ ફટ સે ગુરુજી બોલે—યે ઘડી કા કમાલ હૈ। તો મેં જો બઢિયા તબલા બજાતા હૂં યા બઢિયા પઢતા હૂં, ઉસકે બારે મેં વો એહસાસ કરવાતે હોયાં કિ દરઅસલ યે સબ વે કરતે હોયાં। *Delhi University* મેં *co-curricular activity* કા *quota* હોતા હૈ। માનો કિસી ચીજા કો અચ્છા કરતે હો, તો થોડે *grace marks* મિલતે હોયાં। પર મેરા *margin* બધુત બડા 17 *marks* કા થા। મૈંને સોચા *try* તો કરેં, તો ચાર અચ્છે *colleges* મેં હુઅા। લેકિન ગુરુજી કો ઐસા થા કિ ગુરુ ગોબિંદસિંહ *college* મેં હો, ક્યોંકિ વો ઘર ઓર મંદિર દોનોં સે પાસ હૈ... વહીં મુઝે અપની વાલી *field* મેં નહીં મિલ રહા થા। મૈંને ગુરુજી કો બતાયા, તો વે બોલે—નહીં, હમેં વહીં લેના હૈ ઓર ફિર વહીં કે *principal* કો રાકેશભાઈ સે *letter* લિખવાયા કિ હમેં કહીં ઓર *admission* મિલ ગયા હૈ, લેકિન હમેં યહીં ચાહિએ। અગર આપ કરતે હો તો ઠીક, વર્ના હમ દૂસરે *college* મેં ચલે જાએં। મૈં સોચું કિ હમેં એસે થોડે કોઈ



entertain करेगा। गुरुजी पहले सोफा आगे करके टी.वी में समाचार देखते थे। तो, नीचे basement में राकेशभाई ने letter draft किया और मैं ऊपर गुरुजी को दिखाने आया। गुरुजी ने news देखना रोक कर 3 से 4 बार corrections करवाई। फिर अगले दिन मैं पापा के साथ letter लेकर गया। Principal ने admission team के पास भेजा, उन्होंने Vice Principal के पास भेजा, तो उन्होंने letter पढ़ कर secretary से कहा कि इस लड़के को हमें नहीं छोड़ना, वो जो मांगे दे दो। फिर वे एक वाक्य बोले—इतना grace आज तक हमने सिख quota गाले तक को नहीं दिया। यह कितना बड़ा चमत्कार कहा जाए। गुरुजी के पास आकर सारी बात बताई, तो हाथ के इशारे से अपना collar up करके ‘परा अवस्था’ में कहा—देखा, मेरा कमाल! तो उनकी दी गई ये स्मृतियाँ हम भूलें नहीं, भजन करते हुए याद करते रहें।

एक बार यहाँ दिनकर अंकल आए थे, तब मुझे उनकी सेवा में रखा था। वे किसी के घर पधरावनी पर गए, तो मैंने गुरुजी से पूछा—मैं तबले के competition में जाकर आऊँ। गुरुजी ने कहा—जाना ज़रूरी है? कैसे जाओगे? मैंने कहा—Metro से। गुरुजी भी किसी के घर पधरावनी पर गए। तब मैं किसी सेवक के पीछे Bike पर बैठ कर Metro Station जाने के लिए निकल गया। गुरुजी ने तब सबको आझ्ञा दी थी कि कोई भी Bike या Scooter पर बिना helmet के न बैठे। हम दोनों ने helmet पहना था, पर रास्ते में accident होने के कारण हम गिर गए और दोनों के helmet टूट गए। मुझे सिर में चोट लगी और blackout हो गया, थोड़ा खून भी निकला। नज़दीक के hospital में दिखाया, तो Doctor बोले कुछ खास नहीं है, आप जाओ। फिर competition के दौरान भी चक्कर आते रहे। मैंने पापा को फोन करके बताया और performance दिए बिना मंदिर वापिस आकर पीछे के कमरे में जाकर सो गया। शाम को पापा ने गुरुजी को बताया। तो, गुरुजी ने तुरंत डॉ. प्रवीण को फोन कराया कि तुरंत मंदिर आ जाओ। फिर गुरुजी ने मुझे अपने पलंग पर लिटा कर उनसे check करवाया। उन्होंने बताया कि सब ठीक है। लेकिन गुरुजी को ऐसा था कि सिर की चोट है, तो शोभना भाभी के reference गाले neurologist के पास भेज कर CT scan भी करवाया। सारी जाँच होने के बाद गुरुजी ने मुझसे पूछा—तुझे याद है मैंने पूछा था कि जाना ज़रूरी है? तब बोले—मुझे तभी पता था कि कुछ होने वाला है। यह सुन कर मैं हिल गया कि उनकी कैसी हृष्टि! हम सोच भी नहीं पाते कि किस प्रकार वे रक्षा करने आते हैं। तब गुरुजी बोले भी—ये तेरा दूसरा जन्म। गुरुजी को कर्ता हर्ता तो मानते हैं, लेकिन प्रसंग पर हितकारी नहीं मान पाते। तो, आप ऐसा करा देना



**कि आपको कर्ता हर्ता हर प्रसंग पर मान पाएँ।**

कुछ *lines* मुझे बहुत अच्छी लगीं, वो कह कर समाप्त करता हूँ—

सर्वं भी तू-सर्वं भी तू, जीवन भी तू, मृत्यु भी तू।

दाता भी तू-विद्याता तू, देता तू-लेता तू।

सत्य तू-असत्य हम, मगवान् तू-मनुष्य हम।

शिव तू-युंदर तू, शक्ति तू-सब कुछ तू, मैं कुछ नहीं।

मगवन् तू-मैं कुछ नहीं, जीवन तू-मैं कुछ नहीं।

गुरुजी, आपसे *request* है— 1997 में *heart operation* करा के जब आप मंदिर वापिस आए थे, तो आपको सबके प्रार्थना की थी। तब आपने कहा था— मैं 100 साल तो जीने ही वाला हूँ। इसमें कोई संशय नहीं है, लेकिन 100 साल एकदम *fit* और *healthy* जियें, यही प्रार्थना।

पू. निश्चय महेता की तरह ही सत्संग में पले-बढ़े और व्यावहारिक तौर पर Electrical engineering करने के बाद प.पू. गुरुजी के प्रति अतिशय लगाव के वश, उनकी प्रेरणा-वचन से चार वर्ष पूर्व साधु की दीक्षा प्राप्त किए पू. आनंदस्वरूपस्वामी ने महिमागान किया—

**20 से 24 फरवरी 2025** गुरुजी पंजाब विचरण करने गए। तब पटियाला जाते हुए हमने गाड़ी में उन्हें याद दिलाया—

**जनवरी 2022** में भरतभाई-वशीभाई के साथ गुरुजी पंजाब गए थे। तब जगराओं के नज़दीक बने ‘गुरुद्वारा मेहंदियाना साहिब’ का दर्शन करने गए थे। वहाँ से जगरांव से लौटते हुए आपने किसी अनजान घर से छाछ बनवा कर पी थी।

**पिछले साल** भी कुंडली के *Tulip Grand* में रहते सुशील भास्करजी के घर जाते हुए, नरेला गाँव में भी किसी अनजान घर में गाय का ताज़ा दूध निकलवा कर, उसकी छाछ बनवा कर ग्रहण की थी।

और

**इसी साल 26 जनवरी** को श्यामलालजी के जन्मदिन की 75वीं वर्षगांठ पर झटेड़ा गए, तब भी अनजान घर में बहनों को भेज कर वहाँ से काँफी बनवा कर पी।

यह सब सुन कर गुरुजी ने सहज ही कहा—चलो, आज भी ऐसा करते हैं। तो, एक अनजान घर के सामने गुरुजी ने गाड़ी लकवाई और कहा कि मुझे इस घर में से छाछ पीनी है। बहनों की गाड़ी साथ में थी, तो वे उस घर में गईं। वहाँ रहती बहनजी ने बड़े भाव से न केवल ताज़ी



छाछ, पर साथ ही गर्मी गरम रोटी, घर का बना मक्खन-आचार और सलाद भी गुरुजी के लिए भिजवाया। गुरुजी ने उनका भाव ग्रहण करते हुए सब कुछ खाया। फिर यह भी कहलवाया कि आचार बहुत अच्छा है-*pack* कर देना, पंजाब से लौटते हुए ले जाएँगे। ऐसा लग ही नहीं रहा था कि पहली बार का परिचय है। यह देख कर अर्चिमार्ग नाटक का *couplet* याद आया—

**जहाँ जाते हो, जल की तरह सब में धुलमिल जाते हो...**

ऐसे जो प्रसंग बनते हैं, वो हमें आकर्षिक-*random* लगते हैं। हमारी दृष्टि तो स्थूल देह ही देखती है, पर वे तो उनकी आत्मा की यात्रा देखते हैं। जैसे महाराज के समय का प्रसंग है कि एक छोटे बच्चे गीरा भक्त को पूछ कर महाराज किसी पथरावनी में जाते या किसी को धाम में ले जाते थे। सबको प्रश्न होता था कि ये ऐसा कौन है कि महाराज इसे पूछ कर करते हैं। तब महाराज ने बताया कि पिछले जन्म में ये छोटा-सा पौधा था और तब विचरण पर जाते हुए मेरे पैर से ये छू गया था। मेरे इतने संबंध से इसे मानव योनि मिली।

भले ही जिन घरों में गुरुजी गए, वहाँ दोबारा जाना भी नहीं हो पाए, लेकिन वे उनका कल्याण तो करेंगे ही, ऐसी महिमा गुरुजी की समझ पाएँ... गुरुजी जैसा चाहते हैं, वैसे संप, सुहृदभाव और एकता से गुणातीत भावना वाले साधु बन पाएँ, यही प्रार्थना।

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि के उपलक्ष्य में पू. राकेशभाई शाह ने पू. नित्या दीदी द्वारा रचित भजन—‘**धिसता रहे चपलम, गुरु के बचन में जिसने बुद्धि लगाई रे...**’ प्रस्तुत करके भक्ति अदा की। भजन के बाद, प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीष देते हुए भजन का सार बताया—

अपने यहाँ भजन भी ऐसे बनते हैं कि आशीर्वाद देने का कुछ बचता ही नहीं। आज एक ही बात करनी है कि जैसे इस भजन में बताया कि हम अपनी बुद्धि न लगायें और चप्पल धिसते न रहें। संत के कहे अनुसार खुद को मोड़ लें, तो शांति और सुख अखंड रहेंगे। इस रास्ते पर अग्रसर रह कर सुख-शांति प्राप्त करें इतना ही नहीं, बल्कि आत्मसात् कर लें और अपने संबंध-संपर्क में आते हुए हर एक को बाँठ कर, उसे भी ऐसे प्रेरित करें कि उनके द्वारा सत्संग का कार्य जारी रहे—यही भावना।

28 फरवरी के अनुसार पू. प्रेम शर्मा और अगले दिन 1 मार्च को पू. वरुण यादव का जन्मदिन था, सो सभी की भावना व्यक्त करते हुए इन दोनों ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। सभा के समापन के बाद सबने प्रसाद लिया।



य.पू. गुरुजी के 88वें ग्राक्ट्र्य पर्व निमित्त  
‘योगी परिवार आनंदोत्सव’ में  
गुणातीत समाज के सभी केंद्रों के  
मुक्तरों का आगमन...

88

## 7 मार्च सायं- गुरुहरि काकाजी महाराज के शशवत् स्मृति दिन पर 'कीर्तन आशधना' द्वारा भक्ति अर्थ...





हमारी सबसे बलिष्ठ दर्वाई जपयज्ञ है।  
बापा, काकाजी, पप्पाजी, सभी गुणातीत  
स्वरूपों ने इसी मार्ग पर चलाया है।  
कोई भी problem आती है, तो गुरुजी  
संतों, युवकों, भक्तों, बहनों से भजन  
ही करते रहते हैं...

—प.पू. बापुस्वामी (सांकरदा)



छोटा-बड़ा, आबाल-वृद्ध हरेक की  
सेवा, गुणातीत संत - काकाजी मान कर  
गुरुजी करते हैं। गुणातीत समाज के  
हरेक केन्द्र का कोई भी हो, उसकी सेवा  
ऐसे भाव से करते हैं कि उसे लगता है  
कि शायद ऐसी सेवा तो मेरे अपने  
स्थान पर भी नहीं होगी...

— प.पू. भरतभाई



**Guruji is legend. He has lived his life.** उनमें जो सहजता है,  
वो भगवान और साधु का गुण है...  
— प.पू. वशीभाई



**When problem comes, tell it yes come! I have My Guruji with me.**

— P. David Sir



गुरुजी जैसे अंतर्यामी और सर्वज्ञ पुरुष  
सच में नहीं मिलेंगे। उन्होंने मेरे जीवन  
में बहुत परिवर्तन कर दिया।  
वे काकाजी का स्वरूप हैं  
उन्हें अखंड धारे हुए हैं...  
— पू. स्नेहलस्वामी (सांकरदा)



## 7 मार्च – गुरुहरि काकाजी महाराज के स्वधामगमन दिन की 39वीं वर्षगांठ

7 मार्च 1986 को गुरुहरि काकाजी महाराज स्थूल रूप से अंतर्धान हुए। उनकी शाश्त्र स्मृति करते हुए प्रति माह 7 तारीख को अनुपम मिशन (मोगरी), पवई मंदिर और दिल्ली मंदिर में कीर्तन आराधना से भक्ति अदा करते हैं और 7 मार्च को वार्षिक भजन संध्या होती है।

13 मार्च को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन होता है, जिसे गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्तों के साथ ‘योगी परिवार आनंदोत्सव’ के रूप में हर्षोल्लास से मनाते हैं। धुलेन्डी के अनुसार संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि अनुपम मिशन में मुक्त समाज उत्साहपूर्वक मनाता है। इस वर्ष 13 मार्च को होली अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती और 14 मार्च को धुलेन्डी का पर्व था। अतः गुजरात-मुंबई से आने वालों की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए 7 मार्च को वार्षिक भजन संध्या करके, 8 मार्च को प.पू. गुरुजी का 88वाँ प्राकट्य पर्व मनाने का सुनिश्चित किया गया।

भगवान् स्वामिनारायण ने तत्कालीन समय में कई जगह पुष्पडोलोत्सव मना कर भक्तों को अनेरी स्मृतियाँ देकर निहाल किया था। 7-8 मार्च के उपलक्ष्य में सब एकत्र होने वाले थे और धुलेन्डी का पर्व निकट था, तो वर्तमान समय में श्रीजी महाराज के अखंड धारक स्वरूपों की निशा में चंदनोत्सव मना कर दिव्य स्मृतियाँ प्राप्त करने हेतु 9 मार्च की सुबह यह आयोजन रखा गया।

3 मार्च से गुणातीत समाज के मुक्तों के आगमन से मंदिर के परिसर में रौनक होने लगी और देखते ही देखते 7 मार्च - गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन भी आ गया। संध्या आरती के पश्चात् 7:00 बजे मंदिर के पीछे के प्रांगण में बनाए गए सभा मंडप में वार्षिक भजन संध्या द्वारा गुरुहरि काकाजी महाराज की शाश्त्र स्मृति करने के लिए मुंबई, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश इत्यादि के करीब 800 भक्त एकत्र हुए। मंच की पृष्ठभूमि पर श्री ठाकुरजी सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों के cutout लगाए थे और गुरुहरि काकाजी महाराज को नमन करते हुए भजन की निम्न पंक्तियाँ लिखी थीं—

हे स्नेहलसिंधु दयालु प्रभु, गुरुहरि साक्षात् गुणातीत विभु  
काका हे अमर रहो, हृदयाकाशे सदा रहो...

मंच के मध्य में आसन पर सभी खरूपों के विराजित होने के बाद, इसके एक ओर खर वृंद—पू. स्वामीखरूपस्वामी (हरिधाम), पू. इलेशभाई (गुणातीत प्रकाश), पू. हितेनभाई (पवई), पू. राकेशभाई शाह, पू. डॉ. पंकज रियाज़, पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा, पू. ऋषभ गोयल (पानीपत), पू. ऋषभ नरलाला, सेवक पू. विश्वास, पू. उज्ज्वल, तो दूसरी ओर पवई से पू. राजूभाई—पू. प्रशांतभाई (casio), पू. सचिनभाई (octopad), पू. यशभाई (dholak), आस्ट्रेलिया से पू. निश्चय मेहता (tablaa) और मुंबई से पू. श्रेत्रज्ञ माणेक (guitar) का वायद्वंद भवित अदा करने उपस्थित था।

सर्वप्रथम पू. राकेशभाई, सेवक पू. विश्वास, पू. डॉ. पंकज रियाज़ ने ‘स्वामिनारायण महामंत्र’ की आवाहन धुन से मंगल शुरुआत की। तत्पश्चात् गुरुहरि काकाजी महाराज को समर्पित हिन्दी, गुजराती एवं पंजाबी भाषा में भजनों की क्रमबद्ध प्रस्तुति हुई। सभी ऐसा महसूस कर रहे थे कि गुरुहरि काकाजी महाराज ने भले ही स्थूल देह का त्याग किया, लेकिन अपने ज्योर्तिधरों—प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकर अंकल, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई द्वारा आज भी वे जीवंत हैं और आश्रितों की परवरिश कर रहे हैं।

गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृतियाँ कराते हुए प.पू. वशीभाई ने निम्न प्रकार प्रत्येक भजन गाने से पहले विवरण देकर उसकी महत्ता बताई—

- ❖ काकाजी ने सबको योगीजी महाराज की पहचान कराई। गुरुजी जहाँ भी जाते हैं, वहाँ काकाजी की स्मृति सदैव रहती है। उसी भावना के साथ, ‘दिव्य भाव है जिनकी शैली सदा’ भजन पू. राकेशभाई शाह गाएँगे।
- ❖ महाराज ने पृथ्वी पर आकर करोड़ों साल से चेतना से चिपके हुए स्वभाव-प्रकृति को बदल कर ब्रह्मरूप बनाने का अद्भुत मार्ग चलाया और उसमें speed बढ़ाने के लिए काकाजी को जो साक्षात्कार कराया, उसके फलस्वरूप गुणातीत समाज के केन्द्र दिल्ली, सांकरदा, हरिधाम, गुणातीत ज्योत, अनुपम मिशन, शिकागो द्वारा सभी स्वरूप ब्रह्मरूप करने का कार्य कर रहे हैं। तो, ऐसे काकाजी के ऋण को कैसे चुकाएँ, ऐसी भावपूर्ण प्रार्थना के साथ सेवक पू. विश्वास व पू. ऋषभ नरलाला—‘ऋण तेरा हे काकाजी कोई कैसे चुकाए़...’ प्रस्तुत करेंगे।





❖ गुरुजी भक्तों को काकाजी के मूल स्वरूप से परिचित कराते हैं, इसलिए छोटे-छोटे बच्चों में भी वही भाव विकसित हो गया है। ‘तू है तो दिल धड़कता है, तू है तो जीव को बल मिलता है, माया दूर रहती है, तू है तो गम नहीं आते, तू है तो मुखुराते हैं, और तेरे बिना जी नहीं सकते...’ ऐसी प्रार्थना के साथ पू. उज्ज्वल – ‘तू ही है मेरा, ज़रूरत तेरी...’ गाएंगा।

- ❖ भगवान भक्तों के भाव को स्वीकारते हैं और जब ‘रब’ की बात आती है, तो पंजाबी में प्रार्थना को ‘अरदास’ कहा जाता है। सो, भजन मंडली हम सभी की ओर से काकाजी से अरदास करेंगी – ‘काकाजी हम पर आशीष बरसाना...’
- ❖ हे काकाजी! आपके ऋण को हम कैसे चुका सकते हैं? आपने हमारे लिए इतना कुछ किया है! इस प्रार्थना के साथ पू. हितेनभाई भजन ‘हे काका तारा ऋणनुं ज्यां विचार हुं कर्लं...’ प्रस्तुत करेंगे।
- ❖ सभी स्वरूपों से यही प्रार्थना है कि हम सब काकाजी के गुलशन के फूल बन कर खिलते रहें, पू. पंकज रियाज – ‘काका तुम्हारे गुलशन के फूल बन के खिलना है...’ गाएँ।
- ❖ 3 फरवरी 1952 काकाजी का साक्षात्कार का दिन, उस निमित्त पू. दासस्वामीजी ने गुजराती भजन लिखा था—‘मारा देहभावने भुलाव...’ इस भजन में यह प्रार्थना थी कि हम अपने देहभाव, मन और बुद्धि को छोड़कर प्रभु को समर्पित हो जाएँ। इसी भाव के साथ पू. डॉ. दिव्यांग यह भजन प्रस्तुत करेंगे।

❖ 3 जून 1978 को मुंबई में गुरुहरि काकाजी महाराज के ‘हीरक महोत्सव’ के निमित्त गुणातीत ज्योत की बहनों द्वारा बनाया ‘दिव्य देही दरबार’ भजन गाया गया था। हीरक महोत्सव की स्मृति सबके अंतर में सदैव के लिए अंकित करने हेतु, मंच पर काकाजी महाराज मुकुट, बाजूबंद, हार पहन कर और हाथ में करताल लेकर इस भजन पर झूमे। इस स्मृति को पुनः जाग्रत करते हुए हरिधाम के संत पू. स्वामीस्वरूपस्वामी ने यह भजन प्रस्तुत करेंगे।

❖ काकाजी से जो भी मिला उनकी मूर्ति उसके दिल में बस गई, जो एक बार उनसे मिला वो उन्हें कभी भुला नहीं पाया, ऐसी दिव्य मूर्ति की कल्पना करते हुए पू. ऋषभ गोयल—‘जेणे जोया एनी मूर्ति मनमां वसी...’ गुजराती भजन गाएँगे।

❖ हे काकाजी! हमारे मन के मंदिर में अखंड रहना, हमारे देह और जीव को सत्संगी तथा मंदिर लूप बना कर विराजमान रहना, सभी की ओर से ऐसा भाव व्यक्त करते हुए पू. डॉ. दिव्यांग गुजराती भजन ‘आजे अहीं मंदिर छे, ते तो प्रभुनुं धाम छे...’ गाएँगे और उनके बाद काकाजी की स्मृति शाश्वत करते हुए पू. इलेशभाई—‘हे काका दिव्य उद्गाता, योगाजीनो जीवनप्राण...’ प्रस्तुत करेंगे।

पूर्णाहुति में स्वर वृंद ने प.पू. दासखामीजी द्वारा ही रचित ‘हे स्नेहलसिंधु दयालु प्रभु, गुरुहरि साक्षात् गुणातीत विभु, काका हे अमर रहो, हृदयाकाशे सदा रहो...’ इस प्रकार गाया कि मानो गुरुहरि काकाजी महाराज प्रत्यक्ष हाजिर हो गए! तत्पश्चात् प.पू. वशीभाई ने स्वर वृंद एवं वाद्यवृंद को धन्यवाद देकर आभार व्यक्त किया और फिर पवर्ड एवं संभाजी नगर के भक्तों द्वारा बनाया ड्राई फ्रूट्स का विशिष्ट हार प.पू. गुरुजी को अर्पण किया। दिल्ली मंदिर की यह वार्षिक भजन संध्या ऐतिहासिक बन गई, जिसमें गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के मुक्तों ने मिल कर भक्ति अदा की। अंत में प.पू. भरतभाई ने गुरुहरि काकाजी महाराज के निम्न स्मृति प्रसंगों से समापन किया—

धन्यवाद है वशीभाई, राकेशभाई और पूरी team को... *One of the best भजन संध्या हुई।* 1952 से लेकर आज तक 75 साल से भी अधिक समय का पूरा दर्शन इस भजन संध्या में हुआ। हम काकाजी की इस *journey* में छूबें, उनके बारे में जितना कहें उतना कम है। आज हम सब जो देख रहे हैं, वो उनकी कृपा और आशीष है। उनका व्यक्तित्व बड़ा अद्भुत था। उनके पास जो power-जादू, आध्यात्मिकता-दिव्यता और साधुता थी, उन सबका दर्शन जितना भी करें उतना कम है।

ताड़देव में बात करते हुए काकाजी एक बार बोले—किसी को स्थिति करानी है, तो मैं तीन दिन में करा दूँगा। काकाजी कुछ भी कहते थे, उसके पीछे बहुत रहस्य होता था, केवल हवा में नहीं बोलते थे। उस समय हारिधाम के योगीखामी भी मौजूद थे, उनकी आयु भी छोटी थी। वे रात को काकाजी के पास गए और बोले मुझे स्थिति करवानी है। काकाजी बोले—ठीक है, कल के लिए तैयार हो जाओ। अगले दिन काकाजी पूरा arrangement करके उन्हें गणेशपुरी ले गए। दो-चार भक्तों को भी साथ में लेकर कुल 10 एक





88

जने गए। काकाजी ने सबसे कहा कि शिबिर है। वहाँ बहुत भजन-भवित, कई प्रयोग कराए। आँखों पर पट्टी बंध कर ध्यान करवाया, दीवार के सामने बैठ के धुन करवा कर तीन दिन बाद गापिस आए। काकाजी बोले—देखो, तुम्हारा सब हो गया। रात को योगीस्वामी दोबारा काकाजी के पास गए और बोले—तीन दिन पहले मैं जैसा था वैसा ही हूँ, कुछ फर्क नहीं पड़ा है। काकाजी बोले—ऐसा नहीं है। मैंने तीन दिन भजन किया है, आपका सब कुछ हो गया है। यदि अभी आपको दिखाऊँगा तो आप मेरा गला पकड़ोगे। इसलिए आपको साधु बनाना है। आज हम देखते हैं, वे कैसे साधु हैं और अद्भुत सेवा में जुड़े हैं। ये काकाजी का प्रताप है।

विद्यानगर में हमारे आर.डी. काका vice chancellor थे। उनका इतना प्रभाव था कि ऐसा बोलते हैं कि वे जहाँ से निकलते हों, वहाँ से छात्र अपना रास्ता बदल लेते, ताकि उनका सामना न करना पड़े, उनका ऐसा खौफ था। पर, सत्संग में काकाजी और साहेब के संपर्क में आए। फिर पप्पाजी के पास आकर सुबह संघ ध्यान में बैठते थे।

एक बार पोषी पूर्णिमा की शिबिर में काकाजी वहाँ आए और बोले—**किसी को कुंडलिनी जाग्रत करनी हो, तो मैं सात दिन में करा दूँगा।** यह बात सुन कर आर.डी. काका ने काकाजी से कहा—मैं 7 दिन के लिए आने वाला हूँ। काकाजी बोले—Welcome. फिर वे ताड़देव आए। काकाजी ने उनसे पूछा—क्या पिओगे? वे बोले—आप जो पिलाओ, मैं आपके पास हाथ ऊपर करके आया हूँ। आपने कहा था कि मेरे पास आओ, मैं सात दिन में कुंडलिनी जाग्रत करा दूँगा। मुझे ये करना है। फिर काकाजी बोले—हम यहाँ धुन करें या कहीं बाहर जाएँ? वे बोले—आप जहाँ भी लेकर जाएँ। काकाजी इतने राजी हो गए और उन्हें भी गणेशपुरी ले गए थे। वहाँ जाते समय रास्ते में बहुत धुन कराई।

ये सब देख कर आर.डी. काका बोले—मुझे ऐसा था कि काकाजी रजोगुणी हैं। इनमें भगवान कैसे हो सकते हैं? लेकिन सात दिन साथ रहने के बाद उन्हें काकाजी का खूब गुण आया और अंतर में स्वामिनारायण का भजन ऐसा शुरू हो गया कि आखिर तक साहेब की सेवा में लगे रहे। उनके मुंह से हम हमेशा स्वामिनारायण की धुन सुनते। उनका ऐसा परिवर्तन हो गया कि मंदिर के पुजारी बन गए। एक समय था कि उनके सामने से कोई गुजरता नहीं था, लेकिन फिर सेवक के सेवक बन कर बैरिस्टर दादा के साथ रह कर पुजारी की सेवा की... सो, प्रभु का कार्य प्रभु की रीत से, प्रभु की प्रसन्नता के लिए हो—यही प्रार्थना।

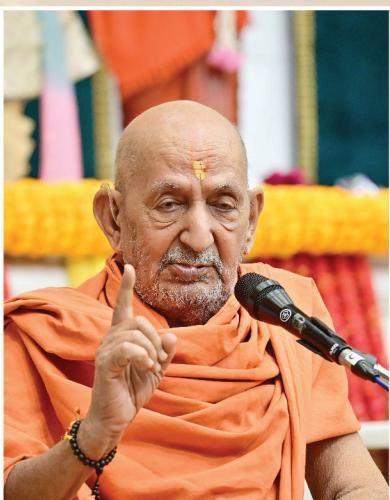
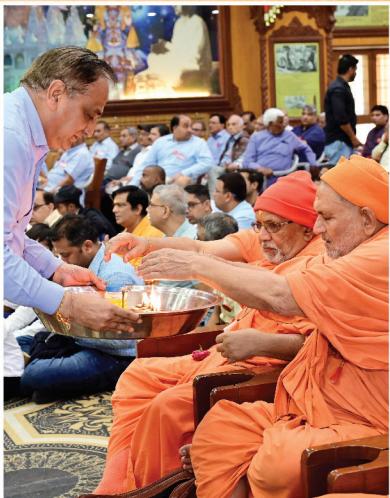
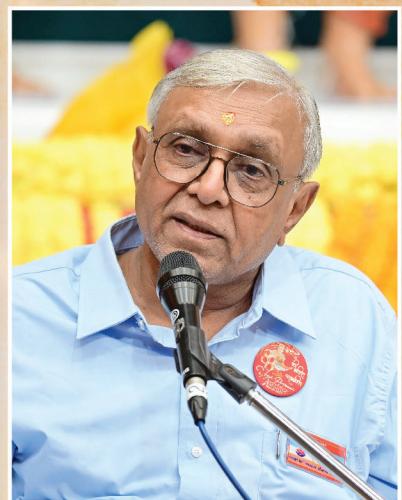


## 8 માર્ચ ગ્રાતઃ - ય.પુ. ગુહણી કે 88બેં ગ્રાકટ્યુ યર્બ કે ઉપાલક્ષ્ય મેં મહાપુજા...



गुरुजी ने कोई *commercial activity* यहाँ खड़ी नहीं की।  
केवल धैतन्य की प्रगति के लिए ही, जब, जहाँ, जो जलरत हो  
वैसा गुरुजी वर्तते हैं।

– पू. पियुषभाई पनारा  
(गुणातीत प्रकाश)



88

# IN YOUR EYES

*There is an ocean of Selfless Love*



Your heart radiates warmth of tender CARE



8 मार्च सायं - प.पू. गुरुजी के 88वें ग्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...





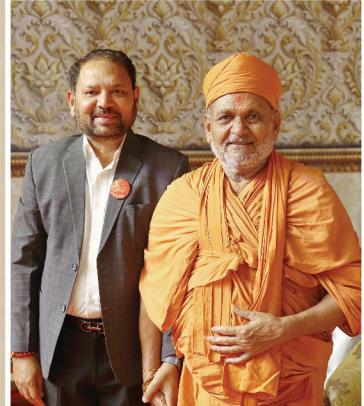
सत्पुराष के साथ निष्कपटभाव का  
संबंध कैसे दृढ़ करना चाहिए

रात को जाग कर भजन कैरे करना चाहिए  
आत्मीयता तथा संप, सुहृदभाव, एकता का  
पालन कैसे करना चाहिए

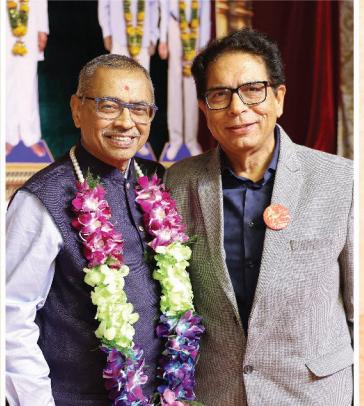
ऐसी ख्रास बातें

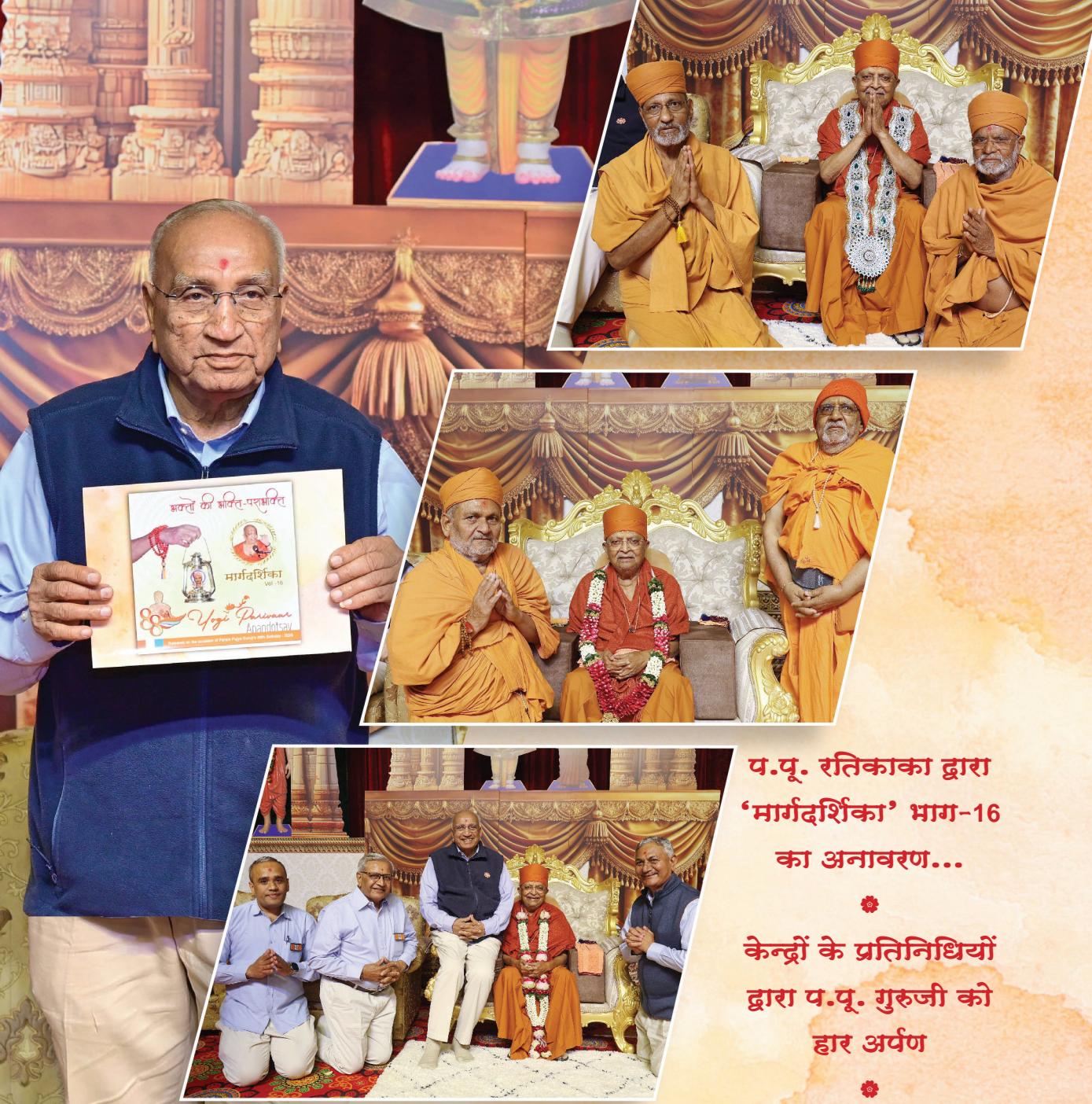
काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी कहते थे...  
ये सब गुरुजी ने अपने जीवन में उतारी हैं।

— प.पू. दासस्वामीजी  
(हरिधाम)



स्वरूपों व सद्गुरु संतों का  
अभिवादन...





**प.पू. रतिकाका द्वारा  
‘मार्गदर्शिका’ भाग-16  
का अनावरण...**

\*  
**केन्द्रों के प्रतिनिधियों  
द्वारा प.पू. गुरुजी को  
हार अर्पण**  
\*

**गुणातीत समाज की  
बहनों का अभिनंदन...**



**88**



## 8 मार्च—प.पू. गुरुजी का 88 वां ग्राकृयोत्सव

8 मार्च की सुबह 9:00 बजे सभी ‘कल्पवृक्ष’ हॉल में एकत्र हुए। ‘महापूजा’ शब्द सुनते ही जिनकी छबि सहज याद आती है, ऐसे प.पू. वशीभाई ने सबके श्रेय हेतु पू. हितेनभाई के साथ विशिष्ट महापूजा संपन्न की। तत्पश्चात् जगरांव के पू. अनूप टांगरीजी द्वारा ‘क्या कहूँ कौन-सी दौलत है गुरु...’ भजन प्रस्तुत करने के बाद, प्रेमी हृदय मुंबई के पू. रमेशभाई त्रिवेदी ने अपनी अलंकृत भाषा में प.पू. गुरुजी का माहात्म्यगान करके भक्ति अदा की। दिल्ली के पू. भीखूभाई झांसा ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपना भाव व्यक्त किया—

गुरुजी को अपना *birthday* मनाने का चाव नहीं, पर अपने सभी केन्द्रों से जो संत-भक्त आते हैं, उससे वे खूब राजी होते हैं। इसीलिए महाराज के समय से बड़े उत्सवों का आयोजन होता आ रहा है कि भक्त ग़लत जगहों पर न जाकर यहाँ आए। यही इस संप्रदाय का *concept* है। भगवान ख्वामिनारायण के परमहंसों ने इतने दुःख झोल कर भी समाज में परिवर्तन किया। तब कई कुरीतियाँ थीं और इन्होंने ऐसी अलख जगाई कि आज पूरे विश्व में ये संप्रदाय छा गया है। महाराज ने न केवल ख्वरुपों को, बल्कि छोटे संतों को भी ऐसा ऐश्वर्य दिया है। सुहृदख्वामी ऐसे संत तैयार हो गए कि रात को दो बजे भी 40-50 जनें आ जाए, तो भी उनको खाना खिला कर राजी करते हैं। उन्हें एक ही तान है कि मुझे गुरुजी का वचन पालन करना है...

गुरुजी देने को तत्पर हैं, मगर हमारी झोलने की क्षमता होनी चाहिए। वे तो हमें परिपूर्ण, ब्रह्मस्वरूप बनाने में लगे ही हैं... गुरुजी सब के लिए एक-एक कृष्ण के समान हैं... गुरुजी का दिल इतना विशाल है कि हर एक भक्त के लिए जगह है। गुरुजी सबके अंदर समाये हुए हैं। कृष्ण भगवान के पास 9 लाख गायें थीं। फिर उन्हें मक्खन चुराने की क्या ज़रूरत थी? गुरुजी जो *gesture* करते हैं, वैसे कृष्ण भगवान भी करते थे। वे जिसके घर का मक्खन चुराते थे, उसके घर की सारी तकलीफें खा जाते थे। ऐसे ही गुरुजी हमारे उद्धार के लिए सेवा लेते हैं...

गुणातीत प्रकाश-सूरत के पू. पियुषभाई पनारा ने गुरुहरि पप्पाजी एवं प.पू. गुरुजी से प्राप्त हुए अनुभवों का लाभ दिया—

...दिल्ली मंदिर के एक भजन में गुरुजी के लिए ‘अपनेपन के शहंशाह’ शब्द आता है। उस बात का विचार करें, तो सच में गुरुजी तो गुरुजी ही हैं और वे कर सकते हैं। सभी भक्तों के दर्शन



करते हैं-उनके साथ रहते हैं, तो काकाजी, पप्पाजी, बा की स्मृति हो जाती है। गुरुजी के सान्निध्य में रहते हैं-दर्शन करते हैं या बातें सुनते हैं, तो ऐसा लगता है कि हम पप्पाजी के साथ हैं। गुरुजी में हमें सब में पप्पाजी की प्रतिभा का दर्शन होता है... ऐसे गुणातीत पुरुषों की हमें भैंट मिली, ये दुनिया में सबसे बड़ी बात बन गईं...

हमारी हंसा दीदी भी कहती हैं—मैं पप्पाजी का कार्य हूँ, इस ढंग से हर पल वर्ती। हमारे मन में निरंतर यही विचार रहना चाहिए कि हमारा जीवन कैसा हो, हमें किसे राजी करना है, क्या प्राप्ति करनी है, पूरे दिन में कैसा जीवन जीते हैं और किसको राजी करने के लिए जीते हैं? गुरुजी यहाँ पर सभी संतों, बहनों, भक्तों में इस प्रकार का सिंचन कर रहे हैं। उन्होंने सबको पकड़ रखा है, वे हमें चला रहे हैं। वो हम सबको जीने के लिए ऐसा बल देते हैं, ये उनकी गुणातीत रिथिति है। काकाजी महाराज उनमें अखंड रहे हैं। उसकी अनुभूति हमें होती है। इसलिए हमें भी यहाँ आकर ऐसे दर्शन करने का मन होता रहता है। सान्निध्य में बैठने का मन होता है... जो भी संत, युवक, बहनें और समर्पित गृहस्थ ऐसे हैं कि जिनके जीवन में गुणातीत पुरुषों को राजी करने के सिवा और कोई चीज़ नहीं है। गुरुजी की सब शीति-नीति निराली हैं। ...गुरुजी ने कोई *commercial activity* यहाँ खड़ी नहीं की। केवल वैतन्य की प्रगति के लिए ही, जब, जहाँ, जो ज़रूरत हो वैसा गुरुजी वर्तते हैं। निरंतर गुणातीतभाव में रह कर हमें दर्शन और सुख देते हैं... जीतेजी ऐसी प्राप्ति कर लें, ऐसी जाग्रतता, सजगता, चौकसाई गुणातीत स्वरूप को राजी करने की हमें नित्य, निरंतर देते रहना...

प.पू. गुरुजी के प्रागट्य पर्व निमित्त प.पू. हंसा दीदी की आङ्गा से गुणातीत ज्योत की बहनों ने भक्तिभाव से हार बना कर भेजे थे। सो, प.पू. गुरुजी को गुणातीत प्रकाश के पू. अनुलभाई व पू. महेंद्रभाई शाह ने और प.पू. दीदी को गुणातीत ज्योत की पू. काजू बहन तथा पू. डॉ. नीला बहन ने हार अर्पण किया। तदोपरांत पू. अनूपजी एवं सेवक विश्वास द्वारा ‘काली कमली वाला मेरा यार है...' भजन प्रस्तुत किए जाने के बाद, सांकरदा के पू. स्नेहलखपत्रवामीजी ने प.पू. गुरुजी से जुड़े पुराने प्रसंगों की स्मृतियाँ कराईं—

...अक्षरविहारीस्वामीजी, हरिप्रसादस्वामीजी और गुरुजी, ये तीन हमारे नेता... मेरे स्वामीजी, और हरिप्रसादस्वामीजी, गुरुजी द्वारा प्रगट हैं, हैं और हैं ही...

अक्षरधाम में कोई भेदभाव नहीं। गुरुजी जैसे अंतर्यामी और सर्वज्ञ पुरुष सब में नहीं मिलेंगे।

उन्होंने मेरे जीवन में इतना परिवर्तन कर दिया... गुरुजी सच में अद्भुत पुरुष हैं; काकाजी का स्वरूप हैं, उन्हें अखंड धारे हुए हैं...

दिल्ली आकर उन्होंने जो कार्य किया है, वो मानना पड़े। एक बात दिल्ली मंडल के मुक्त पक्की समझें कि जहाँ हैं, वहीं अपने को *polish* करना है। आपको सांकरदा-विद्यानगर वाले परसं आयेंगे। पर, यहाँ रह कर आपस में एक-दूसरे के स्वभाव जंचाना... प्रत्यक्ष की भवित्वलप हो, उतना ही बोलें, उतना ही विचार, वाणी और वर्तन करें...

काकाजी ने 26 जनवरी 1986 को अपने प्रवचन में कहा है— सिद्ध हों, सर्वज्ञ हों, आकाश में उड़ते हों, पानी पर चलते हों, ज़मीन में दफ़न होकर रहते हों, करोड़ों लोगों को सत्संग करवाते हों, मगर जब तक मन का आभास है, तब तक वो दूसरा ज्ञान है, गुणातीत ज्ञान नहीं है...

यही काकाजी ने सिखाया और गुरुजी भी सिखा रहे हैं। आज उनके चरणों में एक ही प्रार्थना कि बापा, काकाजी, पप्पाजी का संकल्प था कि संप, सुहृदभाव और एकता रखने के लिए बिजली जैसे संत बनना ही पड़े, जो भगवान तक पहुँचाये। तभी ये तीनों रख पाएंगे। आप ऐसे संत हैं, तो खुले हाथ से सब पर बरसो कि हम भी ऐसे बन जायें।

सभा के अंत में गुणातीत प्रकाश के पू. इलेशभाई ने गुजराती भजन ‘आयो अनिंदिशथी व्हालो...’ गाकर समापन किया। सबने दोपहर को प्रसाद लिया और स्वयंसेवक शाम को मनाए जाने वाले प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव की सुसज्जा की सेवा में जुट गए।

सायं पौने ४: बजे फूलों से सुसज्जित बैटरी कार में विराजमान होकर प.पू. गुरुजी, सद्गुरु संतों एवं महानुभावों को साथ लेकर सभा मंडप में पधारे। पृष्ठभूमि पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति सहित गुणातीत स्वरूपों की मूर्ति अंकित की थी। उसके ऊपर ‘योगी परिवार आनंदोत्सव’ का इस बार का सूत्र— ‘भक्तों की भक्ति—पराभक्ति’ लिखा था। इसके दोनों ओर भगवान स्वामिनारायण के दो प्रसंगों के चित्र लगाए थे। मंच पर सभी स्वरूपों-महानुभावों के विराजमान होने के बाद, सभा की शुभ शुरुआत पू. अनूप टांगरीजी ने स्वरचित भजन ‘जन्मदिन की तुम्हें गुरुवर बधाई देने आए हैं’ गाकर की। तत्पश्चात् पू. राकेशभाई शाह ने सभी स्वरूपों-मुक्तों का स्वागत व अभिनंदन के बाद मंच के दोनों ओर उत्सव के सूत्र—‘भक्तों की भक्ति—पराभक्ति’ का दर्शन कराते भगवान स्वामिनारायण के चित्रित दो प्रसंगों के विषय में निम्न प्रकार बता कर प्रार्थना की—

❖ एक बार भगवान् स्वामिनारायण सारंगपुर में विराजमान थे। अर्धरात्रि को कड़कती बिजली के साथ मूसलाधार बारिश हो रही थी। निद्राधीन श्रीहरि ने अचानक एक चीर लगाया। जिस दिशा से वह चीर लगाया दे रही थी, वे उस ओर दौड़ते हुए पहुँचे। वहाँ देखा कि भारी बरसात के कारण देवा पटेल के मकान की बड़े दूट रही है। क्षणभर का भी विलंब किए बिना श्रीहरि ने बड़े अपने कंधे पर उठा ली। वहाँ से घर के सदर्य और मूक पशु जब तक सुरक्षित बाहर नहीं निकल गए, तब तक उन्होंने बड़े अपने कंधे पर उठाए रखी। यूँ भवतवत्सल श्रीहरि ने स्वयं पीड़ा सहन करके सभी को बचा लिया। श्रीहरि की ऐसी अनुंकपा से यही दर्शन होता है कि **अपने भक्त के लिए वे क्या नहीं कर सकते!**

❖ इसी प्रकार, कंथकोट के कचरा भक्त श्रीहरि के आश्रित रहते थे। अपने घर के बाहर ही सज्जी की दुकान चला कर निर्वाहन करते थे। एक बार श्रीहरि उनके यहाँ अचानक पहुँच गए और मूलजी ब्रह्मचारी इत्यादि को बताए बिना एक रात लके। कचरा भक्त की पत्नी तब अपने पीहर गई हुई थी। अगले दिन सुबह जागने के बाद महाराज ने कचरा भक्त से कहा कि मुझे बहुत भूख लगी है, कुछ खाने के लिए दो। कचरा भक्त ने कहा कि महाराज, अभी तो ग्राहकी का समय है। थोड़ी देर रुक जाओ, फिर मैं आपको भोजन बना कर खिलाता हूँ। काफ़ी समय हो गया तो महाराज ने कचरा भक्त से कहा कि तुम्हारी दुकान में संभालता हूँ और तुम मेरे लिए खाना बना दो। भक्त को ऐसा हुआ कि ये ठहरे भगवान्, कहीं सज्जी ऐसे ही कम मोल में बांट न दें। लेकिन, महाराज ने अच्छे माव-तोल से दुकान संभाली और ग्राहकों को भी खुश कर दिया। यूँ महाराज ने कचरा भक्त को चिरस्मृति दी। स्वामिनारायण संप्रदाय में प्रति वर्ष प्रबोधिनी एकादशी के दिन शाकोत्सव के रूप में इसकी स्मृति की जाती है।

ऐसे प्रसंग एहसास कराते हैं कि स्वामिनारायण संप्रदाय स्थापित करके भले ही श्री सहजानंदस्वामी भगवान के रूप में पूजे गए, लेकिन अपने आश्रितों के साथ उन्हीं की कक्षा पर ओतप्रोत होकर, उन्होंने अपने धारक संतों को एक दिशा निर्देश दिया कि भक्तों के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करना और उन्हें अपनेपन का एहसास कराना ही सच्ची साधुता है। भक्त को अपनत्व देकर, उसे जीवन में जो कमी खलती हो उसकी पूर्ति करके उसे प्रभु से जोड़ना ही पराभवित है।

भगवान् स्वामिनारायण ने अपने जीवन काल में कई भक्तों की खूब सेवा करी, चाहे नीलकंठ वर्णी के रूप में किसी संत या भक्त के बीमार होने पर उनकी सेवा करी या फिर 30 साल दादा



88

खाचर के दरबार में रह कर काठियों के साथ उन्हीं के जैसा बन के रहे। हमें मिले गुणातीत स्वरूप दिन-रात निरंतर यही उद्यम कर रहे हैं। हमारा परम सौभाग्य है कि गुरुहरि काकाजी ने प.पू. गुरुजी की निराली भेंट देकर हमें निहाल किया। जो दिल्ली में आने के बाद करीब 57 साल से आश्रित सभी मुक्तों का जीवन संवारने के लिए-उन्हें सुखी करने के लिए निरंतर परिश्रम कर रहे हैं। प.पू. गुरुजी ने भक्तों की जो भक्ति करी है, उसका सबको अनुभव है। समय की मर्यादा के कारण video के माध्यम से आज कुछ मुक्तों के स्वानुभवों से जानेंगे कि गुरुजी के रूप में उत्तर भारत के मुक्तों को क्या प्राप्ति हुई है और प्रार्थना करते हैं कि हे गुरुजी! आपने तो देने में कोई कमी नहीं रखी, लेकिन हम उसे आत्मसात् करने के क्षमिता बनें, उसके लिए हमारी लगन दिन-प्रतिदिन बढ़ती रहे, ऐसा बल-बुद्धि दीजिए...

उत्सव की प्रार्थना करने के उपरांत video clip द्वारा पू. अनुज दुरेजाजी, पू. राकेश चौहानजी तथा पू. रवि गुप्ताजी (Vimal Electricals) के स्वानुभव से प.पू. गुरुजी द्वारा की गई पराभक्ति का दर्शन किया। तत्पश्चात् पू. डेविड सर ने अंग्रेजी भाषा में प्रासंगिक उद्बोधन किया—

*...Whenever I come here, I always feel comfortable, I always feel at-home... On last 24th july, my wife met with an accident, and I had to rush. Admitted her in hospital. Severe multiple fractures. It took some time to get all the formalities done. It happened around two o' clock. By 6- 6:30, everything was done. Not knowing I was all alone. People were coming and I called Guruji, and told. Just that feeling that we have for the one person whom you can call immediately and tell your problems. Guruji said ok, don't worry, and then hung up. You won't believe, in another half an hour, Guruji sent Rakeshbhai, Malhotraji, and around 6 nuns. They all reached the hospital at night to be there, and praying for my wife, which I did not expect at all. That is what. This is the love of Guruji that I could think of, and he could give... Guruji is close to all of us... We are all like sunflowers, looking at Guruji to get all that we require in our lives...*

*It is He who loves us, and because of His love, we all come to Him. We are not loving Him, He loves us. That aura and love brings us so close to Him... Here is a person, who always gives more and more to everyone... When problem comes, tell it yes come! I have Guruji with me. So we should be able to face any problem and say this. Come, do whatever you want. I have my guruji beside me...*



*We are all with you always. And we are sure that it is because of your love that keeps us here. Thank you so much.*

पू. डेविड सर के संबोधन के बाद पुनः video clip द्वारा पू. सौरभ, पू. चेतन शर्मा एवं पू. निशिथ मिश्राजी की प.पू. गुरुजी के प्रति भावनाओं का दर्शन किया और फिर सांकरदा के प.पू. बापुस्वामीजी ने आशीष दी—

...बापा बोले थे—मैंने 40 साल अक्षर देरी में प्रार्थना की है कि भगवान् स्वामिनारायण का संदेश हमें विश्व में व्यापक करना है। इसलिए मुझे 51 पढ़े लिखे संत बनाने हैं। बापा ने काकाजी, पप्पाजी और बा द्वारा ताङ्गेव से इसकी शुरुआत कराई। बापा की कृपा से हमने ताङ्गेव से इन सभी की आत्मीयता का पान किया है। काकाजी-पप्पाजी को तो महाराज ने अक्षरधाम से ही भेजा। 1952 में पप्पाजी जब देश में आए, तो फिर उन्होंने बापा से पूछा कि मुझे क्या करना है? बापा बोले—आपको दादुभाई के साथ काम करना है और किसी का दोष देखना नहीं... महाराज ने वचनामृत के पन्ने-पन्ने पर यही लिखा है कि भगवान् के किसी भी भक्त का दोष मत देखना... संबंध वालों को कैवल्य मूर्ति मान कर महात्म्ययुक्त सेवा किया ही करो...

बापा ने एक बार कहा था कि दादुभाई के लिए यदि अक्षर देरी भी गिरवी रखनी पड़े, तो मैं रख दूँ—ये उनकी आत्मबुद्धि थी। गुरुजी ने यहाँ क्या किया? काकाजी के संबंध गले जो-जो भक्त थे, उनके प्रति काकाजी का भाव रख कर आत्मबुद्धि और प्रीति की। महाराज ने कहा है कि एक एक साधु के पीछे लाख-लाख मनुष्य धूमेगा और पूरे विश्व में स्वामिनारायण का डंका बजेगा।

...हमारी सबसे बलिष्ठ दवाई जपयज्ञ है। बापा, काकाजी, पप्पाजी, सभी गुणातीत स्वरूपों ने इसी मार्ग पर चलाया है। कोई भी problem आती है, तो गुरुजी संतों, युवकों, भक्तों, बहनों से भजन ही करते रहते हैं। ऐसा भजन हम अपने जीवन में करते रहें, यही सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना।

तत्पश्चात् पू. राकेशभाई शाह, पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा तथा सेवक विश्वास द्वारा ‘घिसता रहे चपलम, गुरु के वचन में है जिसने बुद्धि लगाई रे...’ और ‘गुरुजी तेरा हर कर्म है, काका राजी हों इसीलिए...’ भजन प्रस्तुत करने के बाद प.पू. वशीभाई ने आशीर्दान दिया—



88

हम सब गुरुजी के 88वें प्रागट्य दिन के झूले में झूल रहे हैं। साथ ही 8 मार्च **आज international women's day**, तो काकाजी-पप्पाजी को याद किए बिना नहीं रह सकते। स्वामिनारायण संप्रदाय में बा, बेन, ज्योति बेन, ताराबेन, दीदी, प्रेमबेन, योगिनी बेन, आनंदी दीदी, माधुरी बेन, इन सब दिव्य बहनों ने मिल कर जो बहनों का काम किया है, उनके लिए जोरदार तालियाँ ये बहुत बड़ा काम हैं, मोदीजी उसके पीछे लगे हैं...

गुणातीतानंदस्वामी की बात है कि कार्य से कारण के बारे में पता चलता है। जिसकी रचना इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा। **अक्षरतीर्थ** जैसे समाधि स्थान, भक्तों, परिसर, सजावट, प्रसाद की रचना इतनी सुंदर है। तो गुरुजी कितने सुंदर और महान होंगे! गुरुजी को *select* करने वाले बापा और काकाजी कितने महान होंगे! गुरुजी के जीवन को 22 साल के चार हिस्सों में बाँट सकते हैं। पहले 22 साल उनका बचपन। खूब *bold, moderate, out of the box thinker from day one*. फिर बापा के जोग में आना और उनके साथ ऐसा *open* संबंध कि बापा उन्हें मकंद कह कर बुलाएँ, तो दोनों की चेतना झगमगा जाये। गुरुजी का बापा के साथ 1954 से 1961 तक का संबंध। बापा की सेना में 51 संतों में जुड़ कर 1961 में साधु हुए और 1966 में विमुख हुए। बापा और काका के साथ उनकी वो पहली भक्ति यानी पराभक्ति। विमुख होने के बाद काकाजी का विज्ञन था कि दिल्ली में ऐसा स्थान करना है। गुरुजी वैसे दिखते नहीं थे, कद में भी छोटे थे और ज्यादा बोलते भी नहीं थे। पर, दुनिया को दिखाया *how to convert vision into mission, mission into objective and objective into reality*. बापा का *vision* था कि दिल्ली में सर्वोपरि स्थान करना है। वे सिर्फ गोले और उनके पास न होने के बावजूद काकाजी ने उनका संकल्प पकड़ा और गुरुजी को बड़ौदा से सीधा यहाँ ले आए... काकाजी का पृथ्वी पर अक्षरधाम लाने का *vision* था, तो आज दिल्ली में ऐसा अक्षरधाम खड़ा कर दिया। *Physical* रूप में देखें तो सुहृदस्वामी से लेकर छोटे-छोटे संतों में भी साधुता, भक्ति और दासत्व भरना। उन्हें प्रेम देकर उनके मन को बदलना और चेतना को ब्रह्मरूप बनाना। **श्रीजी महाराज** के संकल्प का काम बापा और काकाजी की आङ्गा से गुरुजी ने किया। फिर जब काकाजी स्वधाम सिधारे, तो उन्होंने ऐसी पराभक्ति पप्पाजी, स्वामीजी, अक्षरविहारीस्वामीजी के साथ की और आज साहेब और प्रेमस्वामीजी के साथ कर रहे हैं।



...Guruji is legend. He has lived his life. उनमें जो सहजता है, वो भगवान् और साधु का गुण है। कोई अपेक्षा या हड़बड़ी के बिना, शांति से भगवान् का काम करते हैं। इस उम्र में *against all odds* गुरुजी पराभवित कर रहे हैं।

हे गुरुजी! आपने तो पराभवित का संदेश दिया ही है। काकाजी, पप्पाजी, ख्वामीजी, साहेब, दिनकरभाई, मरतभाई हमसे जो अपेक्षा रखते हैं, उस तरह हम पराभवित करते हुए आपस में खो जाएँ। *Ego* को पिघालने का कोई और साधन नहीं है। महाराज ने वचनामृत में कहा है कि तप, त्याग इत्यादि में बहुत तकलीफ है। लेकिन, अगर आप अपने आपको भक्तों की सेवा में जोड़ दो, तो *ego* कहाँ चली जाएगी पता भी नहीं चलेगा और *world* की *problem* का *solution* है—आत्मबुद्धि और प्रीति। तो, ऐसी पराभवित करने का सबको बल मिले यही प्रार्थना।

फिर प.पू. दासख्वामीजी ने स्मृति प्रसंग बताते हुए आशीर्वचन दिए—

...कीर्तन आराधना में खूब आध्यात्मिकता और स्मृति से भरा आनंद आया... गुरुजी का जीवन देख कर खूब प्रेरणा और मार्गदर्शन आज तक मिल रहा है। सत्युरुष के साथ का निष्कपटभाव का संबंध कैसे दृढ़ करना चाहिए, रात को जाग-जाग कर भजन कैसे करना चाहिए, आत्मीयता तथा संप, सुहृदभाव, एकता का पालन कैसे करना चाहिए, ऐसी खास बातें जो काकाजी, पप्पाजी, ख्वामीजी कहते थे, वो सब गुरुजी ने अपने जीवन में उतारी हैं... सत्युरुष के प्रति सच्ची प्रीति, लगाव, निष्कपटभाव, अंतर और अंतराय रहित का संबंध होना चाहिए। मन-बुद्धि का प्रलय हो जाए, लेकिन *at any cost, level, time, circumstances* काकाजी को राजी करना ही है, है और है। ये जो बीज उन्होंने बोया, उससे आज कितनी शाखाएं हो गईं...

हम मानते हैं कि हमें बड़े पुरुष के साथ प्यार है, मगर बड़े पुरुष को हमसे अधिक प्यार है, इसलिए हम टिके हैं। ऐसे ही हमें गुरुजी से लगाव, प्यार-प्रेम है। मगर उससे अनगिनत गुण उन्हें हम से वात्सल्य है। हम पर उनकी कृपादृष्टि है। उन्होंने हमसे संबंध बनाया है, टिकाया है और उसमें प्रतिदिन वृद्धि करते रहते हैं... सुहृदख्वामी के लिए मैं कह सकता हूँ कि भाईख्वामी से सवाया कार्य कर रहे हैं...

केंद्रों के सब संत, भक्त, बहनें आती हैं, तो गुरुजी को उनकी पराभवित करने का आनंद है। अपने जन्मदिन में उन्हें कोई रुचि नहीं। लेकिन उन्हें पहचानने के लिए अंदर के चश्मे चाहिए। वो *mystic man* हैं, उनके बाहर का हलन-चलन से, दैहिक दृष्टि से रहन-सहन देखेंगे, तो



88

गलती कर बैठेंगे। काकाजी कहते—अंतर की आँखों से पहचानो। मेरे लिए भी ये discipline लागू होता है। साथ में रह कर महिमा समझना, सेवा करना, सुहृदभाव रखना सबसे कठिन बात है...

गुरुजी ने प्रसंग पर सुहृदभाव रखा है, सहन किया है। प्रेमस्वामी के सूत्र—झुक जाना, भूल जाना, सहन करना, पिघल जाना गुरुजी पर लागू होते हैं। 1966 से वे पिघलते ही जा रहे हैं और अब तो सम्पूर्णतः पिघल गए। आबाल-वृद्ध सब में प्रगट होते दिख रहे हैं। तो यही प्रार्थना कि हम जहाँ भी हैं, वहाँ अल्प संबंध वाले से लेकर वरिष्ठ संबंध वाले तक में हम स्वरूप को देख सकें। उनके साथ सुहृदभाव से रह सकें और आप स्थूल, सूक्ष्म और कारण देह को पार करके अक्षरधाम का सुख ले रहे हैं और दूसरों को दे रहे हैं, तो हमारी भी कसर टाल देना और आप जैसों के अंतर की ठंडक जल्द से जल्द प्राप्त कर सकें, यही प्रार्थना।

तदोपरांत प.पू. गुरुजी ने आशीष वर्षा की—

...अभी-अभी बहनों की ओर से संदेश आया कि दासस्वामी ने बात करी कि गुरुजी 88 साल के हैं, लेकिन गुरुजी से कहो कि दासस्वामी को कहें कि हमें खाली गुरुजी की ज़रूरत है ऐसा नहीं, दासस्वामी की भी खूब ज़रूरत है...

आशीर्वाद देने की बात आई, तो मैं सोच रहा था कि कल हम होली खेलेंगे। गुणातीत समाज में काकाजी, पप्पाजी, रवामीजी से जुड़े सब भारत में कहाँ भी रहते हो; वे सत्संग के रंग से ऐसे रंग जाएँ कि वो रंग कभी उतरे ही नहीं, दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही रहे और इनके संबंध में जो-जो आएँ, उन सब को भी वो रंग लगाते रहें ऐसी प्रार्थना।

प.पू. गुरुजी से आशीष पाने के बाद उत्सव के सूत्र के आधार पर बनाया नया भजन—‘त्याग-वैराग्य से कोई मूरत प्रभु की न पाए, भक्तों की भक्ति है जो गुरु हृदय स्थान दिलाए...’ पू. डॉक्टर दिव्यांग ने प्रस्तुत किया।

भजन के उपरांत प.पू. रतिकाका ने प.पू. गुरुजी के आशीर्वचनों के संग्रह ‘मार्गदर्शिका भाग - 16’ का अनावरण करके आशीर्वाद दिया—

आज हम गुरुजी के 88वें प्रागट्य उत्सव के लिए इकट्ठे हुए हैं। योगी बापा जब चरोत्तर प्रदेश में पथारते, तब साहेबजी को दर्शन देने अवश्य hostel पर आते थे। उन दिनों बापा की लचि वाली activity गुरुसभा विद्यानगर में खूब जोर-शोर से चलती थी...



बापा ने साहेबजी से कहा कि आप तो निर्दोष हो, मगर दादुभाई को बुलाओ। काकाजी उस वक्त आणंद में ही थे। एक विद्यार्थी काकाजी को बुलाने गया। वे तुरंत आए, तो बापा ने काकाजी से कहा कि विद्यानगर मंडल की जिम्मेदारी आप खीकारो। बापा ने साहेबजी का हाथ लेकर काकाजी के हाथ में सौंपा और आज्ञा की कि आज से मुझे कुछ मत पूछना, दादुभाई को पूछ कर काम करना...

हम जानते ही हैं कि काकाजी के पास तो कथावार्ता का अखाड़ा निरंतर चलता ही था। स्वामी की एक बात में लिखा है कि जब भगवान राजी हों, तो बुद्धियोग दें या अच्छे साधु का समागम दें। तो, बापा ने काकाजी का जो संग दे दिया, उससे ये फ़ायदा हुआ कि युवक मंडल में एक समझदारी *develop* हुई। काकाजी ने सिखाया कि ये जो छात्रालय के *construction* की सेवा आप लेंग कर रहे हो—ऐसे इकट्ठे करते हो, ये सब इसलिए नहीं कि *ego develop* हो कि हमने ऐसा छात्रालय बना दिया। केवल बापा राजी हों इसलिए कर रहे हो। कल को ऐसा समय आए कि छात्रालय छोड़ देना पड़े, तो भी आपको किसी भी तरह की कोई हिचकिचाहट न हो। तभी ये सेवा बापा को समर्पित हुई कही जाएगी और सब में ऐसा समय आया। छात्रालय छोड़ते समय किसी को कोई हिचक नहीं हुई। बापा ने कृपा करके दाढ़काका जैसे संत को हमारे लिए भेजा, तो ये *development* हो पाया। इस तरह संतों-गुरुजनों की ज़रूरत हैं, ये बात ठीक तरह हमने समझ ली।

4-5 साल पहले मैं *I.T.C.* के काम के लिए दिल्ली आया था। गुरुजी जानते थे कि मेरी *Bypass surgery* हुई थी। मैं *train* से आया था और वापिस भी वैसे ही जाने वाला था। गुरुजी को जब पता चला कि कल रतिकाका *train* से वापिस जा रहे हैं, तो तुरंत उन्होंने *plane* की *ticket book* करवा दी। मैंने उन्हें पूछा—क्यों? वे बोले—*Train* में *infection* लग जाए तो? उसमें ज्यादा आदमी एक साथ बैठते हैं, इसलिए *plane* में करा दी, तो ये पराभवित है। **भगवान्** और उनके भक्तों की सेवा हम कर सकें, ऐसी हमारी स्वाभाविक प्रकृति बनें, ऐसा आशीर्वाद गुरुजी के चरणों में आज हम सब माँगते हैं।

तत्पश्चात् प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा—

...हम 1968-70 से गुरुजी के दर्शन, बातें सुन कर आनंद कर रहे हैं। काकाजी के साथ उनकी ऐसी प्रीति कि उनके लिए क्या कर दूँ? हमें याद है कि ताड़देव में हर दूसरे-तीसरे दिन *late fee paid* लिखा हुआ गुरुजी का ख़त आता। मतलब वो ख़त उन्होंने एक दिन पहले दिल्ली में



88

लिखा होता और express post से दूसरे दिन आ जाता, उस समय इतनी fast service थी। यहाँ में लिखी उनकी बातें पढ़ कर काकाजी बहुत खुश होते।

अबने गुरुजी की कई बातें बताईं, लेकिन उनमें से कुछ बातें को हम जीवन में लागू करेंगे, तो आत्मीयता, भक्तों के प्रति भाव व माहात्म्य से सेवा सहज में होगी। गुरुजी की दृष्टि में सिर्फ काकाजी और गुणातीत स्वरूपों, संतों के अलावा कोई नहीं...।

योगी बापा से किसी ने पूछा कि शास्त्रीजी महाराज का जब से संबंध हुआ, तब से आप क्या प्रार्थना करते हो? बापा बोले—एक ही प्रार्थना करता आया हूँ कि हे शास्त्रीजी महाराज! आपका स्वरूप ऐसा है, वैसा पहचान सकें। उसके लिये मैं आपके संबंध वालों में आपको देखूँ। बापा ने ऐसी ही सेवा की और ऐसे ही गुरुजी भी छोटा-बड़ा, आबाल-वृद्ध हरेक की सेवा गुणातीत संत-काकाजी मान कर करते हैं। गुणातीत ज्योत, सांकरदा या हरिधाम कहीं से भी हो, पर उसकी सेवा ऐसे भाव से करते हैं कि उसे लगता है कि शायद ऐसी सेवा तो मेरे अपने स्थान पर भी नहीं होगी... जिन-जिनकी ऐसी सेवा की, वे आज भी याद करते हैं कि गुरुजी ने जो देखभाल की, ऐसी कोई नहीं कर सकता। ऐसे कई व्यक्तियों के प्रसंग हैं... आत्मीयता की ये बात गुरुजी ने अपने जीवन में तो अपनाई ही, मगर सब संतों, सेवकों, बहनों और हरिभक्तों को भी दृढ़ कराई। ये सहज-सामान्य बात नहीं है। गुरु जब 100% वर्तते हैं, तब शिष्य 10% चलते हैं। पर, गुरुजी कितना वर्तते होंगे कि उनका शिष्य मंडल 100% करता है। इसका रहस्य यही है कि केवल गुरु की ओर दृष्टि करके गुरुजी ऐसा जीवन जीये हैं।

दूसरी बात, जो मुझे गुरुजी की बहुत अच्छा लगती है, वो है भजन! वे खुद तो तीव्र भजन करते ही हैं और जो सेवक भी उनके साथ भजन करने बैठते हैं, तो वे भी इतनी तीव्रता और लगाव से करते हैं कि ऐसा लगता है कि भजन के प्रति काकाजी का जो भाव था, वो अब भी live है। ऐसा भाव गुरुजी का हमें हमेशा दिखाई देता है। एक बार सेवक द्वारा अपनी संत बहन को गुरुजी ने अपनी माला भिजवाई। रात को ढाई बजे उसे आवाज़ आई— भजन करो, मानो माला बोल रही थी। फिर उसने गुरुजी को सेवक से कहलवाया, तो गुरुजी ने बताया कि मैं रोज़ रात को 2:30 बजे से 4:30 बजे तक भजन करता हूँ। तो, माला को ऐसा होता होगा कि मेरा मालिक मुझे फिराए, इसलिए जगाया होगा। सोचो, कितना भजन करते होंगे! ये सामान्य बात नहीं हैं... हमारे घनश्यामभाई आए हैं, वे बीमार हो गए। तो गुरुजी बोले—उनका ख्याल रखना मेरी सेवा है, वो मैं करूँगा।



गुरुजी सब पर ऐसे आशीष बरसाये कि हम कुटुंबभाव का जीवन जी सकें। आज अपने प्रागट्य दिन पर खूब बरसो। आपने ये सिद्ध किया है, तो हमें भी ज़रूर करा देना। गुरुजी आपका स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा रहे। 88वाँ प्राकट्य दिन मना रहे हैं, पर हम 108 तक तो मनायेंगे ही, इतना तो आपको रहना ही है। आपके संकल्प से सब होगा। स्वस्थ रहना और दास्तखामी ने अच्छी प्रार्थना की कि हम आपसे ऐसा संबंध बनाये रखें कि आपका मन हो कि मैं सब के साथ रहूँगा और आनंद करेंगे।

फिर पू. सोनूजी ने प्रार्थना की— ...कोई भी कार्य कभी भी यश, मान या कीर्ति के लिए नहीं करना और जीवन में कभी किसी की निंदा नहीं करना।

इनके उद्बोधन के बाद कुछ मुक्तों ने सभी की ओर से स्वरूपों एवं महानुभावों का पुष्प हार से स्वागत किया। इसी प्रकार, बहनों के विभाग में केन्द्रों की प्रतिनिधि बहनों एवं गणमान्य अतिथियों का सत्संग की भाष्याओं-लड़कियों ने हार से अभिवादन किया। प.पू. गुरुजी को पू. परेशभाई मेहता एवं पू. चिन्मय जानी ने हार अर्पण करके दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्त समाज का भाव अर्पण किया। साथ ही केन्द्रों के प्रतिनिधियों ने प.पू. गुरुजी को प्राकट्योत्सव निमित्त हार व स्मृति भेंट अर्पण की। पवई ‘अक्षरधाम’ मंदिर के संत भाइयों, संत बहनों तथा मुक्त समाज की ओर से निम्न प्रार्थना-भावना एक photo frame के रूप में अर्पित की थी—

### हे! परम पूज्य गुरुजी

आज आपके प्रागट्य पर्व पर हम आपका क्या वर्णन या माहात्म्यगान करें?

आप तो सदाबहार दिव्य सत्पुरुष हो, मगर सदा ‘अंदर’ रहने वाली विभूति हो!

आपने ब्रह्मस्वरूप योगीजी महराज और गुरुहरि काकाजी का सेवन किया है,

उनकी देह से अधिक, उनमें सांगोपांग विचरते ब्रह्मतत्त्व को खूब नज़दीक से निहारा है,

उसे आत्मसात करके उनके तद्वत्भाव को पाये हो,

काकाजी की तरह आप भी *mystic personality* हो,

उनकी तरह आपकी भी *dynamic versatility* है।

भगवा वस्त्र और भगवा हृदय से मेघधनुष की भाँति आकर्षित करते हो,

शुभ, पवित्र, निर्मल साधुता के साक्षात् आविर्भाव हो

योगीजी ने आप में पात्रता देख कर साधुता प्रस्थापित की,

काकाजी ने वो कूर पहचान कर आपको कोहिनूर के समान संतत्व बरसाया।



आपने सुरुचि-स्वभजन से, निष्कपट और निखालिस दिल से,  
आंतरबाह्य ऐक्य जैसी विरल विशिष्टता से,  
उस साधुता और संतत्व को सम्भाला, उज्ज्वल किया  
और उसका व्यापक विस्तार कर रहे हो।

### हे! परम पूज्य गुरुजी

गुरुहरि पर्याजी और ब्रह्मरचना रूप हरिप्रसादस्वामीजी जैसे,  
गुणातीत स्वरूपों के साथ के निजी घनिष्ठ संबंध को,  
आपने समझा, प्राप्त किया, विकरित और आत्मसात किया है...  
ब्रह्मरचना अक्षरविहारीस्वामीजी, संतभगवंत साहेबजी  
और भगवत्स्वरूप दिनकरभाई के साथ के सखाभाव को  
मधुर, मांगलिक, सौम्य और शाश्वत रखा है...  
संतवर्य परम पूज्य कोठारीस्वामीजी, प.पू. निर्मलस्वामीजी,  
प.पू. प्रेमरचना स्वामीजी, प.पू. दासस्वामीजी,  
प.पू. विज्ञानस्वामीजी, प.पू. निष्कामस्वामीजी, प.पू. सुहृदस्वामीजी और सभी संतों,  
प.पू. शांतिभाई, प.पू. अश्विनभाई और अनुपम मिशन के तथा  
ताड़देव-पवई, गुणातीत प्रकाश और दिल्ली के संत भाइयों के साथ की,  
आत्मीयता को हमेशा जीवंत रखे रहे हो...  
संबंध स्थापित करना, उसका विकास करके निभाना  
और उस संबंध को बरकरार रखते हुए,  
उसे उत्कृष्ट तथा सीमाचिह्न रूपी कक्षा पर ले जाना,  
ये केवल कैशल्ययुक्त कला ही नहीं,  
बल्कि भक्तिभरे हृदय से किये निःस्वार्थ जतन और सफलता का परिमाण है...

### हे! परम पूज्य गुरुजी

आपकी ये सदाबहार, गुलाबी मरती और आत्मा की स्फुर्ति का,  
कुछ रहस्य हम पा सकें ऐसी कृपा बरसानाजी...  
आप देह से भले वृद्ध हो  
लेकिन मन-चित्त-बुद्धि से गुणातीत ज्ञान से प्रबुद्ध हो



88

धर्म-नियम-चारित्र्य से अनेकों को निष्कलंक और विशुद्ध कर सको ऐसे सामर्थ्यवान हों...

आत्मिक आनंद और उल्लास से समुद्ध हो,  
ऐसी अवस्था का वैभव और ऐसी आध्यात्मिक वैभवयुक्त साधुता के आप शिखर हो...  
**हे! परम पूज्य गुरुजी**

आज आपके प्रागट्य पर्व पर,  
हम बहुत कुछ माँगेंगे, जो आप बिना माँगे दे ही रहे हो  
तो ऐसा हमेशा रहे, यही हम चाहेंगे...

मगर उससे पहले,  
आपके साथ ऐसा संबंध हो जाए, ऐसी सेवा-समर्पण के दो कदम हम बढ़ाएँ,  
आप के पास से आशीर्वाद फिसल जाएँ, ऐसे पात्र बनें,  
आप तो दयालु हो, पर मायिक इच्छाएं पूरी करने के लिए आपकी दया, करुणा का  
ग़लत फ़ायदा उठायें तो वो हमारी मूर्खता है,

कम से कम हमें उस मूर्खता का एहसास हो ऐसी कृपा करना...  
आपको पहचानना मुश्किल है

आपका अनुकरण करने की कुचेष्टा के बजाय,  
आपके अनुसरण के प्रामाणिक प्रयत्न करने के लिए खूब जाग्रतता रखें...  
आपको नापने का दुस्साहस करने के बजाय  
आपको प्राप्त करने हेतु रांकभाव से लगे रहें...

भक्तों की महफिल में रहने की आपकी जीवन रीति में निहित  
संबंध की गरिमा, शिष्टता और गंभीरता को पहचान कर यत्किञ्चित उस मार्ग पर

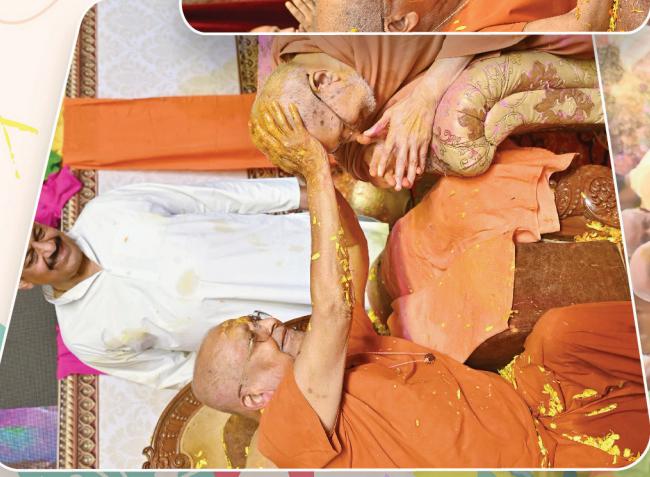
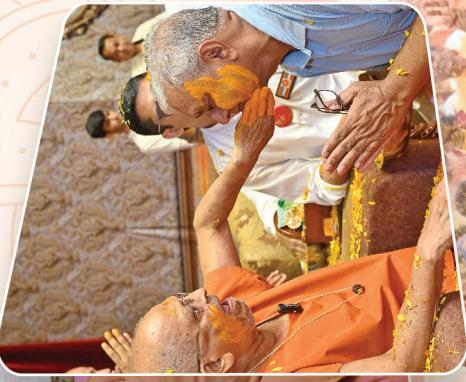
आपके नवशेकदम पर चलें ऐसी कृपा आशीष बरसानाजी...

आपके नवशेकदम पर चलें ऐसी कृपा आशीष बरसानाजी...

उत्सव अंत में भी video clip द्वारा पू. वरुण यादव तथा पू. राजुभाई शाह के स्वानुभव से जाना कि सभी आश्रितों मुक्तों के जीवन में प.पू. गुरुजी ने किस-किस रूप में स्थान लिया है, उन्हें सुखी करने वे दिन-रात कैसे तत्पर हैं। सो, गुरुहरि काकाजी महाराज का ऋण हम कभी न भूलें कि उन्होंने उत्तर भारत के मुक्तों को कैसी अमूल्य भेंट दी है... ‘योगी परिवार आनंदोत्सव’ की निराली स्मृतियाँ लेकर सबने महाप्रसाद लिया और अपने गंतव्य स्थान के लिए प्रस्थान किया।

## 9 मार्च प्रातः—युव्यडीलोत्सव

रंग भीने रसिया संग  
रसबस हीने की है तैयारी  
अयने रंग में ही रंगने आए थगट गुहड़ि...





कर में लिए यिचकारी गुलबर, खेलो हम संग होली...  
दिसा 'फ़गवा' दे दो प्रभुबर, ही जाएं मात्या से यार...  
स्वरूप आपका सदा निर्दिष्ट मानें...  
हित्यभाव की दृढ़ता करें...  
सदा सबके गुण विचारें...





## 9 मार्च—गुणातीत स्वरूपों की निशा में पुष्पडोलोत्सव

फूलडोल—जिसे पुष्पडोलोत्सव भी कहा जाता है, वह स्वामिनारायण संप्रदाय में होली के अगले दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को श्रीजी महाराज की स्मृति करते हुए मनाया जाता है। यह फूलों और रंगों का उत्सव है। इस दिन भक्त भगवान की मूर्ति को रंग-बिरंगे फूलों से बने हिंडोले में विराजमान करके झूला झूलाते हैं।

भीतर के वैमनस्य दूर करने की भावना से लोग एक-दूसरे पर रंगीन पानी छिड़कते हैं और गुलाल उड़ाते हैं। साथ ही प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे उनके जीवन को भक्ति के रंग से भर कर हृदय में विराजित हों।

सन् 1812 में भगवान स्वामिनारायण ने सबको अनेकी स्मृति देने के लिए सारंगपुर में फूलदोल उत्सव बहुत धूमधाम से मनाया था। तब गुजरात के हजारों भक्त इसमें शामिल हुए। श्रीजी महाराज ने सभी भक्तों पर गुलाल छिड़क कर रंगों से सराबोर कर दिया। उसी दिन सायं भक्त राठौड़ धाधल के घर पर संतों-भक्तों के साथ पारंपरिक लोक नृत्य-रास खेलते हुए भगवान स्वामिनारायण ने संत कबीरजी की कविता की निम्न पंक्तियाँ उच्चारित की—

**कोटि कृष्ण जोड़े हाथ, कोटि विष्णु नाम नाथ  
कोटि शंकर धरे ध्यान, कोटि ब्रह्मा करे ज्ञान  
सद्गुरु खेलें वसंत...**

तभी उन्होंने परमहंसों से पूछा— ऐसे सद्गुरु कौन ?

सबने कहा—प्रभु, आप।

तब वही उपस्थित मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी के वक्ष से डांडिया स्पर्श करते हुए

**श्रीजी महाराज** ने कहा—

**हम तो परात्पर पूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म भगवान हैं**

और

ऐसे सद्गुरु तो ये ‘गुणातीतानंद’ हैं, जो मेरे रहने का धाम हैं...

इसी दौरान, उत्तर गुजरात की महिला भक्तों ने ‘महाबलवंत माया तमारी...’



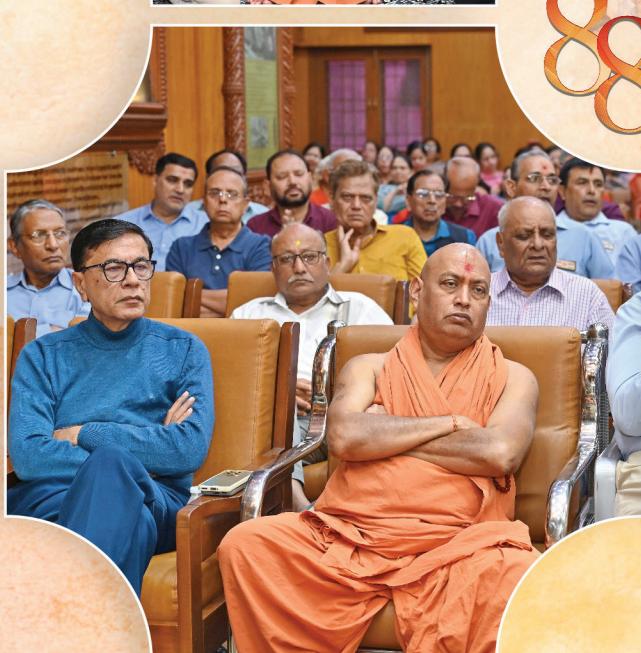
प्रार्थना गाकर, माया से उनकी रक्षा करने की भगवान् स्वामिनारायण से विनती की। जिसे सद्गुरु निष्कुलानंदस्वामी ने ‘भक्तचिंतामणि’ ग्रंथ में भी सम्मिलित किया।

भगवान् स्वामिनारायण की ऐसी दिव्य स्मृति सहित भक्ति के रंगों से रंगने की प्रार्थना करने हेतु दिल्ली अशोक विहार मंदिर में प्रति वर्ष ‘चंदनोत्सव’ का आयोजन होता है। तब महापूजा के दौरान सबको चंदन लगाया जाता है। इस साल 14 मार्च को धुलेन्डी का पर्व था। परंतु, अब जब 8 मार्च को प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त सभी स्वरूप तथा केन्द्रों से पधारे मुक्त एकत्र हो रहे थे, तो संतों-सेवकों को भक्तिपूर्ण विचार आया कि जैसे दो वर्ष पूर्व धुलेन्डी के दिन प.पू. गुरुजी ने पंडाल के मंच पर विराजमान होकर, सबको चंदन युक्त पानी की वर्षा से सराबोर करके आशीर्वाद दिया था, वैसे ही 9 मार्च को सभी स्वरूपों, बड़े संतों के सान्निध्य में ये उत्सव मनाएँ।

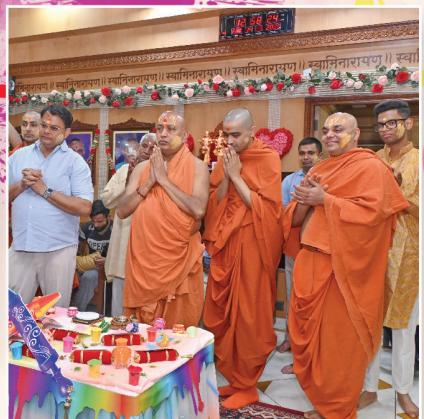
सो, 9 मार्च की सुबह 10:30 बजे ये अद्भुत स्मृति पाने के लिए सभी पंडाल में एकत्र हुए। धुलेन्डी के प्रतीकात्मक विभिन्न रंगों से सजे मंच की पृष्ठभूमि पर बड़ी screen लगाई थी। Screen पर प.पू.ध.धु. आचार्य श्री राकेशप्रसादाजी महाराज—वड़तालधाम की प्रेरणा से प.पू. सद्गुरु श्री ज्ञानजीवनदासस्वामीजी-कुंडलधाम द्वारा बनवाए गए, ‘स्वामिनारायण रंगोत्सव’ की animated video दर्शन का लगातार दर्शन होने से ऐसा प्रतीत होता था कि मानो हम भगवान् स्वामिनारायण के समयकाल में ही पहुँच गए हों। इसमें श्रीजी महाराज संतों-भक्तों के साथ स्वयं होली खेलते नज़र आ रहे थे और... उन्हीं के अखंड धारक प.पू. गुरुजी, प.पू. दासस्वामीजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई ने स्वहस्तों से बड़ी पिचकारी द्वारा चंदन के पानी की वर्षा करके वैसी ही अनुभूति और आनंद कराया।

दिल्ली, मुंबई, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, यू.पी. इत्यादि से आए भक्तों ने धन्यता का अनुभव किया। दिल्ली के हरिभक्त पू. बलराम गुप्ताजी तो पीले फूलों की पंखुड़ियाँ लेकर आए थे, सो चंदन के पानी के साथ उन फूलों की भी वर्षा की गई। करीब दो घंटे तक इस निराले चंदनोत्सव में अपनी झंडियों-अंतःकरण को संतुष्ट करके सबने प्रसाद लिया और अपने गंतव्य स्थान पर गए। ऐसी अनोखी यादों के साथ प.पू. गुरुजी के 88वें प्राकट्योत्सव का समापन हुआ।

13 मार्च सायं – य.पू. गुरुजी का 88वां प्राकट्य दिन...



जुग - जुग जियो गुरुजी प्यारे तुमको करें धणाम...



14 मार्च, धुलेन्डी—  
गुरु के रंग से अंतर रंगवाएं हम...



88

## 13-14 मार्च – हुताशनी - प.पू. गुरुजी का 88वाँ प्राकट्य दिन, धुलेन्डी...

Gregorian Calendar के अनुसार 13 मार्च को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन होता है। अबकी बार इस दिन अनादि महामुक्त भगवत्जी महाराज की जयंती और 14 मार्च – धुलेन्डी के दिन संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि थी। मोगरी - अनुपम मिशन में संतभगवंत साहेबजी का प्राकट्योत्सव मनाने वाले थे। सो, उनके प्रति भक्ति अदा करने के लिए प.पू. गुरुजी की आङ्गा से प.पू. दीदी अक्षरज्योति की कुछ बहनों, पू. राकेशभाई शाह एवं सेवक पू. अभिषेक के साथ 13 मार्च की सायं की flight से अमदावाद गई। वहाँ पू. विपुलभाई ठक्कर के घर पथरावनी करके रात को पू. परेशभाई दोशी के घर सब ठहरे। 14 मार्च की सुबह अमदावाद से निकल कर 9:00 बजे तक अनुपम मिशन पहुँच कर, संतभगवंत साहेबजी के प्राकट्योत्सव में आशीर्वाद प्राप्त करके, प्रसाद लेने के पश्चात् गुणातीत ज्योत गए। वहाँ प.पू. हंसा दीदी के दर्शन करके, पू. मणी बहन के अक्षरधामगमन निमित्त हो रही पारायण में प.पू. दीदी ने उनके प्रति अपनी भावना व्यक्त की। कुछ दिन पहले वल्लभ विद्यानगर में रहते पू. निमेषभाई शाह की धर्मपत्नी पू. भूमिका भाभी का काफ़ी बड़ा accident हो गया था। वे आणंद के Zydus Hospital में treatment ले रही थीं, सो गुणातीत ज्योत में पारायण पूरी होने के पश्चात् उनसे मिलने गए और वहाँ धुन करके अमदावाद के लिए रवाना हुए। अमदावाद में अक्षरनिवासी पू. रमणभाई पकई साहेब की बेटी पू. मयूरी बहन-दामाद पू. शैलेषभाई शाह के घर गए। 12 मार्च को अक्षरनिवासी पू. पकई साहेब का 100वाँ जन्मदिन था, इसलिए उनकी धर्मपत्नी पू. दमयंती बहन और उनके परिवार से खास मिलने गए। उन्होंने अमदावाद के सब भक्तों को पू. पकई साहेब की शताब्दी वर्षगाँठ के निमित्त प्रसाद खिलाया। यहाँ से प.पू. दीदी तथा सभी पू. परेशभाई दोशी के घर ठहरने गए। अगले दिन 15 मार्च की सुबह पू. हेमा बहन ठक्कर के घर एवं उनकी सहेली पू. हंसा बहन तन्ना तथा पू. मनसुखभाई ठक्कर के घर पथरावनी करते हुए पू. श्रेयसभाई व्यास - पू. अनुपमा भाभी तथा उनके बेटे पू. आंनद - पुत्रवधू पू. पारुल को शुभकामनाएँ देकर airport के लिए रवाना हुए और वहाँ से सायं की flight से दिल्ली लौटे। प.पू. दीदी एवं साथ गए मुक्तों की इस सेवा - भक्ति से प.पू. गुरुजी अंतर से राजी हुए होंगे, क्योंकि स्वाभाविक है कि भले ही स्थूल रूप से ये सब गुजरात गए, परंतु उनका दिल और दिमाग़ तो 13 मार्च की सायं मनाए गए प.पू. गुरुजी के 88वें प्राकट्य दिन से जुड़ा ही होगा। लेकिन, सत्पुरुष की मरजी को ही अपना ध्येय बना कर जीतीं प.पू. दीदी अपने वर्तन से सबको सीख देती हैं...



यूँ तो गुणातीत समाज के सभी केन्द्रों के प्रतिनिधियों एवं मुक्तों के संग ‘योगी परिवार आनंदोत्सव’ के रूप में 8 मार्च 2025 को प.पू. गुरुजी का 88वाँ प्राकट्योत्सव मनाया गया था। परंतु, दिल्ली के स्थानीय मुक्तों के अंतर में भावना होती ही है कि 13 मार्च को प.पू. गुरुजी को अपना भाव अर्पण करके उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें। अतः गुरुवार, 13 मार्च हुताशनी – अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती एवं प.पू. गुरुजी के 88वें प्राकट्य दिन निमित्त सायं 7:30 बजे कल्पवृक्ष हॉल में सभी एकत्र हुए।

पू. अधिनी भारद्वाजजी, पू. पंकज रियाज़, पू. ऋषभ नरला एवं सेवक पू. विश्वास ने स्वामिनारायण धुन व भजन प्रस्तुत करके सभा आरंभ की और उनके साथ पू. निश्चय मेहता, सेवक नक्षत्र तथा पू. पुण्यम् ने वाद्य चंत्र बजा कर वातावरण को दिव्यता से भर दिया। प्राकट्योत्सव की इस सभा में निम्न मुक्तों ने आशीष याचना की –

### **पू. समीर शाह (USA)**

...8 मार्च को गुरुजी का जो जन्मदिन मनाया, उसका सूत्र था—भक्तों की भक्ति—पराभक्ति! संत जब हमारे जीवन में आते हैं, तो *series of experience* मिलते हैं और वो अनुभव हमें भक्ति करने की प्रेरणा देते हैं। हम इतनी दूर (USA) से आते हैं, तो एक भावना होती है कि मांदिर से कुछ लेकर जाएँ। जैसे कि कोई आशीर्वाद या अच्छी स्मृतियाँ। तो, गुरुजी से प्रार्थना है कि आज से हम सबकी ऐसी दृष्टि हो जाए कि किसी ज़लरतमंद भक्त की ऐसी सेवा कर लूँ कि आप राजी हो जाएँ—ऐसा आप करा लेना।

### **पू. मैत्रीश्रीलस्वामी**

...मैं वचनामृत गढ़ा प्रथम 59 सुन रहा था। उसमें मुक्तानंदस्वामी श्रीजी महाराज से प्रश्न पूछते हैं—भगवान से असाधारण स्नेह किस प्रकार होता है?

श्रीजी महाराज ने उत्तर दिया—मुझे जो मिले हैं, वे निश्चित रूप से भगवान हैं। वे मेरे पल-पल के कर्ताहर्ता, नियंता और अंतर्यामी हैं। उनमें अतिशय दृढ़ विश्वास अखंड हो।

जो भी गुरुजी से अपनी समर्थ्या के बारे में बात करने आते हैं, तो उन्हें वे कहते हैं—धुन करना, काकाजी ठीक कर देंगे। उस वक्त तो बल मिलता है। पर, जब प्रसंग बनता है या मनमानी हो जाती है, तब इन बातों पर विश्वास नहीं रहता। एक जगह सुंदर उदाहरण सुना था कि bus में या plane में जाते हैं, तो क्या उसके driver या pilot से हम licence मांगते हैं? नहीं। हमें विश्वास होता है कि वह सही सलामत पहुँचा ही देगा। ऐसे ही डॉक्टर की दी दवाई चुपचाप खा



88

लेते हैं, क्योंकि एक विश्वास रहता है कि इसका इलाज कामयाब होगा। तो, ऐसा ही गुरुजी आपकी बातें का हो जाए, ऐसा करा देना...

हम फोन वगैरह में *time pass* करते हैं। कभी आपस में बातें करते हैं, तो भी महिमा की बातें नहीं, जगत की होती हैं। ये सब छोड़ कर हम आपके पास आकर बैठा करें, क्योंकि आप ही सुख-शांति के दाता हैं। जिसकी खूब जरूरत है, वर्ना मन में परेशानी ही रहती रहेगी।

गुरुजी किसी न किसी निमित्त हमारा जतन करते ही रहते हैं। जैसे हमें कोई टोक दें तो उसका स्वीकार नहीं हो पाता, हम गुस्सा हो जाते हैं। पर, बाद में शांति से सोचने पर ख्याल आता है कि हमें आगे ले जाने के लिए महाराज ने ही प्रसंग खड़ा किया था... तो, स्वामिनारायण संप्रदाय में भी काकाजी का और गुरुजी का समाज मिला, वो हमारे लिए कितनी बड़ी बात है!

आरती करते हुए उसका आखिरी *para* आने पर अकसर अपना पुराना जीवन याद आता है कि हम कहाँ-कैसे थे, जगत में कैसे रहते थे? कभी इस रास्ते चलने का सोचा भी नहीं था। पर, महाराज की कैसी करुणा कि ऐसे समाज में और गुरुजी का सान्निध्य दे दिया...

अक्षरतीर्थ-समाधि पर काकाजी की परावाणी की *audio* चलती रहती है, उसमें एक जगह वे प्रार्थना करना सिखाते हैं कि हे महाराज, मुझसे नहीं हो पाएगा, आप अपने बल-अनुग्रह से, अपने मुताबिक़ मुझसे वर्तवा लेना, तो गुरुजी ऐसा आप करा लेना।

## पू. पुनीत गोयलजी

...हर युग में बड़े रूपों को अपने गुरु के प्रगटीकरण को समाज को समझाने के लिए परिश्रम करना पड़ता है, वर्ना वो बात समझ नहीं आती। काकाजी महाराज कहते थे कि बड़े पुरुषों का गुण दिल से लेना न कि दिमाग़ से... गुरुजी ने हमारे लिए जो किया, उसके लिए मेरे पास शब्द या *wisdom* नहीं कि बयान कर पाऊँ...

पिछले साल दिसंबर के छपिया *trip* दौरान एहसास हुआ कि महाराज बता रहे हों कि मैं रच में संत परंपरा छोड़ कर गया हूँ। तुम्हें ऐसे संत मिले हैं, तो उनकी *value* समझो। तो गुरुजी से प्रार्थना कि हम ये गलती बार-बार न दोहरायें। अब बात आती है कि *value* करना यानी क्या? तो, हम अपना मन छोड़ कर गुरुजी की मरज़ी में जुड़ जाएँ। इसके अलावा और कुछ नहीं करना। उनकी मरज़ी हम सब जानते ही हैं... 2025 के *calendar* में गुरुजी का कहा सूत्र लिखा है कि हम गुणातीतभाव प्रगटायें और महाराज को धरा पर अखंड रखें...

तो गुरुजी, आपने हम पर खूब मेहनत की है, रास्ता भी दिखाया है। आज हम इस मोड़ पर



आ गए कि वो चीज हम खो न दें। हमारे हाथ से वो चीज निकल न जाए। और आपको हम निराश न करें। आपकी बात को कभी नीचे न गिरने दें।

**अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की जयंती** के उपलक्ष्य में पू. आनंदस्वरूपस्वामीजी ने उनके जीवन चरित्र की पुस्तक में से पृष्ठ 488 पर लिखित ‘**भजन करते हुए क्रिया करनी...**’ प्रसंग का पठन किया। इसका निरूपण करते हुए प.पू. गुरुजी ने निम्न आशीर्वाद दिया –

...हम पढ़ जाते हैं कि **भजन करते - करते क्रिया करनी।** लेकिन कहने का मक्कल ये हैं कि क्रिया महत्व का नहीं, भजन है। क्रिया न भी हो, कुछ अधूरा रह जाए कोई हरज़ा नहीं, पर अपना भजन नहीं छूटना चाहिए। इसलिए स्वामी ने *main clause* भजन का रखा कि भजन करो। वो करते-करते क्रिया करनी। ऐसा नहीं कहा कि क्रिया छूटनी नहीं चाहिए और साथ में भजन करो। लेकिन हमारा पूरा क्रम उल्टा है। हमारे लिए क्रिया का महत्व है। क्रिया करते-करते भजन करते हैं। जबकि गुणातीतानंदस्वामी ने संत की स्मृति के साथ भजन करते हुए क्रिया करने पर **ज्ञोर दिया।** ये बात हम मुख्यतः समझ लें कि सत्संग में हम उल्टी गाड़ी न चलायें। मंदिर की भी सारी प्रवृत्तियाँ भजन को *priority* पर रख कर करें। मानो सुहृदस्वामी से दाल में नमक ज्यादा गिर गया। तो भजन करना न छोड़े और एक झूट धोकर कपड़े में बाँध कर दाल में रख दोगे, तो वो नमक घूस लेगी। फिर दाल ठीक हो जाएगी, आसान तरीका है। लेकिन हम उसकी चिंता ज्यादा करते हैं कि हाय, नमक ज्यादा गिर गया। पर, भजन छूट गया उसकी किंमत नहीं है, उसकी हमें परवाह नहीं है। जबकि परवाह भजन की रखनी है। ये *main* चीज़ हम भूलें नहीं कि हम जो सत्संग करने आए हैं, वो ये है कि अपना अंखड भजन छूटना नहीं चाहिए। जिसे काकाजी कहते थे – *constant & Continuous...* उन्हें ऐसा भजन करते हुए देखा है। हमें ऐसा भजन करता देख कर बड़े संत-सभी गुणातीत स्वरूप राजी होते हैं। जो उन्हें शुद्ध आस्तिकभाव से देखते हैं, उन पर उनकी प्रसन्नता का कलश ढलता है।

भगतजी का प्रसंग है कि वे छैनी-हथौड़ी से पत्थर तराश रहे थे कि स्वामी उनके पीछे आकर खड़े रहे। भगतजी काम में इतने मशगूल थे कि स्वामी के आने का उन्हें पता नहीं चला। फिर जब देखा तो अपना गातरिया निकाल कर बिछा दिया। स्वामी के बैठने के लिए आसन तैयार कर दिया।

स्वामी ने पूछा – भजन कर रहे हो या क्रिया कर रहे हो?

भगतजी ने कहा – भजन नहीं हो रहा।

स्वामी बोले – ये तो ठीक नहीं है। क्रिया करते हुए तुम्हारा भजन गायब-बंद होने से तुम

**क्रियामय बन जाओ, वो ठीक नहीं है। पत्थर कम तराशोगे या कम तोड़ोगे वो चलेगा, पर भजन कम हो, वो हमें बर्दृशत नहीं।**

स्वामी ने जो बात भगतजी से की, वो हम सबको लागू होती है। लेकिन हम क्या समझते हैं कि ऐसे भजन करते ही रहेंगे, तो मंदिर की प्रवृत्ति कैसे होंगी? अरे! प्रवृत्ति के लिए स्वामी और किसी को ले आयेंगे, लेकिन **भजन करना main रखना है।**

इससे फ़ायदा ये होगा कि हमें देख कर संत राजी होंगे और संत राजी होंगे तो भीतर में ठंडक-शांति होगी। वर्णा भीतर की गंद हटेगी नहीं। संत की मूर्ति अंदर जाकर पूरी *cleanliness* पर ले जाएगी... जीव सुखी हो जाएगा, मतलब जीव अक्षररूप-ब्रह्मरूप हो जाएगा और फिर भीतर में परमात्मा-परब्रह्म विराजमान हो जाएँगे। जीवन का अंतिम लक्ष्यबिंदु आत्मा में परमात्मा को अखंड धारण करना ही है। ध्यान करते हुए शुद्ध सत्त्वगुण वर्तता है और मानना है कि मैं ब्रह्मरूप-अक्षररूप हूँ। फिर वृत्तियाँ शांत हो जाती हैं। वृत्तियाँ *stop*-बंद हो जाएँ, मानो विचारों के बंधन में फ़ंसेगी नहीं और ऊपर उठ कर अक्षरधाम रूप हो जाएँगी। हम अखंड भजन करें, तब ये सारी चीज़ें टलती हैं।

ध्यान में से बाहर आएँ और मूर्ति चली जाए, तब अच्छाल आए कि मेरी मूर्ति तो चली गई, सिद्ध नहीं हुई। तब मानना कि लापरवाह होकर वृत्तियों के प्रवाह में बह गए। बड़े संत की आङ्गा से क्रिया करेंगे, तो गुण के वेग बन्धन रूप नहीं होंगे... यदि निर्गुण यानि अक्षररूप-ब्रह्मरूप हो जाएँगे, तब गुण का वेग परेशान नहीं करेगा।

**साधुता क्या?** वृत्तियों से परे होकर भगवान और संत के साथ जुड़ जाएँ-ब्रह्मरूप हो जाएँ। अक्षररूप हो जाए। साधु का एक ही धर्म कि भगवान को अखंड धारते हो जाना।

तब वो पुरुषोत्तम रूप बन जाता है। यदि गुणातीत स्वरूप-ब्रह्मस्वरूप बन जाए, तो उसमें अखंड भगवान विराजमान रहें, फिर धरती पर आवागमन रहता नहीं।

**साधु होना सबसे बड़ी डिग्री है।** बी.ए., बी.एस.सी., बी.कॉम, एम.ए, एम.कॉम या पी.एच.डी. से भी बढ़ कर है। इसलिए वो नाम के आगे लिखी जाती है—जैसे साधु यज्ञपुरुषदास, साधु ज्ञानजीवनदास, ऐसे लिखा जाता है। ज्ञानजीवनदास साधु नहीं लिखा जाता...

गुणातीतानंदस्वामी ने गोपालानंदस्वामी से कहा कि आप 60 साधुओं का मंडल लेकर जा रहे हैं। तब गोपालानंदस्वामी बोले—इसमें साधु तो दो-तीन ही हैं, बाकी सब त्यागी हैं। अन्यों को उन्होंने भेच्रधारी कह दिया, मनमाने ढंग से गेरुए कपड़े पहन कर छलाव करते रहते हैं। बड़े संत की कृपा और प्रसन्नता से साधुता आती है...



अगर साधु न मिलते तो ये खोट रहती कि भगवान के स्वरूप की पहचान कौन करता? साधु भगवान को जानते हैं, इसलिए वो पहचान करायेंगे। वे अखंड भगवान रखे हुए उनका स्वरूप हैं—भगवत्स्वरूप हैं। ऐसा अनुभव बापा ने काकाजी को कराया, तब जाकर सारा गुणातीत समाज छड़ा हुआ, जो चलता रहा है और चलता रहेगा...

तत्पश्चात् पू. डॉ. दिव्यांग शर्मा ने ‘कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में...’ भजन प्रस्तुत करके प.पू. गुरुजी की भव्य प्राप्ति का सबको एहसास कराया। ‘पुष्प हारों’ में पिरोई हुई सभी मुक्तों की भावनाओं को सेवक पू. ओमप्रकाशजी-पू. राकेश चौहानजी, पू. भव्य गुप्ता-पू. यमन मिश्रा तथा पू. शाश्वत् मोन्डे ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किया। पू. आत्मन् अग्रवाल ने प्रार्थना कार्ड अर्पण किया। सुबह प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा को पू. मैत्रीशीलस्वामी ने विशेष सजा कर प्रार्थना लिखी थी—‘साथे रहेजो...’ उसकी स्मृति करते हुए पू. भीखूभाई झोंसा ने प्रार्थना की—

आज जला डालें अपना धमंड, नकारात्मकता और जलन  
करें नया आगाज़ हम सब मिल कर होलिका दहन।

...सिफ़र गुरुजी के हावभाव और क्रियायें निहारते रहें, तो भी निहाल हो जाएँगे। *Guruji is an institute.* उनसे जो सीखने को मिलेगा, वो दुनिया का कोई counsellor नहीं सिखा सकता... गुरुजी जैसे counsellor हमारी problem का ऐसा solution दे देते हैं कि lifetime के लिए ठीक हो जाए। गुरुजी जितने प्रेम से मुंबई के business tycoon निरंजन हीरानंदनी से मिलते हैं, उतना ही प्रेम से एक छोटे सब्जी वाले से मिलते हैं...

अंत में छोटे बच्चों ने प.पू. गुरुजी को केक अर्पण किया और तब धनि मुद्रण द्वारा ‘जुग-जुग जियो गुरुजी प्यारे...’ भजन की पंक्तियों से इस विशिष्ट सभा का समापन हुआ।

अगले दिन शुक्रवार, 14 मार्च—धुलेन्डी के उपलक्ष्य में पू. मैत्रीशीलस्वामी ने प.पू. गुरुजी की नित्य पूजा विभिन्न रंगों-पिचकारियों से सुशोभित की थी। 9 मार्च को स्वरूपों की निशा में पंडाल में चंदनोत्सव मना ही चुके थे, इसलिए अधिकांश स्थानीय मुक्त नहीं आए थे। मंदिर के संत, सेवक, बहनें तथा आसपास के हरिभक्त विशिष्ट पूजा का लाभ लेने के लिए आए थे। 20 मिनिट धुन के बाद, सभी की ओर से श्री ठाकुरजी का चंदन से पूजन करके पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी ने प.पू. गुरुजी को चंदन लगाया। तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी ने भी सभी संतों, सेवकों तथा हरिभक्तों को चंदन लगाया। सेवक पू. विश्वास ने भजन गाकर भवित अदा की, साथ



88

ही audio द्वारा भजन चल रहे थे। वहाँ उपस्थित हरिभक्तों में से कुछ सहज ही उमंग से प.पू. गुरुजी के समक्ष नाचने लगे। फिर तो वातावरण में इतना उत्साह भर गया कि सब गरबा करने लगे और तो हरिभक्तों ने पू. सुहृदस्वामीजी सहित सभी संतों को प.पू. गुरुजी की पूजा की परिक्रमा करते हुए गरबा करने का आग्रह किया। तब सबको स्मृति देते हुए सोफे पर बैठे-बैठे प.पू. गुरुजी ने हाथ ऊपर करके तालियाँ बजाई। इससे भी अधिक आनंद व्यक्त करते हुए संतों के साथ स्वयं पूजा की परिक्रमा की। दिल्ली मंदिर के इतिहास में यह अद्भुत प्रसंग बना, क्योंकि इतने वर्षों में किसी ने भी प.पू. गुरुजी को ऐसा करते नहीं देखा। ऐसा मनोरम दृश्य देख कर, पिछले वर्ष प.पू. दिनकर अंकल के 80वें प्राकट्य पर्व पर पर्वई मंदिर से प्रकाशित हुई गुरुहरि काकाजी महाराज के जीवन और कार्य पर आधारित पुस्तक—‘अहो! गाथा गुणातीत विभुनी...’ के पृष्ठ 115 पर लिखित 13 मार्च 1952 को गुरुहरि योगीजी महाराज और गुरुहरि काकाजी महाराज द्वारा किए गए दिव्य रास के निम्न प्रसंग की स्मृति हो गई—

**“गुरुहरि योगीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी महाराज को 72 घंटे की ज्ञानसमाधि करा कर 3 फरवरी 1952 को जो साक्षात्कार कराया, उसके बाद उनकी ऐसी अलौकिक स्थिति हुई कि हर पल बापा का ही नामरण करते। उन्हें स्वयं तो यह एहसास हुआ ही कि गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के सच्चे आध्यात्मिक वारिसदार प.पू. बापा ही हैं और सबके समक्ष जोर शोर से उनका महिमगान करने लगे। उसी दौरान गुरुहरि काकाजी महाराज को विचार आया कि सारंगपुर में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के समाधि स्थान पर ‘देरी’ का निर्माण करवा कर उनके चरणारविंद पथराएँ। इस बारे में पू. छगनभाई और पू. कांतिकाका की सम्मति लेकर प.पू. बापा से बात की। सो, 11 मार्च 1952, मंगलवार को गुरुहरि काकाजी महाराज, पू. कांतिकाका, पू. छगनभाई, पू. रानडे तथा कई सत्संगियों की उपस्थिति में गुरुहरि योगीजी महाराज तथा ब्रह्मस्वरूप प्रमुखस्वामी महाराज ने चरणारविंद की पूजा करके कूतन देरी में स्थापना करके ‘सत्संगी जीवन की पारायण’ की पूर्णहृति की। गुरुहरि योगीजी महाराज ने तब गुरुहरि काकाजी महाराज को साक्षात्कार के अनुभव की सारी बात करने के लिए कहा। तब उन्होंने गुरुहरि योगीजी महाराज की सबको यथार्थ पहचान कराते हुए सारा विवरण दिया। उनकी अद्भुत बातें सुन कर हरिभक्तों को गुरुहरि योगीजी महाराज तथा गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रति अतिशय भाव हुआ। वे माहात्म्य, अहोभाव और पूज्यभाव की निगाह से निहारने लगे। वहाँ आए ताजपुर के हरिभक्तों**



88

ने अपने गाँव में पधरावनी करने का आग्रह किया। गुरुहरि योगीजी महाराज ने उनकी आग्रहभरी प्रार्थना स्वीकार की।

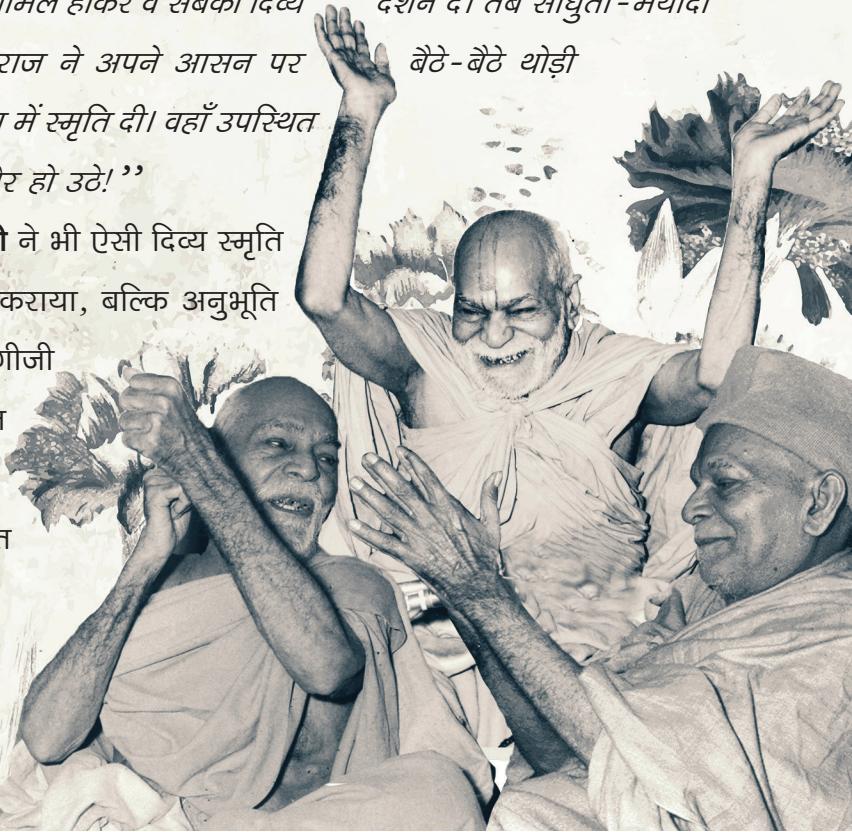
सो, 13 मार्च, गुरुवार को गाँव 'ताजपुर' ले जाने के लिए भक्तों ने खटारा और एक सुसज्जित बैलगाड़ी का आयोजन किया। गुरुहरि योगीजी महाराज तथा बड़े संत उस बैलगाड़ी में और गुरुहरि काकाजी महाराज तथा अन्य सभी खटारे में बैठ कर ताजपुर पहुँचे। गाँव गालों ने रात को खूब भाव से एक उत्सव का आयोजन किया था। भावुक भक्तों ने उत्साह में सबको आमंत्रण तो दिया, लेकिन रात को सब कहाँ आराम करेंगे उसके बारे में सोचा नहीं था। गुरुहरि योगीजी महाराज को इस बात का ख्याल पड़ा, तो उन्होंने युक्तिपूर्ण गाँव के मुखिया इत्यादि को भजन गाने का कार्यक्रम करने के लिए कहा। तुरंत ही सब ढोल, मंजीरे इत्यादि लेकर गाँव की ओपाल में गुरुहरि योगीजी महाराज के पास पहुँच गए। उनकी दिव्य हाजिरी में भजन गाते हुए वातावरण इतना प्रफुल्लित हो उठा कि सब उमंग से गरबा करने लगे। गुरुहरि काकाजी महाराज भी उसमें शामिल हुए। फिर तो गाँव ने गुरुहरि काकाजी महाराज को पगड़ी और वहाँ की ग्रामीण पोशाक पहनाई। गुरुहरि काकाजी महाराज भी हाथ में डांडिया लेकर प्रगट प्रभु के सम्मर्ख रासलीला में ऐसे जुड़े कि गुरुहरि योगीजी महाराज के पास जाकर उन्होंने प्रार्थना की कि श्रीजी महाराज की भाँति इस दिव्य रासलीला में शामिल होकर वे सबको दिव्य दर्शन दें। तब साधुता-मर्यादा के स्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज ने अपने आसन पर देर हाथ हिला कर इस डांडिया रास में स्मृति दी। वहाँ उपस्थित भक्त यह दृश्य देख कर भावविभोर हो उठे! ”

इसी प्रकार, 88 वर्षीय प.पू गुरुजी ने भी ऐसी दिव्य स्मृति देकर न केवल भक्तों को आनंद कराया, बल्कि अनुभूति कराई कि उनमें रहते गुरुहरि योगीजी महाराज-गुरुहरि काकाजी महाराज रूपी परब्रह्म तत्त्व के साथ जीवन जीने का कैसा सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है कि दिल कहता है—

*We live with God...*

दर्शन दें। तब साधुता-मर्यादा

बैठे-बैठे थोड़ी



22 मार्च, शनिवार – प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी के आगमन पर सभा...



कितना ही भजन-सेगा करें, पर जब तक संबंधयोग का रुखाल नहीं आयेगा  
तब तक सुहृदभाव में प्रवेश नहीं ही मिलेगा...

—प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी



88

## ਪੰਜਾਬ - ਲੁਧਿਆਨਾ ਕੇ ਨਵਨਿਰਮਿਤ ਮੰਦਿਰ ਮੈਂ ਅਭੂਤਧੂਰ੍ਬ ਸ੍ਰੂਤਿ ਪ੍ਰਤਿਬਿਧਾ

ਅਪਨੇ ਗੁਲਦੇਵ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਯੋਗੀਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਕੇ ਯੁਗਕਾਰ੍ਯ ਕੋ ਚਿਰਾਂਜੀਵ ਰਖਤੇ ਹੁਏ, ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਹਿਰਿਪ੍ਰਸਾਦਸ਼ਵਾਮੀਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਅਪਨੇ ਜੀਵਨਕਾਲ ਦੌਰਾਨ ਅਵਿਰਤ ਪਾਰਿਥਮ ਕਰਕੇ ਆਂਖਿਤਾਂ ਕੋ ਸ਼੍ਰੀ ਅਕਥਰਪੁਲਥੋਤਮ ਯੁਗਲ ਤਪਾਸਨਾ ਕੀ ਫੁਲਤਾ ਕਰਾਈ। ਇਸੀ ਪ੍ਰਕਾਰ, ਵਰਤਮਾਨ ਸਮਾਂ ਮੈਂ ਤਨਕੇ ਵਾਰਿਸਦਾਰ ਪ੍ਰਗਟ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਪ੍ਰੇਮਿਕ ਰੂਪਸ਼ਵਾਮੀਜੀ ਕਾ ਭੀ ਨਿਰੰਤਰ ਏਕ ਹੀ ਤਦ੍ਦਮ ਹੈ ਕਿ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਹਿਰਿਪ੍ਰਸਾਦਸ਼ਵਾਮੀਜੀ ਕੇ ਅਧਿਆਤਮ ਕਾਰ੍ਯ ਕੋ ਜਾਰੀ ਰਖ ਕਰ ਤਨਕੇ ਸੰਬੰਧ ਵਾਲਾਂ ਕੀ ਵੈਸੀ ਹੀ ਪਰਵਰਿਸ਼ ਕਰਨੀ ਹੈ। ਦਿਨ - ਰਾਤ ਦੇਖੋ ਬਿਨਾ ਵੇ ਕਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਅਥਕ ਪਾਰਿਥਮ ਕਰ ਰਹੇ ਹਨ, ਤਉਕਾ ਹੂਬਹੂ ਦਰਸ਼ਨ ਪੰਜਾਬ ਕੇ ਲੁਧਿਆਨਾ ਮੈਂ ਨਵਨਿਰਮਿਤ ਮੰਦਿਰ ਕੀ ਸ੍ਰੂਤਿ ਪ੍ਰਤਿਬਿਧਾ ਕੇ ਸਮਾਂ ਹੁਆ।

**28-29 ਮਾਰਚ 2025** ਕੋ ਠਾਕੁਰ ਕੱਲੋਨੀ, ਬ੍ਰੋਡਵੇ ਸਿਟੀ, ਪਖੋਵਾਲ ਰੋਡ, ਲੁਧਿਆਨਾ ਮੈਂ ਸ਼੍ਰੀ ਅਕਥਰਪੁਲਥੋਤਮ ਮਹਾਰਾਜ ਕੀ ਸ੍ਰੂਤਿ ਪ੍ਰਤਿਬਿਧਾ ਸਹਿਤ ਤਨਕੇ ਅਖੰਡ ਧਾਰਕ ਗੁਣਾਤੀਤ ਸ਼ਵਲੂਪਾਂ ਕੀ ਸ੍ਰੂਤਿ ਭੀ ਸਥਾਪਿਤ ਹੋਣੀ, ਇਸਕਾ ਮੌਖਿਕ ਨਿਮੰਤ੍ਰਣ ਫਰਵਰੀ ਮਹੀਨੇ ਕੇ ਅੰਤ ਮੈਂ ਪ.ਪ੍ਰ. ਗੁਲਜੀ ਕੋ ਪ੍ਰਾਪਤ ਹੋ ਗਯਾ ਥਾ। ਪਰਿਨ੍ਤੁ, ਤੱਤ ਮੈਂ ਸੰਪੱਚ ਹੋਣੇ ਜਾ ਰਹੇ ਇਸ ਮਹੀਨੇ ਕਾਰ੍ਯ ਕੇ ਲਿਏ ਸ਼੍ਰੀ ਠਾਕੁਰਜੀ ਕੇ ਆਸੀਵਾਦ ਪ੍ਰਾਪਤ ਕਰਨੇ ਕੀ ਭਾਵਨਾ ਸੇ ਪ੍ਰਗਟ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਪ੍ਰੇਮਿਕ ਰੂਪਸ਼ਵਾਮੀਜੀ 20 ਮਾਰਚ ਕੀ ਸਾਂਧ ਅੱਕਲੀ, New Zealand ਸੇ ਦੀਥਾ ਦਿਲ੍ਲੀ ਆਏ। ਪ.ਪ੍ਰ. ਗੁਲਜੀ ਕੀ ਆਜ਼ਾ ਸੇ ਪ੍ਰ. ਅਕਥਰਸ਼ਵਲੂਪਸ਼ਵਾਮੀ, ਪ੍ਰ. ਯੋਗੀਸ਼ਵਲੂਪਸ਼ਵਾਮੀ, ਪ੍ਰ. ਪ੍ਰਕਾਸ਼ਭਾਈ ਠਕਕਰ ਤਥਾ ਸੇਵਕ ਪ੍ਰ. ਨਕਸਤਰ ਤਨਕਾ ਸ਼ਵਾਗਤ ਕਰਨੇ Airport ਗਏ। ਯਹਾਂ ਸੇ ਪ੍ਰਗਟ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਪ੍ਰੇਮਿਕ ਰੂਪਸ਼ਵਾਮੀਜੀ ਬਿਜਵਾਸਨ ਸਿਥਤ ਫਾਰਮ ਹਾਊਸ ਗਏ। ਏਕ ਦਿਨ ਸਫਰ ਕੀ ਥਕਾਨ ਦੂਰ ਕਰਨੇ ਕੇ ਪਥਾਰਾਤ 22 ਮਾਰਚ, ਸ਼ਨਿਵਾਰ ਕੀ ਸੁਫ਼ਰ ਕਰੀਬ 10:30 ਬਜੇ ਅਸ਼ੋਕ ਵਿਹਾਰ ਮੰਦਿਰ ਆਕਰ ਸ਼੍ਰੀ ਠਾਕੁਰਜੀ ਏਵਾਂ ਪ.ਪ੍ਰ. ਗੁਲਜੀ ਕੀ ਦਰਸ਼ਨ ਕਿਯਾ। ਦੋਪਹਰ ਕੋ ਪ੍ਰਸਾਦ ਲੇਕਰ ਆਰਾਮ ਕਿਯਾ। ਸਾਂਧ ਆਰਤੀ ਕੇ ਪਥਾਰਾਤ 7:00 ਬਜੇ 'ਕਲਪਵੁਕਾ' ਹੱਲ ਮੈਂ ਸ਼ਨਿਵਾਰ ਕੀ ਸਾਪਤਾਹਿਕ ਸਮਾਂ ਕਾ ਆਯੋਜਨ ਥਾ। ਪ.ਪ੍ਰ. ਗੁਲਜੀ ਕੀ ਨਿਸ਼ਾ ਮੈਂ ਪ੍ਰਗਟ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਪ੍ਰੇਮਿਕ ਰੂਪਸ਼ਵਾਮੀਜੀ ਕੇ ਦਰਸ਼ਨ - ਸਮਾਗਮ ਕਾ ਲਾਭ ਲੇਨੇ ਕੇ ਲਿਏ ਸਭੀ ਏਕਤ੍ਰ ਹੁਏ। ਆਵਾਹਨ ਧੁਨ ਸੇ ਸਮਾਂ ਆਰੰਭ ਹੁੰਦੀ। ਤਤਪਥਾਰਾਤ ਲੁਧਿਆਨਾ ਮੈਂ ਪ੍ਰਗਟ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਪ੍ਰੇਮਿਕ ਰੂਪਸ਼ਵਾਮੀਜੀ ਕੀ ਪ੍ਰੇਰਣਾ ਸੇ ਨਵਨਿਰਮਿਤ ਮੰਦਿਰ ਮੈਂ ਹੋਣੇ ਵਾਲੀ ਸ੍ਰੂਤਿ ਪ੍ਰਤਿਬਿਧਾ ਕੇ ਵਿ਷ਯ ਮੈਂ ਸਥਾਪਿਤ ਕਰਾਤੇ ਹੁਏ ਪ੍ਰ. ਰਾਕੇਸ਼ਭਾਈ ਸ਼ਾਹ ਨੇ ਸੰਕਿਲਪਨ ਪਾਰਿਚਿਤ ਦਿਯਾ ਕਿ ਕਿਸ ਪ੍ਰਕਾਰ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਸ਼ਾਲੀਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਏਵਾਂ ਬ੍ਰਹਮਿਕ ਰੂਪ ਯੋਗੀਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਕੇ ਸੰਕਲਪ ਕੋ ਆਤਮਸਾਤ ਕਰਕੇ, ਗੁਲਹਰਿ ਕਾਕਾਜੀ ਮਹਾਰਾਜ ਨੇ ਪ.ਪ੍ਰ. ਗੁਲਜੀ ਏਵਾਂ ਸੰਤਾਂ ਕੋ ਤੱਤ ਮੈਂ ਸ਼ਵਾਮਿਨਾਰਾਯਣ ਸਤਿਸ਼ੰਗ ਕਾ ਪ੍ਰਚਾਰ ਕਰਨੇ ਭੇਜਾ ਔਰ ਸ਼ਵਾਂ ਭੀ ਅਥਕ ਪਾਰਿਥਮ ਸੇ ਤਨਕੋਂ ਨੇ ਦਿਲ੍ਲੀ, ਹਿਰਿਆਣਾ, ਪੰਜਾਬ ਝੰਤਾਵਾਦੀ ਮੈਂ ਸਵਾਰਪ੍ਰਥਮ ਭਗਵਾਨ ਸ਼ਵਾਮਿਨਾਰਾਯਣ ਏਵਾਂ ਤਨਕੀ ਗੁਣਾਤੀਤ

પરંપરા કે સંતોં કા સબકો પરિચય દિયા। ફલસ્વર્ખરૂપ કિતને મુક્ત આજ ગુણાતીત  
સમાજ કે કેન્દ્રોં સે જુડી કર ધન્ય હો રહે હુંને।

ફિર સેવક પૂ. વિશ્વાસ ને ‘હે શ્રીજી તેં પદારી અહો કળણા કરી...’ ગુજરાતી ભજન ઔર પ.પૂ.  
ગુરુજી કી આજ્ઞા સે બનાયા પ્રગટ બ્રહ્મસ્વરૂપ પ્રેમસ્વરૂપસ્વામીજી કા ગુણાનુવાદ કરતા હિન્દી  
ભજન – ‘જિસકી નિષ્ઠા પ્રત્યક્ષ મેં સર્વોપરિ...’ પૂ. રાકેશભાઈ શાહ ને પ્રસ્તુત કિયા। તદોપરાંત  
સમી કી ઓર સે સેવક પૂ. વિશ્વાસ ને આશીષ યાચના કી –

હમારી શનિવાર કી સમા મેં પ્રેમસ્વામીજી કે પદારને સે ઔર મી સુશી કા માહોલ હો ગયા।  
હરિપ્રસાદસ્વામીજી કા સૂત્ર હૈ – દાસ કા દાસ... પ્રેમસ્વામીજી કે જબ મી દર્શન કરતે હું, તો દાસત્વ  
કા દર્શન હોતા હૈ, ચાહે સાહેબજી કે પ્રતિ હો યા ગુરુજી અથવા કિસી મી સ્વરૂપોં કે પ્રતિ હો।  
‘નિજાત્માનં બ્રહ્મરૂપં દેહત્રય વિલક્ષણમ्। વિમાય તેન કર્તવ્યા શ્રીજી ભવિતરતુ સર્વદા॥’

યહ શ્લોક કલ્પવૃક્ષ હોલ મેં ગુરુજી ને લિખવાયા હૈ। ઇસમે originally ભવિત: કૃષ્ણસ્ય સર્વદા  
હૈ, પર ગુરુજી ને બદલવા કર શ્રીજી ભવિતરતુ સર્વદા કરવાયા। જો ઇસકે મુતાબિક્ર જિયે, વો  
મહારાજ કો પસંદ હૈ। હમ 2020 મેં તીન દિન કે આત્મીય યુવા મહોત્સવ મેં ગુરુજી કે સાથ  
વડોદરા ગણ થે। મહોત્સવ કે આખ્યિરી દિન પર મંગલાચરણ શ્લોક કે અલાવા સિર્ફ તીન મિનિટ  
સ્વામીજી ને આશીષ દિએ। તબ ઉન્હોને કહા થા કિ ‘નિજાત્માનં બ્રહ્મરૂપં...’ ઔર ભક્તચિંતામણિ  
કે શ્લોક – ‘દાસ કા દાસ હોકર રહે જો સત્સંગ મેં, ભવિત ઉસકી મલી માન્યુંગા ઔર નાન્યુંગા  
ઉસકી તાલ મેં’ – કે મુતાબિક્ર હમ જિએં તો, ગુરુજી ઔર પ્રેમસ્વામીજી સે પ્રાર્થના હૈ કિ આપકી  
તરહ હમ જીવન જીકર નિરંતર સ્વરૂપોં કી પ્રસન્નતા પાતે રહેં।

કર્ફ બાર ગુરુજી કો exercise કરવાને કે લિએ જબ મેં ઉનસે પૂછતા હું, તો વે મના કર દેતે હુંને  
મેં મન મેં સોચતા થા કિ 2-3 બાર આગ્રહ કરને કે બાદ મી વે મના કરતે રહેં, તો ક્યા force  
કરવા ચાહિએ? એક બાર પ્રેમસ્વામીજી મંદિર આએ થે। ઉન્હોને સ્વામીજી કી સેવાએ કી હુર્ફ હુંને, તો  
મુજ્જે હુઆ કિ ઉનસે પૂછતા હુંને। ઉન્હેં જબ મેંને બાત કી તો સહજ બોલે – હમેં પ્રાર્થના કરતે રહના।  
ફિર વચનામૃત ગઢા મધ્ય 41 ‘માનરૂપી હઙ્ગી કા’ કી બાત કરતે હુએ બતાયા –

**મહારાજ** ને ઇસ વચનામૃત મેં પહલી બાત યહ કરી કિ

મગવાન કે ભક્તોં કી સેવા મિલે તો અપના બડા સૌભાગ્ય માન કર કરની।

દૂસરી બાત – સ્વરૂપ કો રાજી કરને કે લિએ સેવા કરની।

તીસરી બાત – ભવિત સે કરની।



88

और चौथी बात—अपने कल्याण के लिए करनी और मान की अपेक्षा के बिना करनी।

संत की कृपा से सब होने तो वाला ही है, ये विश्वास दृढ़ रहे रही प्रार्थना।

और... फिर हरिधाम के पू. बॉसस्वामी ने माहात्म्य दर्शन कराया—

...अध्यात्म खूब गहन विषय है। उसका first stage है प्रेम, दूसरा है धीरज, तीसरा ध्यान-योग, चौथा इन्ड्रिय-अंतःकरण पर विजय और अंतिम स्टेज है—मेरा मुझ में कुछ नहीं, तेरे कारण मैं। स्वामिनारायण संप्रदाय दर्शन, सेवा में निमित्त बनने का संप्रदाय है। हम खूब नसीब वाले हैं कि इन गुणातीत पुरुषों के योग में रहना मिला। मैं 21 साल बड़ौदा रहा। 1972 से काकाजी दक्षा कॉलोनी में आते। उनके पैरों की मालिश करने की सेवा मिली। उनका शरीर खूब strong और गुलाबी था...

जीभ बहुत खतरनाक है। सूक्ष्म शरीर और जीभ का अखंड संबंध है। मैं किसी को देह से देखूँगा, तो मुझे देहभाव दिखायी देगा। 'स्व' से देखूँगा तो स्वभाव दिखायी देगा और भगवान के भाव से देखूँगा, तो महाराज दिखायी देंगे। ये तीन gap हमें cross करने हैं। तू दिव्य, तेरे सब दिव्य। यह मानना खूब कठिन है... आणंद में महाराज की सवारी निकली, तब कड़ीयों ने गोबर, पत्थर वगैरह फैंक कर अपशब्द कहे। राजपूतों ने तलवार निकाली। लेकिन महाराज मूर्ति में लीन थे। अपशब्द करने वालों पर दृष्टि की ओर फिर आँखें बंद करके माला जपने लगे। तब राजपूत समझा गए कि हमें कुछ करना नहीं है। फिर एक पेड़ के नीचे बैठ गए। राजपूत बोले कि आप के साथ थे, तो आपने कुछ करने नहीं दिया। जबकि हमारी तलवारें तैयार थीं। महाराज बोले विजय हुआ। राजपूत बोले—क्या विजय हुआ? आपका अपमान हुआ। तब महाराज बोले—पहली बैलगाड़ी वड़ताल में खड़ी होगी और आस्त्रिरी आणंद में होगी, इतना सत्संग का विकास होगा... मुकुंदस्वामी ने काकाजी के जीवन पर इतना श्रवण, मनन, निदिध्यास किया है कि उनके चरित्र में इतना छूब गए... एक बार स्वामीजी आसन पर विराजमान थे, तब गुरुजी ने इनके आसन का भी जो दर्शन करेगा, उसका अपना आसन स्थिर हो जाएगा। इससे र्घ्याल पड़ता है कि उन्हें स्वामीजी की कितनी महिमा होगी... ये 'हरिधाम' का नामकरण गुरुजी ने किया था। परिसर का नाम रखने की बात चल रही थी, तो गुरुजी एकदम बोले—हरिधाम। मैं जब साधु बना, तो केंद्रीय मंत्री एवं के एल भगतजी उमराट शिबिर में आए थे। तब गुरुजी का परिचय देते हुए स्वामीजी ने उनसे कहा कि हमारे मुकुंदस्वामी कद में छोटे हैं—Little Master, लेकिन उनकी आत्मा बहुत ऊँची है...

प्रेमस्वामीजी जैसे संतों के द्वारा स्वामीजी कार्य कर रहे हैं। अभी हम आख्टेलिया में पर्याप्त गए थे। वहाँ कोई व्यवस्था नहीं थी, क्योंकि समुद्रमन्थन हो रहा है। जिसमें विष भी निकलेगा, अमृत भी निकलेगा। पर, प्रेमस्वामीजी great साधु हैं। अभी उनकी आराम करने की उच्च है, लेकिन काफ़ी संघर्ष चल रहा है... वे तो गुरुमुखी हैं। वे यही मानते हैं सब स्वामीजी करते हैं, मैं कुछ नहीं करता—कैसी निष्ठा!

जब से इन स्वरूपों का दर्शन किया, तब से दुनिया की ओर देखा ही नहीं,  
जब से इनको पाया, खुद अपनी याद आई नहीं।

हम किन के बच्चे हैं ये समझ रखना अनिवार्य है। किसी व्यक्ति को हम खाना खिलायें, तो वो व्यक्ति खा रहा है, ऐसा मानेंगे तो 25% फल मिलेगा। अहोहो भाव से खिलाएँगे तो 50% फल मिलेगा। उसमें रहते महाराज खा रहे हैं, ऐसी भावना से खिलाएँगे तो 75% फल और उस व्यक्ति का दास होकर, चरणरज होकर प्रभु के भाव से खिलाएँगे तो 100% फल मिलेगा...

योगी परिवार यानी संबंध वाले सबके साथ विनम्रता, मिठास से वर्तना। मैं प्रभु का, सब प्रभु के हैं। अखंड आत्मीयता, अखंड आनंद और प्रभु के संबंध वाले सब मेरे। स्वामीजी ने वर्षों पूर्व कहा था कि कुटुंबभावना के सत्संग-परिवार की भावना सन् 1992 तक में साकार हो। गुरुजी ने वो पकड़ा... ये ऐसे पुरुष हैं, जो हमें *physically, mentally, socially, spiritually* समझ सकते हैं। हमारे जीवन की समस्याओं का हल कर सकते हैं।

एक भाई नए साल पर पूजन कराने आए, तो स्वामीजी बोले—नए साल का पूजन क्या? जिसे भगवान और संत मिले, उसके लिए तो हर रोज़ नया साल है। जबान का वज़न बहुत कम होता है। गुरुजी आप मेरे पर कृपा करना, मैं ज़बान संभाल सकूँ। *World में 90% problem का कारण जीभ है...* योगीबापा का श्लोक है—वाणी अमृत ज्यों भरी शहद सी, संजीवनी सृष्टि की, दृष्टि में भरी दिव्यता निरखते सुदिव्य भक्तों सभी... बापा सबको 'गुरु' और काकाजी 'राजा' कह कर बुलाते थे। इन शब्दों में कितनी *height* है। ऐसे पुरुषों के जीवन में डूबते रहें। रात सुबह का झूंटजार नहीं करती, खुशबू मौसम का झूंटजार नहीं करती, हमें आपके सान्जिध्य में रहने को मिला है। बस इसी प्राप्ति में आपकी आज्ञा के मुताबिक हमारा जीवन बीते और बापा के श्लोक की पंक्ति हमारे जीवन में साकार हो। स्वामीजी कहते—जन्म मरण का कारण भी ज़बान है। वे ये भी कहते—बापा, काका- पप्पा की वाणी में डुबो। एक साधक ने पप्पाजी से कहा—मुझे फलां आदमी की क्रिया ज़ंचती नहीं। तो, पप्पाजी बोले—उसकी मूर्ति अपनी पूजा में



88

रखो। कितनी बड़ी बात उन्होंने कही। स्वरूपों के साथ उसकी मूर्ति रखें, जिसके स्वभाव नहीं जँचते। भक्तों को ब्रह्म की मूर्ति मानना है। स्वामीजी कहते थे कि कभी विचार किया है कि गुणातीतानंदस्वामीजी 72 की उम्र तक स्वरूप झाड़ लगाते थे। अनंत शक्ति-सामर्थ्य गाले बापा ने 40 साल रसोई में सेवा की, उनकी ज्ञान ग्राही-दासत्व में छूबें। इस मार्ग पर चलने का महाराज और स्वामी खूब बल दें—यही प्रार्थना।

तत्पश्चात् लुधियाना में होने वाली मूर्ति प्रतिष्ठा का निमंत्रण देते हुए प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने आशीर्वाद दिया—

काकाजी, पप्पाजी और स्वामीजी से संबंधयोग की बहुत बातें सुनी हैं। इन सबका जीवन ही ऐसा था कि संबंध के सामने वे हार खीकार कर लेते थे, संबंध के अलावा इन्होंने कभी कुछ देखा ही नहीं... हमें यहाँ बैठना मिला, इससे बड़ी कोई बात है ही नहीं। यही अद्वितीयता का मध्य है। स्वरूपानंदस्वामी को पीठ में फोड़ा हुआ। उसमें इतना दर्द होता था कि उनके अंतर में से प्रभु की मूर्ति चली गई। तब उनकी आँखें में से आँसू आने लगे। वे महाराज के पास गए और सब बताया। तब महाराज ने कहा—दादा खाचर के दरबार की खपरैल का ध्यान लगाओ। ये बात मुझे, आपको—हम सबको सोचनी है। गुरुजी के आशीर्वाद से हमें संबंधयोग में जाना है। पर, यदि सुहृदभाव प्रगट नहीं होगा, तो मूर्ति कब चली जाएगी पता भी नहीं लगेगा। गुणातीतानंदस्वामी ने कहा है कि कृपा से यदि कोई अखंड मूर्ति देखें, फिर भी क्या? संबंधयोग में जाना अनिवार्य है, क्योंकि उसी से सुहृदभाव का प्रगटीकरण होता है। इसके अलावा चाहे कितना ही भजन, सेवा, अच्छी बात है, लेकिन जब तक संबंधयोग का ख्याल नहीं आयेगा, तब तक सुहृदभाव में प्रवेश नहीं ही मिलेगा।

...हम 108 बार निर्विकल्प रूप से स्वामिनारायण का भजन, माला नहीं कर सकते। मन कहीं न कहीं चला जाता है... ये गुणातीत संतों के जीवन में जितना छूबेंगे, उतनी ही महिमा और संबंध बढ़ेगा... स्वामीजी पूजा में रोज़ योगी गीता का पाठ करते। उसमें बापा ने कहा है—गुण-दोष नहीं देखना है। तो, स्वामीजी ने हमसे पूछा कि दोष नहीं देखना वो तो ठीक, मगर गुण देखने का क्यों मना किया? एक संत ने उत्तर दिया—बापा कहना चाहते हैं कि सिर्फ संबंध देखना है। स्वामीजी बोले—सही है। काकाजी कहते थे कि हमारी *class* में *K.G.* से लेकर *Ph.D.* तक के सभी *student* होते हैं। सबको एक ही *lesson* देते हैं। हर प्रकार के भक्त अलग अंग के होते हैं। तो, उनके स्वभाव-प्रकृति दिखाई देंगे, मगर उसे *note* नहीं करना है।



हम vacation में बापा के पास गोड़ल गए थे। प्रभुदासभाई के लिए मैं स्वामीजी भी साथ थे। बापा उनसे बोले—हमें कल डांगरा जाना है, वहाँ जागास्वामी की समाधि है। राजकोट से गाड़ियों की व्यवस्था कर दो। अगले दिन पहली गाड़ी बुजुर्गों की भेजी। दूसरी युवकों की, तीसरी संतों की और छोथी में बापा थे। ये बात 1963 से पहले की है, तब सौराष्ट्र के रास्ते कच्चे होते थे और sign board भी नहीं थे। जिसने पहले से रस्ता देखा हो, वही उस गाँव में पहुँच सकता है। सब गाड़ियों के ड्राईवर ने रस्ता देखा हुआ था, लेकिन एक सारथी नया था। हमें तो रस्ता पता नहीं था लेकिन प्रभुदासभाई जानते थे। उन्होंने मुझे और एक दोस्त जीभाबापू से कहा कि हम तीनों आखिरी गाड़ी में नए ड्राईवर के साथ जाएँगे। हम सब गाड़ियों को विदा कर रहे थे। बापा की गाड़ी आई, तो उन्होंने गाड़ी रुकवा हमें अपने पास बुलाया और पूछा कि खड़े क्यों हो? हमने बताया कि आखिरी गाड़ी में आ रहे हैं। बापा ने प्रभुदासभाई को अपने साथ बिठा लिया। आखिरी गाड़ी में हम दो बैठे जिसके ड्राईवर को रास्ता पता नहीं था। हमने भी सोचा कि महाराज जो करेंगे, ठीक करेंगे। ड्राईवर घबराते हुए गाड़ी चला रहा था। तो हमारा बाकी सबसे 30 मिनट का फ़ासला हो गया। फिर जहाँ से left turn था, वहाँ एक में से तीन रास्ते पड़ते थे। अब कौन से पर जाना, पता नहीं थी। तो, हमने सारथी से कहा—आपको जो ठीक लगे वो रास्ता ले लो। उसने left का पहला रस्ता पकड़ा। 22 मिनट बाद छोटा-सा गाँव आया। हमने गाँव वालों से पूछा तो उन्होंने बताया ये डांगरा नहीं है, आप ग़लत आ गए। गापिस जाओ और बीच वाला रस्ता पकड़ना। सबके पहुँचने के करीब डेढ़ घंटे बाद हम पहुँचे। बापा शाम को स्नान करते थे। तो, प्रभुदासभाई ने हम युवकों को उनके लिए गर्म पानी तैयार करने की सेवा सोंपी थी। हम लोग तो देर से पहुँचे, तो प्रभुदासभाई ने सब तैयारी कर रखी थी। हम पहुँचे तब बापा बाथरूम में बैठे थे। बापा के पास गए तो उन्होंने झशारे से पूछा कि कहाँ रह गए? मैंने कहा—बापा काठियावाड़ के रस्ते बहुत बेकार हैं, हम रास्ता चूक गए। तो बापा ने बोले—क्या कहा? मेरी खेड़ा जिल्ला की भाषा थोड़ी ruff and tuff है, तो मैंने दोबारा ज़ोर से कहा—बापा काठियावाड़ के रस्ते बहुत बेकार हैं, हम तो भटक गए थे। बापा बोले—यहाँ आओ। उनके पास लोटे में पानी भरा था और मेरी हथेली पर पानी डाला। तब मुझे ख्याल आ गया कि हमने कुछ ग़ड़ब़ड़-ग़लती की है।

बापा ने ऐसा कह कर संकल्प कराया—

‘काल् माया पापकर्म यमदूत मयादहम् स्वामिनारायण प्रपञ्चोरिमअरिम...’



88

फिर बोले—कैसा भी रस्ता था, तीर्थ में आए या नहीं आए? तब पता चला कि बापा

क्या कहना चाहते थे। हमने कहा— हाँ बापा, तीर्थ में आ गए। बापा ने हम से तीन बार बुलवाया—बोलो, धूल-मिट्टी जैसे का भी अभाव नहीं लेंगे। काकाजी कहते—इन्द्रिय, अंतःकरण और आत्मा तक वो बात पहुँच जाए। हम ये बात पकड़ेंगे, तभी संबंध का माहात्म्य समझ पाएँगे। इसके अलावा संबंधयोग का ख्याल नहीं आएगा। जब धूल-मिट्टी जैसे का भी अभाव लेने का मना किया, तो ये तो सब चैतन्य रूपरूप हैं। संबंध से ब्रह्मरूप तो हैं ही, ये बात जब तक पकड़ में नहीं आएगी, तब तक कितनी भी सभा करें-कुछ भी हो, साधु बने फिर भी क्या? गुरुजी, आप हमेशा ऐसे संबंध से जीते आए हैं, यह मैंने आपके जीवन में देखा है। जहाँ तक दृष्टि मिली, आप बहुत कुछ हैं और थे। काका, पप्पा, खामी संबंधयोग की बात करते थे, आज साहेब कर रहे हैं। जहाँ संबंध वाला है हमें वहाँ हार जाना है, उसका स्वीकारना है। ये दृष्टि हम सबको मिले ऐसी आपसे प्रार्थना। भगवान् खामिनारायण के समय में ऐसा कहा जाता है कि दस लाख भक्त थे, उनमें से सिर्फ चार उनकी माला के मनके में आए। हमें आपकी माला के मनके में आना है। 10 लाख में से 4 का ही नंबर लगा था। ज्ञान का विकास बहुत हुआ है। काकाजी-खामीजी ऐसा कहते थे कि हम सब महाराज के समय के ही हैं। तो हमें वो दृष्टि प्राप्त हो कि केवल संबंध योग में हम डूबे रहें—ऐसी कृपा बरसाओ।

तदोपरांत पू. अजय तनेजाजी एवं पू. राजीव शर्माजी द्वारा भजन प्रस्तुत करने के बाद प.पू. गुरुजी ने आशीष वर्षा की—

बौसरखामी ने बड़ी मार्मिक बातें की। प्रेमखामी ने आशीष बरसाये। ये बातें हम जीवन में आत्मसात करें और ये भावना बहती रहे... सब इस गंगाजल में रनान करते रहें। बापा ने बामणगाम में मुझसे भी कहा था— 5 जन्मों से तुम साधु होते आए हो, इस बार पूरा करो। तो बापा के ये आशीर्वाद साकार हों। हम सब आस्त्रिरी जन्म की तरफ अग्रसर हों-वह पा लें यही आज के दिन की प्रार्थना। प्रेमखामी हम सबके लिए संकल्प करें कि हमने जो माँगा है, वो काकाजी, पप्पाजी, खामीजी, साहेब हमारे जीवन में साकार कर दें, यही भावना है।

अंत में सभी भक्तों की भावना व्यक्त करते हुए पू. सिद्धार्थ मल्होत्राजी ने प.पू. गुरुजी को तथा पू. अक्षरस्वरूपखामी ने प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपखामीजी को हार अर्पण करके सभा का समापन किया। रात को मंदिर में ठहरने के बाद, अगले दिन 23 मार्च की सुबह ट्रेन से प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपखामीजी लुधियाना गए।

## वर्षों पहले सन् 1979 में किस प्रकार पंजाब में विचरण करके भगवान्

स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों का महिमागान करके, उनकी पहचान करवा कर सर्वप्रथम गुरुहरि काकाजी महाराज ने सत्संग के बीज रोपे थे, वो स्मृतियाँ करते हुए प.पू. गुरुजी लुधियाना में होने वाली मूर्ति प्रतिष्ठा के लिए खूब उत्साहित हुए। लुधियाना मंदिर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित प्रतिष्ठित होने वाली गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियों की जानकारी होने पर, गुरुहरि काकाजी महाराज से अनन्यभाव से जुड़े मुक्तों ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की कि गुरुहरि काकाजी महाराज के अथक परिश्रम से पंजाब में स्वामिनारायण का प्रचार हुआ है, तो दिल्ली मंदिर की भाँति वहाँ भी उनकी संगमरमर की मूर्ति प्रतिष्ठित होनी चाहिए। प.पू. गुरुजी ने 23 मार्च की देर रात को गुणातीत समाज के सिरछत्र संतभगवंत साहेबजी को संतों-भक्तों के इस भाव से अवगत कराया कि नींव के स्वरूप की मूर्ति भी वहाँ बैठनी चाहिए। तभी संतभगवंत साहेबजी ने प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी से यह बात की। सुहृदभाव दर्शने हुए उन्होंने तुरंत ‘हाँ’ कर दी। फिर संतभगवंत साहेबजी ने रात को 11:30 बजे अमदावाद में मूर्ति बनाने वाले प.पू. किरणभाई त्रिवेदी को फोन करके जल्द से जल्द मूर्ति बनाने का आदेश देकर प.पू. गुरुजी को बताया और यह भी कहा कि काकाजी की मूर्ति है, इसलिए इसकी payment वे करेंगे। 11:34 पर प.पू. गुरुजी ने भी उनसे बात की और फिर 11:42 को पर्वई में प.पू. वशीभाई से भी सारी बात की और उन्हें व प.पू. भरतभाई को प्रतिष्ठा निमित्त आने के लिए कहा।

यह मूर्ति बनना बहुत ही असंभव कार्य लग रहा था, क्योंकि पाँच दिन के बाद तो मूर्ति प्रतिष्ठा थी। लेकिन, गुरुहरि काकाजी महाराज को पंजाब की धरती पर विराजमान होना ही था, तो उन्होंने ही असंभव को संभव बना दिया। 24 मार्च की सुबह दिल्ली मंदिर में प्रतिष्ठित गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति की 3 D file से लुधियाना में प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों के नाप के मुताबिक नई file बना कर प.पू. किरणभाई त्रिवेदी को भेज दी। फिर उनके कहने पर इसी दिन सायं 4:30 बजे प.पू. आशिष शाह ड्राईवर प.पू. भगवानदास के साथ रवाना होकर अगले





88

दिन सुबह 5:30 बजे आबू रोड पहुँच गए। दूसरी ओर सुबह 9:00 बजे मुंबई से ट्रेन द्वारा पू. मिलनभाई माणेक भी आ गए। दोनों मिल कर factory में गए तो वहाँ उन्हें पू. पवनभाई मिले। उन्होंने बताया कि पू. किरणभाई अंबाजी में हैं, आपको मूर्ति के लिए पत्थर देखने वहाँ जाना पड़ेगा। सो, दोनों वहाँ गए और दोपहर 1:45 तक पत्थर देखने के बाद आबू रोड लौटे। सायं 4:30 बजे factory में पत्थर पहुँच कर मशीन पर लग गया। इस दौरान थोड़ी-थोड़ी देर में प.पू. गुरुजी फोन करवा कर पू. आशिष और पू. मिलनभाई से पूछते कि क्या चल रहा है, प्रतिष्ठा से पहले मूर्ति तैयार हो जाएगी? पू. आशिष और पू. मिलनभाई ने दिन-रात देखे बिना-सोये बिना वहीं खड़े रह कर कार्य करवाया। हर समय कारीगर पॉलिश वगैरह में लगे ही रहते। एक साथ कई कारीगर मूर्ति के अलग-अलग भागों को finishing देते। एक शिफ्ट खत्म होती कि तुरंत कारीगरों का दूसरा ग्रुप काम करने लगता। फिर भी पू. लवली भड़या के साथ गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति का cutout लुधियाना भेज दिया था, ताकि यदि समय से मूर्ति न तैयार हो पाए तो उसे प्रतिष्ठा के समय उपयोग किया जा सके। साथ ही दिल्ली से गाड़ी भेज कर जयपुर से पेंटर पू. कमलजी को 27 मार्च की दोपहर तक दिल्ली मंदिर बुला लिया। इसी दिन सायं 5:00 बजे पू. शैलषभाई आचार्य, पू. जोधा शर्माजी, पू. निमित्त शाह, पू. कमलजी (painter), पू. परछाई दीदी, पू. बाती दीदी तथा पू. तृप्ति दवे लुधियाना के लिए रवाना हुए, ताकि वहाँ मूर्ति आने पर तुरंत ही पू. कमलजी पेन्ट करना शुरू कर दें। गुणातीत स्वरूपों के संकल्प और भक्तों की प्रार्थना से 27 मार्च की सायं तक मूर्ति तैयार हो गई। आज तक इतनी जल्दी कभी मूर्ति तैयार नहीं हुई। रात को 9:00 बजे पू. आशिष-पू. मिलनभाई गाड़ी में मूर्ति रख कर लुधियाना रवाना हुए। Google Map के अनुसार लुधियाना पहुँचने का अनुमानित समय दोपहर 12:00-1:00 बजे था। लेकिन, गुरुहरि काकाजी के कहे अनुसार श्रीजी महाराज ने मुक्तों की भावना को पंख लगा दिए। आबू रोड से निकलने के तीन-चार घंटे के बाद लुधियाना तक का express highway मिल गया, तो वे सुबह 9:15 बजे लुधियाना मंदिर के द्वार पर पहुँच गए। तुरंत ही पू. कमलजी ने मूर्ति को



paint करना शुरू कर दिया। उसी दौरान यज्ञ आरंभ हुआ था, जिसमें श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति के साथ गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ व गुरुहरि काकाजी महाराज की cutout मूर्ति रखी गईं। ये नजारा देख कर भजन की पंक्ति याद आ गई—काकाजी अब भी प्रगट ही हैं... प.पू. दीदी की आङ्गा से पू. परछाई दीदी गुरुहरि काकाजी की मूर्ति की painting का लगातार निरीक्षण करके भक्ति अदा करती रहीं।

प.पू. गुरुजी ने इस ऐतिहासिक अवसर पर दिल्ली मंदिर से जुड़े स्थानीय एवं मुंबई-अमदाबाद इत्यादि के अधिकांश भक्तों

को मूर्ति प्रतिष्ठा के दर्शन हेतु लुधियाना चलने का आग्रह किया। दो बसों, टेम्पो द्रावलर तथा गाड़ियों द्वारा तकरीबन 160 मुक्त मूर्ति प्रतिष्ठा में जाने के लिए तैयार हो गए। 27 मार्च की शाम तक पवई से प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. हर्षितदासजी, पू. कुसुम बहन तथा पू. मीना बहन तथा अन्य हरिभक्त आ गए।

**28 मार्च** की सुबह करीब साढ़े आठ बजे दो बस लुधियाना के लिए रवाना हुईं।

तत्पश्चात् करीब 10:00 बजे प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई तथा प.पू. दीदी के साथ अन्य मुक्त भी गाड़ियों से रवाना हुए। करनाल में ‘झिलमिल ढाबे’ पर दोपहर का भोजन करके सब लुधियाना के रास्ते पर चले गए। प.पू. गुरुजी जब दोपहर का भोजन करने के लिए यहाँ रुके, तब करनाल में रहते पू. प्रदीप सूदजी अपने परिवार के साथ दर्शन करने आए। भोजन करने के पश्चात् करनाल से लुधियाना जाते हुए ‘खन्ना’ में एक जगह लक कर काँफी पीने के बाद प.पू. गुरुजी तथा अन्यों की गाड़ियाँ सायं 5:00 बजे सीधा लुधियाना मंदिर पहुँचीं। अल्पाहार करके प्रथम तल पर तैयार हुए गर्भगृह तथा वहीं एक कमरे में paint हो रही गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति का दर्शन करने गए।

सायं करीब 6:00 बजे मंदिर के पिछले द्वार से **शोभायात्रा** आरंभ हुई, जिसमें प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों के cutout का दर्शन हो रहा था।

प.पू. गुरुजी ने भक्तों से कहा—‘खूब नाचो... हमें प्रेमस्वामीजी को राजी करना है।’





**स्वामिनारायण मंत्र** की गूंज और जय-जयकार से सारा वातावरण दिव्यता से भर गया। एक घंटा शोभायात्रा में आनंद करते हुए मुख्य द्वार से मंदिर में प्रवेश किया। यहीं पर रात को प्रसाद लेने के पश्चात् सब जगरांव गए। जगरांव के भक्तों ने हरिभक्तों को ठहराने के लिए दो होटल तथा कई सत्संगियों के घरों में तथा नाश्ते इत्यादि के लिए पू. राजू झांझीजी के Rachna Resort में बहुत अच्छी व्यवस्था की थी। प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, पू. सुहृदस्वामीजी एवं अन्य संत-सेवक पुराने सत्संगी पू. बलवंतराय भारद्वाजजी के घर ठहरे। पुरानी स्मृति ताज़ा करते हुए पू. बलवंतरायजी ने बताया कि गुरुहरि काकाजी महाराज 1985 में आखिरी बार जब पंजाब आए, तब शास्त्री नगर के उनके पुराने घर पर पधरावनी करके गए थे।



रात को थोड़ा B.P. बढ़ने के कारण, **29 मार्च** की सुबह मूर्ति प्रतिष्ठा में लुधियाना जाने के लिए प.पू. गुरुजी को देरी हुई। लेकिन, दिल्ली से तड़के निकल कर सुबह 8:30 बजे पहुँच कर पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, पू. मैत्रीशीलस्वामी तथा पू. शीतलदासस्वामी, प.पू. गुरुजी की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए मूर्ति प्रतिष्ठा विधि के आरंभ में शामिल हुए। प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी की निशा में लुधियाना के स्थानीय आचार्य-ब्राह्मणों द्वारा कराई गई प्रतिष्ठा विधि को प.पू. निर्मलस्वामीजी, प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी, प.पू. संतस्वामीजी, पू. सेवकस्वामी, पू. भागवतस्वामी, पू. सुबोधस्वामी, पू. हरिसौरभस्वामी, पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, पू. बोसस्वामी, पू. अनुपमस्वामी, पू. योगीचरणस्वामी तथा पू. अभेदस्वामी ने मिल संपन्न किया। सभी मूर्तियों की प्राण प्रतिष्ठा प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने की और प.पू. प्रेमस्वरूपस्वामीजी की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी ने की। इसी दौरान प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई तथा प.पू. वशीभाई भी पहुँच गए थे। सो, प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद सबने मूर्तियों

का पूजन करके हार अर्पण किया और आरती करके संपूर्ण विधि संपन्न की।

तत्पश्चात् मंदिर के बगल में बने सभा मंडप में सभी एकत्र हुए। गुणातीत स्वरूपों का आगमन होने पर, ढोल बजा कर भाँगड़ा करते हुए मुक्तों ने मूर्ति प्रतिष्ठा का आनंद व्यक्त किया। जयकारा लगा कर सबके अंतर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार किया। प्रतिष्ठा सभा का आरंभ करते हुए सर्वप्रथम प.पू. त्यागवल्लभस्वामीजी ने मंदिर और उसमें गुणातीत स्वरूपों-संतों के करकमलों से प्रतिष्ठित हुई मूर्तियों की महत्ता बताई। तत्पश्चात् गुरुहरि काकाजी महाराज के समय

से सत्यंग से जुड़े पू. गुरुबक्षसिंहजी ने गुरुहरि काकाजी महाराज, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी, प.पू. गुरुजी एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी द्वारा पंजाब में कराए सत्यंग का विवरण दिया और साथ ही किस प्रकार नवनिर्मित मंदिर बना उसके बारे में सबको अवगत करा कर प्रभु को धन्यवाद किया। जिन आचार्य-ब्राह्मणों ने मूर्ति प्रतिष्ठा विधि संपन्न कराई, उन्होंने प.पू. गुरुजी एवं प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर इन सभी को खेस ओढ़ा कर प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी ने सम्मानित किया। वर्षों पहले सन् 1982-82 में गुरुहरि काकाजी महाराज ने अक्षरनिवासी पू. उत्तमचरणस्वामीजी को स्वामिनारायण का संदेश व्यापक बनाने के लिए लुधियाना भेजा था। यहाँ स्थायी रूप से रहते हुए उन्होंने लुधियाना के थरीके रोड पर मंदिर बनाया। उनके द्वारा बनाए संत पू. निर्मलस्वामी एवं पू. प्रभुस्वामी ने इस मंगलकारी अवसर पर गुणातीत स्वरूपों को पुष्प गुच्छ अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी से जुड़े पंजाब के भक्तों ने मिल कर उन्हें व प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके धन्यता अनुभव की। दिल्ली मंदिर से जुड़े मुक्तों ने भी प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी को हार अर्पण किया। इसी प्रकार, पंजाब की बहनों-भाभियों ने मिल कर प.पू. सौजन्य बहन (भक्ति आश्रम), प.पू. आनंदी दीदी, पू. सुज्जेय बहन (भक्ति आश्रम) एवं पू. मीना बहन (पवई) को हार अर्पण करके सभी की ओर से भावना व्यक्त की।

मूर्ति प्रतिष्ठा के परम पवित्र अवसर पर गुणातीत स्वरूपों ने निम्न आशीर्वाद दिया –



## य.पू. भरतभाई (यबई)

बहुत ही आनंद का दिन कि मूर्ति प्रतिष्ठा एवं गुरुजी और प्रेमस्वामी की सुहृदभावना-एकत्व भावना का अद्भुत दर्शन हुआ... इससे बढ़ कर और कुछ नहीं। शास्त्रीजी महाराज के समय में एक जगह पारायण हो रही थी। शास्त्रीजी महाराज को आने में थोड़ा समय था, तो एक हरिभक्त शास्त्रीजी महाराज के आसन पर बैठ कर स्वामिनारायण भगवान और अक्षरपुरुषोत्तम की बात करने लगे। बाद में शास्त्रीजी महाराज के पास ये शिकायत गई। तो, शास्त्रीजी महाराज बोले—अगर कोई मेरे सिर पर बैठ कर भी अक्षरपुरुषोत्तम की बात करेगा वो भी मुझे मान्य है, अगर मेरे आसन पर बैठ कर करता है, तो उसमें क्या हरज़ है? ...कुलदेश में काकाजी ने



नंदाजी को श्री कृष्ण आयुर्वेदिक Pharmacy चलाने के लिए दी थी। कई भक्तों—प्रेमजीभाई, बापू, भोला भैया, महेंद्र वैद्यराज इत्यादि को वहाँ रखा था। Pharmacy बहुत loss में जा रही थी। काकाजी ने उसमें और पैसे भी डाले थे, ताकि किसी तरह चल पड़े। तब काकाजी ने बापू को पत्र लिखा था, जो अब भी संभाल कर रखा हुआ है। उसमें उन्होंने लिखा है कि आप मले अच्छे व्यवहार से इसे एकदम बढ़िया बना कर लाखों रुपये का profit करती बना दो, लेकिन अगर सुहृदभाव नहीं रखोगे तो मैं राजी नहीं होऊँगा। अभी ये loss में है, उसमें भक्तों का बहुत पैसा भी गया। पर यदि आप सुहृदभाव रखोगे और उसमें लाखों रुपये का नुकसान होगा तो वो सही है—मुझे मान्य है। ऐसी बात का आज हमें दर्शन हो रहा है। काकाजी ने 1968 में गुरुजी को दिल्ली भेजा, तब साथ में प्रेमस्वामी भी आये थे। तब से इनकी जुगलबंदी है। तो हम इनके

लિએ ક્યા કહેં? ઉસ સમય કોઈ ભક્ત નહીં થા। કર્ફ ગાર ગુરજી ઓર પ્રેમરવામી 88  
ઉસ સમય કી બાતે બતાતે હેં, તો આશ્ર્ય હોતા હૈ કી ઉસ સમય જब કૃષ નહીં થા, કાકાજી ને  
કેસે ઝન્હેં યાં ઉત્તર ભારત મેં મેજા? આજ જો પૂરા સમાજ દેખતે હેં વો ઉનકા ફળ હૈ। કાકાજી  
કી યે ભાવના થી કી ગુજરાત મેં સ્વામિનારાયણ કા ખૂબ ફૈલાવા હૈ। હર 15 કદમ પર  
સ્વામિનારાયણ કા મંદિર હૈ, મગર ઝસે ગુજરાત સે બાહર સબ જગહ પર લેકર જાના હૈ। 1979  
સે કાકાજી પંજાબ આએ, બાદ મેં સ્વામીજી ભી પથારે। ગુરજી તો બાર-બાર આતે હી હેં।  
પ્રેમરવામીજી ઓર સંત ભી આકર ભક્તોં કો લાભ દેતે હેં। ઇસ ધરતી કો સંતોં ને પાવન કર દિયા,  
ઉસકા ફળ યે મંદિર હૈ। કાકાજી કી મૂર્તિ બનાને કે લિએ ગુરજી કી ભાવના થી। પ્રેમરવામી સે  
પ્રાર્થના કી ઓર વે તુરંત રાજી હો ગા। ગુરજી બોલે – 4 ફુટ કી મૂર્તિ હમારે પાસ નહીં હૈ, હમ  
બનવાયેંગે। પ્રેમરવામી બોલે – આપ તૈયારી કરો, હમ પ્રતિષ્ઠા કરેંગે। ગુરજી કો ધન્યવાદ હૈ હી,  
મગર ઉનકી જો પૂરી team – આશીષ, મિલન ઇત્યાદિ કો ભી ધન્યવાદ કી ખૂબ પરિશ્રમ કરકે  
આબૂ રોડ સે 5 દિન મેં મૂર્તિ તૈયાર કરવા દી યાં લે આએ! સંતોં કે આશીર્વદ સે સંભવ હુआ...  
સુહૃદભાવ કી બાત સબસે બઢિયા હૈ। આજ આંખ મેં આંસૂ યે આતે હેં કી યે ગુણાતીત પુરુષોં એસા  
જીકર હમેં મેત્રીભાવ કા માર્ગ બતાતે હેં। કલ વિશ્વાસ કે સાથ બાત હો રહી થી, તો ઉસને બતાયા  
કી ગુરજી ઇસસે એક કદમ આગે યહ બતાતે હેં કી હમ જહાં રહતે હેં, વહાં તો સુહૃદભાવ રહેગા।  
લોકિન, દૂસરે મંડલ કે ભક્તોં કે સાથ ભી વર્ત પાએં એસા કરના હૈ। યે સંત હમસે બૃહત અપેક્ષા  
રહ્યતે હેં... સુહૃદભાવ સે હમ જી પાયેં, ઉસકા યે ઉત્સવ હૈ। સંકલ્પ કરેં કી હમ 2-5 મુક્તોં- સંતોં





के साथ मेत्रीभाव से जीकर सच्चे अर्थ में इन गुणातीत पुरुषों के भाव को जीवन में ढालें। **व्यक्ति permanent नहीं होता, मगर उसका व्यक्तित्व होता है।** निर्मलरखामी बापा के साथ एक मंदिर गए, तो वहाँ के कोठारी ने बापा को खूब सुनाया कि आप महंत हो, आपको सभी मंदिरों का ध्यान रखना चाहिए। सिर्फ गोड़ल ही सब कुछ नहीं है वगैरह-वगैरह। आधे घंटे तक सब सुनने के बाद बापा ने निर्मलरखामी से पूछा—ये खामीजी ने क्या कहा? निर्मलरखामी ने सोचा कि मैं वो सब दोहराऊँ? पर बापा बोले—वे बहुत बड़े संत हैं, शास्त्रीजी महाराज की बहुत सेवा की है, यूँ गुणग्राहक दृष्टि से निहारा। **सभी संतों से प्रार्थना कि मूर्ति प्रतिष्ठा बाह्य न रहे, बल्कि हम सबके दिल में भी सुहृदभाव की मूर्ति प्रतिष्ठित हो जाए...**

### प.पू. गुरुजी

एक बार हम vacation में बापा के साथ जेतेलपुर मंदिर गए थे, वहाँ आनंदरखामी का चिमटा रखा हुआ है। बापा ने चिमटे पर उँगलियाँ फिरा कर आँखों पर लगाई। आगे डॉक्टररखामी व अन्य बड़े संत होते थे, मैं तो हमेशा पीछे खड़ा रहता था।

बापा ने कहा—मकंद को बुलाओ।

मुझे किसी ने कहा—बापा बुला रहे हैं।

बापा ने उस चिमटे पर हाथ लगा कर मुझसे पूछा—ये देखा?

मैंने कहा—हाँजी, आपने अभी दिखाया।

वे बोले—ये किसका है?

मैंने कहा—मुझे क्या पता, मंदिर में रखा हुआ है।



वे बोले—ये तुम्हारा है, महाराज के समय के तुम आनंदस्वामी हो...

मेरा कहने का मक्कसद ये है कि हम कौन हैं, कहाँ से आए हैं, क्या थे, कहाँ जाना

है? जाने के बारे में तो पक्का है कि बापा के साथ अक्षरथाम में बैठना है। अक्षरथाम में तो आज भी बैठे हुए हैं, अगर इनकी स्मृति में अखंड रह के काम करें, बोलें, चलें। आत्मीयता की सबने बात की, तो उसका मूर्त्स्वरूप काकाजी थे। वे सारे समाज—योगी डिवाइन सोसाइटी, हरिधाम, अनुपम मिशन, गुणातीत ज्योत, सांकरदा—सबके साथ हमेशा के आत्मीय बन कर रहे हैं। इतना ही नहीं, यहाँ के व्यक्तियों को काकाजी के साथ की आत्मीयता का जो दर्शन होता है, वो सारे समाज में *unparallel* है। ऐसी आत्मीयता से हम प्रेमस्वामीजी के पीछे-पीछे, इनके नक्शेकदमों पर चलते रहेंगे, तो हमें भी उसका स्वाद आता रहेगा। ये करने के लिए ये सारे मंदिर या सभाएं होती हैं। प्रेमस्वामीजी के द्वारा ये साकार होता रहेगा। प्रेमस्वामीजी को पंजाब के अधिष्ठाता बना कर स्वामीजी, काकाजी, पप्पाजी ने हमें मार्गदर्शन दिया है।

पंजाब में प्रेमस्वामीजी को *follow* करके जो-जो रहेंगे, वो सभी आपसी संप, सुहृदभाव, एकता सिद्ध कर लेंगे। ये हो जाए, इस बात को हम पकड़ें यही प्रार्थना।

### **प.पू. प्रेमस्वामीजी (हरिधाम)**

मंदिर तो बन गया, मगर कॉलोनी वालों को विनती है कि इसका पूरा लाभ लेना। मैं मानता हूँ कि गुरुजी द्वारा प्रतिष्ठित हुई ये सब मूर्तियाँ जीवंत हैं। यदि भक्तों को इन मूर्तियों से बात करना आ जाएगा, तो बात करेणी।

प्रार्थना करोगे, तो जरूर सुनेंगी। पंजाब के भक्तों सब मध्यम वर्गी हैं, कोई करोड़पति नहीं है। लेकिन इन 10-15 भक्तों की भावना और स्वामीजी की इच्छा में सबने सहयोग दिया। जैसे सबने आत्मीयता की बात की, तो ऐसे मंदिर बनेंगे। क्योंकि महाराज और गुणातीत स्वरूपों का संकल्प है। लेकिन हमारा हृदय, देह, और घर मंदिर बनें। सच्ची योजना यह है। वो किस प्रकार? तो महाराज ने शिक्षापत्री में कहा है कि कैसा भी विद्वान हो, पर यदि जीवन में सत्संग-भक्ति नहीं होगी, तो अधोगति में चला जाएगा। इसके लिए ये मंदिर है। रविवार को सत्संग होगा, तो सब जरूर हाजिर हों। ऐसा लाभ कभी नहीं मिलेगा। ये मंदिर और मूर्तियाँ जीवित हैं, क्योंकि





ग्राण प्रतिष्ठा हुई है। अगर विश्वास रखें तो, वर्ना तो संगेमरमर के पत्थर हैं। मैंने देखा है कि मूर्ति बनाते हुए कारीगर बीड़ी भी पीते हैं। लेकिन, कल यज्ञ हुआ और आज प्रतिष्ठा हो गई, तो दिव्यता के दर्शन होते हैं। बस, देखने वाली नजर-दृष्टि, वशमा चाहिए। **भरोसे से** मानना कि साधु ज्ञूठ नहीं बोलेगा। उसे क्या स्वार्थ है, कुछ नहीं चाहिए। ऐसे संत केवल निव्याजि और निरस्वार्थ प्रेम देते हैं। ये सब उस प्रेम का परिणाम है... किसी भी तरह स्मृतियों में रहें। फलस्वरूप अंत समय में भगवान् स्वामिनारायण और हरिप्रसादस्वामीजी सबको लेने आयेंगे। आप जोग में आ गए गो ही बहुत बड़ी बात है। लेकिन इसका सुख लेना हो, तो सत्संग और भक्ति जरूरी है। पैसे से कोई सुखी नहीं हुआ है... हर घर में ऐसी हालत है कि कोई न कोई प्रश्न है, है, और है। पर, ऐसे सत्युरष उन प्रश्नों का हल हैं। उनके साथ संबंध बनाने से उन प्रश्नों का हल मिलेगा...



बापा ने कभी किसी से नहीं कहा कि तू स्वामिनारायण बन जा। लेकिन एक बात हमेशा बताई कि अगर राम के उपासक हो, तो हनुमानजी जैसे संत की गोद में बैठ जाना। यदि शिव उपासक हो तो गणेशजी जैसे साधु ढूँढ कर उनकी गोद में बैठ जाना। यदि कृष्ण उपासक हो, तो शुकदेवजी जैसे साधु ढूँढ कर उनकी गोद में बैठ जाना। अपने आपको उनमें विलीन-विसर्जित कर देना और **भगवान् स्वामिनारायण** का उपासक हो, तो हमारे शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज,

काकाजी, पण्डितजी, स्वामीजी, साहेब, गुरुजी जैसे गुणातीत संत की गोद में बैठ जाना। केवल उनका आश्रय लेने की बात नहीं है, वहाँ अपने अस्तित्व का विसर्जन कर देना। फिर सुख ही सुख है। वो प्राप्त करने के लिए यह मंदिर बनाया है... तो जीवन में सत्संग और भक्ति ऐसे गुणातीत संत द्वारा प्रगट हैं। इनके साथ संबंध बना लेना है। सभी स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना कि हमें सच्चे संत की पहचान हो, उनकी गोद में हम बैठे रहें और इस मंदिर में आते हुए सबका विचार *positive* बने। जिन्होंने *direct-indirect* किसी भी तरह से सेवा की है, वे सब हर तरह से सुखी रहें, उनके जीवन के केन्द्र में संत रहें...

सभा के अंतिम चरण में भक्त समाज पंक्तिबद्ध होकर प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी को हार एवं स्मृति अर्पण करके भक्ति अदा करने तत्पर था। तब अत्यधिक गर्मी में 80 वर्षीय प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी भी भक्तों की भाव स्वीकारते हुए करीब पौना घंटा खड़े रहे। यह दृश्य देख कर हृदय द्रवित हो उठा कि अब मुक्त समाज के लिए यह समझना खूब अनिवार्य है कि गुणातीत स्वरूप प्रभु को अंखड धार कर जीते हैं, परंतु उन्होंने हमारी ही तरह मानव देह धारण किया है। सो, यह हमारा कर्तव्य है कि इनके स्वारथ्य का खूब ध्यान रखते हुए मानसी पूजन करें, ताकि वे निरामय देह से हमें वर्षों तक आशीष प्रदान करते रहें। सभा के समापन के बाद सभी मंदिर के गर्भ कक्ष में गए, जहाँ मूर्तियों के समक्ष अञ्जकूट लगाया था। गुणातीत स्वरूपों, संतों, हरिभक्तों, बहनों तथा भाभियों ने अञ्जकूट आरती की। तत्पश्चात् सभी ने महाप्रसाद लिया। काफी गर्मी के कारण प.पू. गुरुजी ने जगरांव आकर पू. बलवंतराय के घर आकर भोजन किया और फिर आराम में गए।

सायं 7:00 पू. राजू झाँझीजी के Rachna Resort में सभा का आयोजन था। जगरांव, लुधियाना, सबद्वी कलां, मोगा के हरिभक्त लाभ लेने के लिए आए। शिकागो से प.पू. दिनकर अंकल भी आशीर्वाद देने के लिए Internet के माध्यम से जुड़े। पू. राकेशभाई शाह, पू. ऋषभ नर्सला, पू. अनूप टांगरीजी तथा सेवक पू. विश्वास ने भजन प्रस्तुत किए। तत्पश्चात् गुणातीत स्वरूपों ने निम्न आशीर्वाद देकर सबको निहाल किया —

### **प.पू. भरतभाई (यवई)**

हम रोज़ प्रार्थना करते हैं कि गुणातीतभावना वाला साधु बनाओ। वो साधु कैसे होते हैं, तो उसका उदाहरण महाराज अपने साथ गुणातीतानंदस्वामी के रूप में लाए। ऐसे साधु द्वारा वे हमेशा प्रगट रहेंगे ये वरदान महाराज ने हम सबको दिया। ये उनकी सबसे बड़ी कलणा हैं। **आज उत्तर भारत के सब भक्तों को गुरुजी के रूप में गुणातीत संत मिले हुए हैं।** ऐसे ही साहेब,





प्रेमस्वामी, दिनकरदादा, वशीभाई जैसे सब स्वरूपों का हमें जोग मिला। इससे भी आगे, काकाजी ने पंजाब में आकर सबको ये पहचान कराई और हमें वो बात समझा में आ गई ये हमारा बड़ा भाग्य है, सही अर्थ में धन्य हैं। गुणातीत संत कुछ करते नहीं हैं, लेकिन उनके संबंध में रहने से ही हमारी चेतना में जो जागृति आती है, वे हमारा जो *transformation* कर देते हैं वो अद्भुत बात है... अंतर में यदि जागृति हो जाए, तो वो सबसे बड़ी उनकी करुणा है। काकाजी के पास जब हम आए थे, तो ऐसा कोई भाव नहीं था कि भजन करें या कुछ बनें। बापू ने बस एक बात बोली थी कि काकाजी जब भजन कराएँ, तब उनके पास बैठना। हम 16-17



88

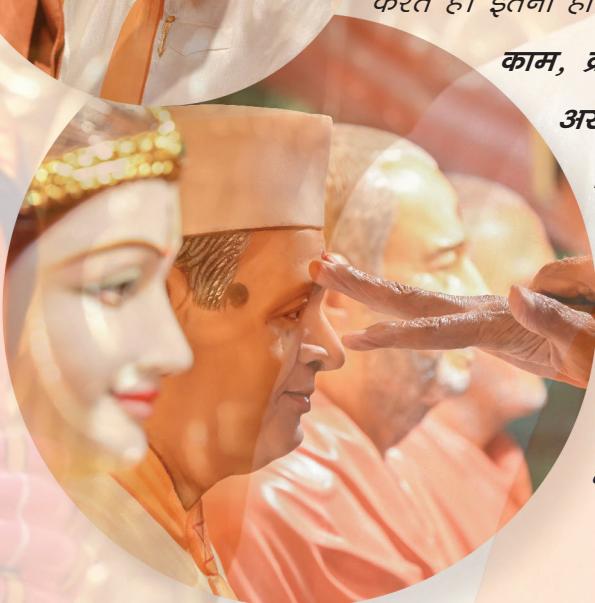
साल के थे, तो धुन में ऐसे ही बैठते थे। काकाजी तो दिन में 8-10 बार unlimited

धुन कराते थे और हम हर बार बैठते। तब काकाजी की हम पर दृष्टि हो गई। हमें तो धुन करने में बोरियत होती थी। जबकि गुरुजी के पास आज सब बहुत ज़ोर ज़ोर से ताली बजा कर, एकदम जागृति से बढ़िया धुन करते हैं। यही हमारा साधन है, और कोई साधन प्रभु को पहुँचता नहीं है। हमारी जो सुखिं दे राजी हो जाते हैं। बड़े संत की जब हम पर दृष्टि पड़ती है, तो हमारा पूरा transformation हो जाता है। उनकी दृष्टि सब काम करती है...

इतने सारे भक्त गुरुजी के सान्निध्य में आकर बैठते हैं, तो हमें आनंद होता है कि इनको पता चल गया है कि ऐसे संत के सान्निध्य में बैठने से काम हो जाता है, घेतना जागृत हो जाती है... बड़े संत के पास क्या माँगना, वो भी दे सिखाते हैं... हम इस संसार के व्यवहार में बहुत धुसे हुए हैं। मगर संत चाहते हैं कि हम भगवान के साथ ऐसे जुड़ जाएँ कि और कुछ करना न पड़े। सब बंधन में से मुक्त होकर उनके शरण में हमेशा रहें। इसका मतलब ये नहीं कि हम व्यवहार न करें। संसार-जगत में रह कर सब कार्य करते हुए काकाजी के कहे अनुसार हर रोज़ सुबह-शाम दो बार भजन, रात को प्रायश्चित्तरूप प्रार्थना, सत्संग और एक सत्कर्म करें। हमें जो अच्छा आता हो, उससे किसी ज़रूरतमंद की निस्वार्थभाव और प्रभु को राजी करने की भावना से जो सेवा-सत्कर्म करें, वो प्रभु को पहुँचता है। ऐसे four point programme काकाजी ने हमें दिया है। इससे हमारा जीवन बदल जाता है, गुणातीतभाव प्राप्त करते हैं। इतना ही करना है, बाकी तो वे सब सहजता से करा देंगे...

**काम, क्रोध, लोभ, हठ, मान, ईर्ष्या का भाव निकालना**

असंभव है, लेकिन ऐसे संत के संबंध से ये सब भाव निकल जाते हैं, ऐसा उनका प्रताप है। आज काकाजी की मूर्ति पंजाब में सर्वप्रथम विराजमान हुई, वो हमारे लिए बहुत बड़ा अवसर है। काकाजी के चंदन अर्चा के प्रसंग को 75 साल होने जा रहे हैं! इस तरह ये चीज़ भी सालों तक याद करते रहेंगे। गुरुजी ने जिस तरह अपनी झँच्छा प्रकट की, साहेब ने कैसे



88

योगदान दिया कि होनी ही चाहिए और प्रेमस्वरूपस्वामी ने सहज स्वीकार किया, यही सुहृदभाव का दर्शन है... संतों ने प्राण प्रतिष्ठा की है। अब कोई भी वहाँ जाकर इन मूर्तियों-स्वरूपों से बात कर सकता है, ऐसी जीवंत हैं। इस चीज़ को हम आगे सबको कह कर बढ़ाते रहेंगे...

आत्मीयता से गुरुजी की ओर दृष्टि रख कर, उनके वचन से हम जियें। हमारा काम हो ही गया है, अब कुछ करना बाकी नहीं। वे राजी हों ये भावना हम में हमेशा, दिन-रात बनी रहे यही प्रार्थना।

### प.पू. दिनकरभाई (by internet from chicago)

स्वामीजी के समय से लुधियाना में मंदिर बनने का कई सालों से programme था। लेकिन, मूर्ति प्रतिष्ठा के 5 दिन पहले गुरुजी ने काकाजी के संबंध से, उनकी मूर्ति प्रतिष्ठा करने का जो suggestion दिया-प्रार्थना की, वो हमारे सत्संग की प्रणालिका है। इसे कहते हैं—‘फेरफार (बदलाव) नारायण की जय...’

हमारे सत्संग में काकाजी ने आत्मीयता के बीज बोए हैं। काकाजी ने खुद ऐसा जीकर हमें दिखाया है। ये हमारी बहुत बड़ी पूँजी है। हर एक में ऐसा दिव्यभाव रखना। हर एक के अच्छे स्वभाव-अच्छे गुण को ही ग्रहण करना। वास्तव में समस्याएँ तो हर घर में होती ही हैं। तो आत्मीयता कहाँ से आए? पर, सब दुखों की एक दवा धुन-प्रार्थना है। आज तक जो भी चमत्कार हुए हैं; अभी हो रहे हैं और भविष्य में होंगे, वो सब धुन से होते हैं। गुरुजी रात को 2 बजे धुन करते थे, वो हम सब में बैठ गई। वैसे ही काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब, बा, भरतभाई, वशीभाई की धुन भीतर में बैठ गई है। हमारे वशीभाई तो



धुन से महाराज को प्रगट कर देते हैं। तो, धुन का पूरा विश्वास करके हम आसरा लें। जो चीज़ दुनियाभर की दवाएँ नहीं करेंगी, वो धुन करेगी। गुरुजी के चरणों में प्रार्थना कि ऐसा बुद्धियोग दें कि हमारे हृदय में यह बात बैठें। हम काकाजी की पहचान बनें, उनका महिमागान कर पायें और प्रगट व प्रत्यक्ष स्वरूपों के संबंध से उन्हें राजी कर पाएं।

## प.पू. गुरुजी

आशीर्वाद की जब भी बात आती है, तो काकाजी की एक बात याद आती है कि शास्त्रीजी महाराज-बापा ने आशीर्वाद तो खूब दिए, मगर हम घोल कर पी गए। कहने का मक्कसद यह है—वो आशीर्वाद को आत्मसात नहीं किया। आत्मसात के लिए उन्होंने रस्ता भी बताया कि सब इकट्ठे हो कर रहो। भले ही एक टोकरी में अलग-अलग आम भरे हों, लेकिन वो इकट्ठे नहीं कहे जाएँ। जबकि एक पेड़ पर अलग-अलग डाली पर दूर-दूर आम नज़र आएँ, लेकिन वो एक जैसी मिरास, एक जैसे स्वाद और एक जैसी quality के होते हैं। इस तरह ऐसी एकता से सबके साथ रहें। काकाजी तो कहते थे—विरोध प्रकृति वालों के साथ भी एकता बनाये रखें। कोई हमारा आत्मीय बने या न बने, हम उसके साथ आत्मीयता रखें और स्वरूप को वश कर लें। ताकि स्वरूप हमेशा हमें promote करते रहे कि कैसी एकता से रहना है, कैसा जीवन जीना है। ताकि हम किसी को hurt न करें, न ही कोई हमसे hurt हो। इसके बजाय हर एक को प्रेरणा मिले कि समूह में रह कर जीवन जीना है, तो इस तरह जीना है। जैसे काकाजी, कांतिकाका के





साथ जिए। स्वरूप के संबंध के बिना ऐसा जिया नहीं जा सकता। पुरानों ने कांतिकाका और काकाजी की ये बात सुनी होगी कि दोनों के सिर इकट्ठे करके शाश्रीजी महाराज ने आशीर्वाद दिए थे कि दोनों भाई-भाई बन कर रहना, ब्रह्मांड डोलाओगे। ब्रह्मांड तो क्या डोलाया कि इनकी एकता से सारा सत्संग हिल गया। सबको एक प्रेरणा मिली कि सत्संग में भ्रातुभाव से, एक-दूसरे के पूरक बन कर, एक-दूसरे के सहायक बन कर कैसे जीना है...

पप्पाजी जब अफ्रीका में नौकरी करके पैसे कमाते थे, तब उन्होंने काकाजी को पढ़ने के लिए कहा, तो काकाजी पढ़ाई करने विदेश भी गए, फिर व्यापार करके पैसा भी कमाया। लेकिन, काकाजी को हुए साक्षात्कार के बाद जब पप्पाजी ने देखा कि उनके जीवन का केन्द्र अब परिवार नहीं रहा, बल्कि सोनाबा-कांतिकाका इत्यादि उनकी priority पर आ गए। फिर पप्पाजी भारत आए और उन्हें ऐसा हुआ कि काकाजी से priority लेनी है, तो ये सत्संग यानी सत्युरुष-योगीजी महाराज के प्रति हम भी submissive हों। बापा से उन्होंने बात भी करी। तब बापा ने पप्पाजी के पेट पर हाथ फिराते हुए कहा था—इसमें भगवान् भरे हैं, यानी वे सब पूर्व के मुक्त हैं। सत्युरुष से आशीर्वाद जल्द माँगने चाहिए, लेकिन अगर पप्पाजी नहीं भी माँगते, तो भी काकाजी के कारण, उनके संग-साथ से इस धरती पर अक्षरधाम छड़ा कर ही दिया। जिस राह पर वे चले उसी राह पर भक्तों के साथ, साथी-मित्रों के साथ आगे बढ़े। जैसे भरतभाई और वशीभाई का कोई blood relation नहीं है, लेकिन दोनों भाई-भाई की तरह और राजूभाई-हरखचंद वगैरह को भी साथ में रख कर—उनके सहकार से एक spiritual nucleus जो तैयार किया है, उसके कारण आज पवई में सारा सत्संग महक उठा है। चंद्रभान शर्मा की कुर्बानी इनके द्वारा सफल हुई। तो, हमें भी इसी पदचिह्नों पर चल कर सत्संग को बरकरार



रखना है इतना ही नहीं, बल्कि सत्यसंग को बढ़ाना-फेलाना है और हमें कोई अपेक्षा नहीं रखनी कि इसके पीछे हमारा नाम लगा रहे। नाम तो काकाजी-पप्पाजी का अमर था और हो गया। उन्हें आगे रख कर, उनके ध्वज को लेकर जो गुणातीत समाज develop हुआ है, उसका प्रचार और प्रसार ऐसा करें कि देख कर सबको ऐसा हो कि हमें इस समाज में शामिल हो जाना है। ये गुणातीत समाज हमारा है और हम इसके हैं। ऐसा अंग-अंगी का संबंध बने, यही आज के दिन जगरांव में खास प्रार्थना और काकाजी-पप्पाजी से आशीर्वाद की याचना। ये आशीर्वाद उन्होंने बरसाये हैं, उसमें हम स्नान करते रहें और स्वामिनारायण का संदेश हर जगह धबकता रहे—यही प्रार्थना।

### प.पू. वशीभाई (पवर्ड)

पंजाब का इतिहास जगराओं से शुरू हुआ, जहाँ काकाजी के चरणकमल पड़े... आज लुधियाना में गुरुजी ने इतिहास रच दिया... चार-पाँच दिन में मूर्ति तैयार होकर प्रतिष्ठित हो जाना एक चमत्कार है। भगवान किस प्रकार प्रगट हैं, उसका दर्शन हुआ कि आबू से travel करके लुधियाना मंदिर जब काकाजी की मूर्ति लेकर पहुँचें, ठीक तभी मूर्तियों का हवन शुरू हुआ था... गुरुजी के भजन की पंक्ति है—चाहो तुम और हो सके ना, ऐसी क्या कोई बात हो। वे जो चाहते हैं, वो होता ही है। काकाजी की मूर्ति बहुत हँसमुख, smiling face वाली है। गुरुजी बोले कि दिल्ली मंदिर की मूर्ति से भी ज्यादा बढ़िया है। एकदम बोलती मूर्ति है। यहाँ किसी को कोई





88

problem आए, तो इस मूर्ति के पास जाकर कहु आना, तुम्हारा काम हो जाएगा। करोड़ों धन्यवाद गुरुजी को कि काकाजी को अमर कर दिया...

1979 में काकाजी पहली बार यहाँ आए। वे जब चलते थे, तो उनके पीछे सब उनकी चरणधूलि समेटते थे। काकाजी ने पूरी जिंदगी अपना ऐश्वर्य छुपा कर ही रखा। सहजानंद महाराज का प्रकाशमय स्वरूप भी देखा, लेकिन काकाजी एकदम साधारण बन कर इन छोटे भक्तों के साथ ठंड में प्रभात फेरी करते। दूसरा इतिहास यह है कि आज अमावस्या के दिन पूरी दुनिया डरी हुई है। Social media में आ रहा है कि आज ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा तो ये उपाय करना-वो करना। ऐसे दिन स्वामिनारायण संप्रदाय के एक मंदिर में मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हुईं, ये भी एक इतिहास है। काकाजी ने अपने एक आशीर्वाद में कहा है कि हरिप्रसादस्वामीजी के पीछे तो लाखों लोग घूमते ही हैं, उनके सेवकों के पीछे भी लाखों आदमी घूमेंगे। आज उनके आशीर्वाद का हम दर्शन करते हैं।

मुझे जान के बहुत आनंद हुआ कि काकाजी के बड़े कृपापात्र ज्ञानी साहब के बेटे राजू का ये *banquet hall* है। अब ये *hall* भी मंदिर है। ऐसा लगता है कि किसी बड़े शहर में नहीं, बल्कि अक्षरधाम में बैठ के सभा कर रहे हैं। गुरुजी किसी के साथ थोड़ा भी *relation* बनाते हैं, वो कालातीत हो जाता है। चाहे झिलमिल ढाबे वाला हो या कोई और हो। सिर्फ कॉफी पीने पर भी संबंध हो गया न, तो कालातीत। काकाजी के धाम में जाने के बाद 1986 से अब तक गुरुजी ने जो तपस्या की, तो वो चालीस सालों का ये परिणाम है...

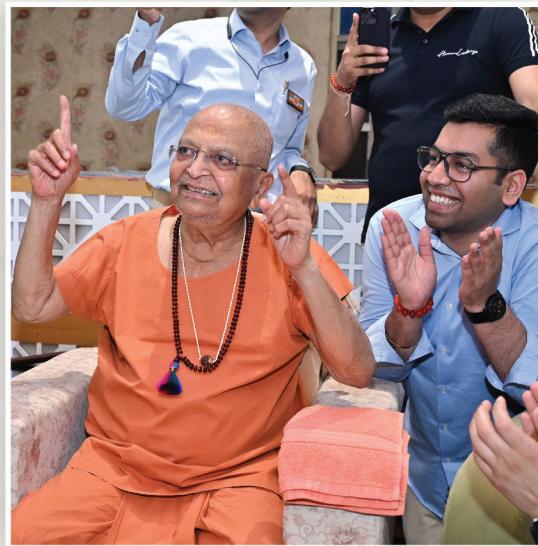
पंजाब वाले मुक्तों का कमाल है कि दिल्ली मंदिर में एक उत्सव के लिए सुबह की बस से आते हैं और उत्सव के बाद रात को या अगले दिन वापिस जाते हैं। भगवान छोटे से छोटे भक्त की भी समर्पण-भवित्व कार करते हैं। जैसे गुरुजी ने कहा कि स्वामिनारायण भगवान पृथ्वी पर आए, गुणातीतानंदस्वामी को लाए। करोड़ों धन्यवाद शास्रीजी महाराज को कि अक्षरपुरुषोत्तम



के रूप में आज पूरी दुनिया को उपासना प्रदान की। साथ ही अरबों धन्यवाद काकाजी को कि जिन्होंने योगीजी महाराज की पहचान करवाई। आज गुरुजी का कहने का मतलब ये था कि हम काकाजी-पाप्पाजी की पहचान सबको कराएँ, उनकी बातें करें। दुनिया में यह सबसे बड़ी परामर्शित है। अभी गुरुजी के जन्मदिन पर भी परामर्शित की theme थी। काकाजी कहते थे—**दुनिया नहीं मानेगी, मानव नहीं मानेगा, (राजू भट्ट) दुम मानते हो?** वो बात करना, आज prove हो गई। आज गुरुजी छोटे बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक को काकाजी का रंग लगाते हैं... गुरुजी ने कुटुंबभाव की बात खाली कही नहीं, सब में उतारी है। आज सब कुटुंब ऐसे जीते हैं...

हे गुरुजी! आपकी, दिनकरभाई तथा भरतभाई की मूर्ति हमारे हृदय में बैठी रहे और काकाजी ने जो कार्य करने जिस-जिस को निमित्त बनाया है, तो कोई भी यहाँ-वहाँ झाँके बिना वो करने लगें। सबको सर्वोपरि प्राप्ति हुई है। **महंतस्वामी** इसे अलग ढंग से कहते हैं कि प्राप्ति को प्रतीति में बदलो... इसी जीवन में जीतेजी अदरथाम का सुख पाकर परम एकांतिक बन कर वो सुख पाए और सबको बाँटे ऐसी प्रार्थना। जैसे भक्तचिंतामणि है, ऐसे पंजाब चिंतामणि समान है। यहाँ के भक्तों को धन्यवाद कि करीब 165 भक्तों की इतनी सुंदर व्यवस्था की... हर प्रकार की सुविधा के लिए पंजाब मंडल को खूब-खूब धन्यवाद और सबने मिलजुल कर सुहृदभाव का डंका बजाया...

जगरांव के पू. दलजीत सिंहजी ने सभी की ओर से गुणातीत स्वरूपों का धन्यवाद करते हुए कहा— आज से





एक महीने पहले गुरुजी आए थे। तब उन्होंने कहा था कि मैं 2 साल बाद आया करूँगा। देखो, महाराज की कृपा कि एक महीने बाद फिर गुरुजी पंजाब में हमें दर्शन देने आ गए। आपका कोटि कोटि धन्यवाद। गुरुजी इतनी गर्मी में जगराओं आए-सभा की, इसके लिए पंजाब मंडल आपका बहुत-बहुत आभारी है। दूसरा, बल्ले-बल्ले कि गुरुजी की कृपा से पंजाब में आज काकाजी की मूर्ति स्थापित हो गई, जो कि पंजाबवासियों के लिए बहुत ज़रूरी थी। यहाँ काकाजी हैं, वहाँ (दिल्ली) गुरुजी हैं। आपका बहुत बहुत धन्यवाद, आप जैसा कोई नहीं है। दिल्ली के पू. दिनेशभाई दोषी, मुंबई के पू. अनिलभाई माणेक तथा जगरांव के पू. अनिल कत्यालजी के जन्मदिन निमित्त श्री ठाकुरजी को केक अर्पण करके सभी ने भांगड़ा किया और फिर प्रसाद लेकर अपने गंतव्य स्थान पर गए।

**30 मार्च** की सुबह Rachna Resort में Heavy नाश्ता करके और रात्ते के लिए Sandwiches लेकर, जगरांव के भक्तों द्वारा की अद्भुत सेवा को नमन करके अधिकांश भक्त बस एवं गाड़ियों से दिल्ली के लिए रवाना हुए। प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं उनके साथ के मुक्त जगरांव में पू. अनिल वाधवाजी की नई दुकान पर भजन-प्रार्थना करने गए। यहाँ से मुल्लापुर में पू. चेतन भार्गवजी के plot पर पुष्प छाँट कर धुन करने के बाद, लुधियाना मंदिर में प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी से मिलने गए। गुरुहरि काकाजी महाराज के Happiest Day 6 अप्रैल-चंदन अर्चा प्रसंग के अमृतपर्व तथा नूतन मंदिर के निमित्त दिल्ली-पवई एवं शिकागो के भक्त समाज की ओर से उन्हें भेंट देकर दिल्ली के लिए रवाना हुए। अंबाला में एक जगह रुक कर दोपहर का भोजन किया। रात्रि 8:30 बजे के करीब दिल्ली मंदिर पहुँचे। इस प्रकार, लुधियाना मंदिर की ऐतिहासिक मूर्ति प्रतिष्ठा की यात्रा पूर्ण हुई।

**6 अंगैल सांख्य – रामनवमी - भगवान् स्वामिनारायण के ग्राकट्ट्य दिन एवं चंदन अर्चा की 75वीं बर्षगांठ निमित्त सभा...**





7 अप्रैल सायं  
प.पू. गुरुजी के पार्वदी  
तथा  
पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी  
के  
भागवती दीक्षा दिन  
निमित्त सभा...



## रामनौमी, 'चंदन अर्चा' की 75वीं वर्षगाँठ छुवं य.पू. गुरुजी की पार्षदी दीक्षा तिथि

इस वर्ष **6 अप्रैल 2025**, रविवार को – चैत्र शुक्ल नवमी को भारत वर्ष के इष्ट भगवान श्री राम के अवतरण दिन के साथ - साथ भगवान स्वामिनारायण के प्रादुर्भाव की 244वीं जयंती थी। ऐसे ईश्वरीय तत्त्वों ने संबंध में आने वाले अनेक जीवों का कल्याण करने और अपने जीवन प्रसंगों द्वारा कई पहलूओं से सबको प्रेरित करने हेतु मनुष्य देह धारण किया।

- \* भगवान राम और शबरी की कथा प्रभु की अपार 'महिमा' का उल्लेख करती है। भगवान राम ने सामाजिक सीमाओं से परे जाकर शबरी को जो अपना संबंध दिया, उससे उनकी दिव्यता का दर्शन हुआ।
- \* भगवान राम का सुग्रीव के साथ का संबंध 'सहयोग' का प्रतीक है। जो दर्शाता है कि उद्देश्य में यदि एकता होगी, तो विजय संभव होती है।
- \* भगवान राम को 14 वर्ष का वनवास देने के उपरांत भी उन्होंने माता कैकयी के प्रति कोई अलंकृत नहीं दर्शाई और उससे माता कैकयी को जो पश्चाताप हुआ, उससे 'क्षमा' व 'हृदय परिवर्तन' की शक्ति का दर्शन होता है।

इसी प्रकार, कलियुग में गुरु रामानंदस्वामीजी जिस समय तेजस्वी युवा ब्रह्मचारी 'नीलंकठ वर्ण' यानि भगवान स्वामिनारायण को धर्मधुरा सौंपकर अंतर्धान हुए, उस समय देश में राजा एवं प्रजा भोगविलास, अनीति, अनाचार, व्यसन एवं झूठे वहेमों के जाल में फँसे थे। धर्म के नाम से ठोंग एवं भवित की आड़ में भ्रष्टाचार बढ़ते जा रहे थे।

- \* भगवान स्वामिनारायण ने ठौर-ठौर घूमकर जनता का ध्यान कर्तव्य की ओर आकर्षित करके समाज को उन दूषणों से बचाया। फलस्वरूप लाखों नर-नारी हिन्दू, मुस्लिम, हरिजन उनके आश्रित बने।
- \* उन्होंने क्रूर एवं पापी मनुष्यों का भी हृदय परिवर्तन करके उन्हें आदर्श भक्त बनाया। सामान्य जन की कक्षा पर स्वयं जीकर, उनके साथ संबंध स्थापित करके उन्हें सत्कर्म करने - सद्गुण प्राप्त करने के मार्ग पर अग्रसर किया।
- \* तीस वर्ष के अन्त्य समय में उन्होंने सदियों का कार्य किया। गुजरात की प्रजा में अभूतपूर्व एवं अद्भूत परिवर्तन ला दिया। प्रासंगिक समारोहों, अहिंसामय यज्ञों, देवमंदिरों के निर्माण,



उत्कृष्ट साहित्य के सर्जन द्वारा उन्होंने मानव समाज का नव निर्माण करके, स्थिरता एवं शांति की स्थापना द्वारा सनातन हिन्दू धर्म का पुनरुद्घार किया।

इस बार रामनौमी के मंगल अवसर पर एक और शुभ दिन था। गुरुहरि काकाजी महाराज के चार Happiest Days में से एक ‘चंदन अर्चा’ के अविस्मरणीय प्रसंग की 75वीं वर्षगाँठ भी आज ही थी। अतः ये पर्व मनाने के लिए इस दिन रात्रि 9:00 बजे सभी कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। प.पू. गुरुजी के आसन की पृष्ठभूमि पर काल्पनिक चित्र लगाया था। जिसमें एक सरोवर के किनारे पर श्रीजी महाराज हाथ में कमल का पुष्प लिए खड़े थे और एक हंस उनके दर्शन कर रहा था। प.पू. गुरुजी के आसन की दूसरी ओर अयोध्या में राम जन्मभूमि के मंदिर में प्रतिष्ठित श्री रामलला की छोटी मूर्ति सहित श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति को झूले में विराजमान किया था।

पू. राकेशभाई शाह, पू. पंकज रियाज़, पू. ऋषभ नरलला, सेवक पू. विश्वास तथा पू. पुण्यम् ने श्रीजी महाराज के जीवन-कार्य को दर्शाते भजन की प्रस्तुति की। तत्पश्चात् ‘भगवान् श्री स्वामिनारायण एक दिव्य जीवन गाथा’ पुस्तक के पृष्ठ 348 के ‘श्रीहरि की माला का मोती’ तथा पृष्ठ 354 के ‘भक्त के द्वोह का फल’ प्रसंगों का पू. राकेशभाई शाह ने पठन किया और प.पू. गुरुजी ने उसका निरूपण करते हुए निम्न आशीर्वाद दिया –

...भगवान् के अनन्य भक्तों का जो आत्मीय होता है, उसका अनन्य भक्त द्वोह नहीं करता, मानो उस पर वार नहीं करता। यदि अपना लड़का कितनी ही शरारत करके आया हो, तो, माँ दिखावे के लिए सबके सामने उसे डाँटेगी, लेकिन सच्चाई से उस पर हाथ नहीं उठाएगी। इस तरह हमें भगवान् के भक्तों के प्रति ऐसा अपनापन रखना है कि वो मेरे प्रभु के हैं। यूँ इनके प्रति आदरभाव रखते हुए इनसे आत्मीयता बरकरार रखें, इनका द्वोह न करें। इन्हें हानि न पहुँचायें। ये प्रभु के साथ की अपनी सच्ची आत्मीयता बोली जाए। भक्तों के साथ की आत्मीयता के अंतर्गत प्रभु के साथ की आत्मीयता आ जाती है। हम सभी ये बरकरार रखें, यही आज के दिन काकाजी से आशीष बरसाने की याचना।

आज के दिन प.पू. गुरुजी की मूर्ति की बाई ओर चंदन अर्चा के प्रसंग को भी PVC BOARD में खूब सुंदरता से उकेर कर प्रदर्शित किया था। इसके द्वारा एहसास हो रहा था कि 6 अप्रैल 1950 को किस प्रकार गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने गुरुहरि काकाजी महाराज का आलिंगन



88

किया होगा और गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. कांतिकाका तथा पू. गुलजारीलाल

नंदाजी इस दिव्य दृश्य को देख कर कितने आनंदविभोर हुए।

**पू. राकेशभाई शाह** ने इस ऐतिहासिक प्रसंग की 75वीं वर्षगाँठ निमित्त संक्षिप्त वर्णन किया—  
**गुरुहरि काकाजी महाराज** ने 6 अप्रैल 1950 को **प.पू. कांतिकाका** तथा **पू. छगनभाई** के साथ मिल कर गुरुआज्ञा का पालन करते हुए, अपना सर्वर्ख अर्पण करके गढ़ा के मंदिर निर्माण हेतु 51,000 रुपये की जो सेवा की, उससे गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्होंने जब कुछ भी मांगने के लिए कहा, तब इन्होंने उनसे प्रार्थना की कि जैसे उन्होंने अनादि महामुक्त भगतजी महाराज के साथ चंदन-अर्चा की थी, वैसी अर्चा करने का सौभाग्य गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज प्रदान करें। इन सबके गहन प्रेम व समर्पण से राजी होकर गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने अनुमति देकर अनेरी स्मृति दी।

तत्पश्चात् पू. राकेशभाई ने शास्त्रीजी महाराज के जीवन चरित्र में से पूरा प्रसंग पढ़ा, तो उसका निरूपण करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने निम्न आशीर्दान दिया—

छगनभाई ने प्रार्थना की कि आप यदि हमारी सेवा से सच में प्रसन्न हुए हैं, तो चंदन का लेप लगवा कर जैसे भगतजी महाराज आपके गले लगे थे, वैसे आप चंदन का लेप लगवा कर हमारे गले लगें। स्वामी बोले—मेरी कहाँ ‘न’ है।

तब सोनाबा, मणिबा, ललिता काकी, ज्योति बहन, तारा बहन सबने मिल कर तीन पवाली भर कर चंदन घिस कर तैयार किया। दोपहर को 3:30 बजे श्री गुलजारीलाल नंदाजी के बंगले गए। तब शास्त्रीजी महाराज ने निद्रा गहण की हुई थी। तभी जागने के बाद सेवक ने उन्हें मौसमी का रस पिलाया। फिर सबसे पहले काकाजी ने स्वामी के चरणारविंद से शुरुआत करके मरतक तक चंदन का लेप लगाया और फिर कपड़े समेत शास्त्रीजी महाराज ने दाढ़ुभाई का आतिंगन किया। इसके बाद कांतिकाका और छगनभाई के भी गले लगे। फिर जब स्वामी से उनके चरणारविंद देने के कहा, तो वे बोले—**चरणारविंद तो एक महाराज के होते हैं।** यूँ कह कर उन्होंने नहीं दिए। लोकिन हाथ पर रोली लगा कर उसके थापे दिए... ये बात सब संत-भक्त ध्यान रखें कि प्रेम के आवेग में आकर कोई भक्त चरणारविंद की छाप मांगे, तो नहीं देना। वो सिर्फ़ महाराज के ही होते हैं। ज्यादा से ज्यादा छाती पर चंदन का हाथ लगा सकते हैं। अंत में, कोने में खड़े योगीजी



महाराज को बुला कर शाल्कीजी महाराज ने गले लगाया, तब सब भक्त मायूस हो गए कि अरे, हम योगी बापा को भूल ही गए और शर्मिंदा हो गए...

हम सबको भी काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी, साहेब ने कई बार आशीर्वाद दिए होंगे, लेकिन हम क्या समझते हैं कि बड़े संत ऐसे बोलते हैं। पर नहीं में ब्रह्मरूप हो गया ये मानना और अब ब्रह्मस्वरूप होकर अनंत का कल्याण मेरे द्वारा होगा, ये दृढ़ता होनी बड़ी बात है...

**श्रीहरि जयंती निमित्त भगवान् स्वामिनारायण को पुष्प हार अर्पण किया था।** तो, प.पू. गुरुजी से आशीष प्राप्त करने के बाद, पू. राकेशभाई शाह ने सबकी ओर से प्रार्थना की—

भगवान् स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों को वरदान दिया कि वे अपने अखंड धारक गुणातीत संतों के द्वारा पृथ्वी पर प्रगट रहेंगे। ऐसे संतों के द्वारा श्रीजी महाराज का दर्शन होता है, उनकी वाणी द्वारा श्रीजी महाराज बोलते हैं, हम सबके लिए प.पू. गुरुजी श्रीजी महाराज का प्रत्यक्ष स्वरूप-श्रीजी महाराज को अखंड धारे हुए हैं, तो पू. मैत्रीशीलस्वामी जिनका आज भागवती दीक्षा दिन है, वे श्रीजी महाराज की प्रसादी का हार प.पू. गुरुजी को अर्पण करें...

पू. राकेशभाई शाह का अंतिम वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था कि **भक्ति के भावावेग में शिष्यों द्वारा अनजाने में होती त्रुटि को तनिक भी चलने न देकर,** अतिशय जाग्रत साधक की अदा से प.पू. गुरुजी ने अपने लिए दिए गए संबोधन को सही करते हुए फट् कहा—

### श्रीजी महाराज के प्रत्यक्ष सेवक...

फिर पू. मैत्रीशीलस्वामी द्वारा प.पू. गुरुजी को हार अर्पण के उपरांत रात्रि 10:10 बजे श्री ठाकुरजी की आरती संतों-सेवकों ने संपन्न की और फिर ‘धनिया पंजीरी’ सहित फलों के विशिष्ट प्रसाद को लेकर सबने प्रस्थान किया।

अगले दिन 7 अप्रैल 2025, सोमवार को मासिक भजन संध्या इस बार विशिष्ट थी, क्योंकि वैत्र शुक्ल 10 के अनुसार प.पू. गुरुजी की 64वीं पार्षदी दीक्षा तिथि थी। साथ ही, 13 अप्रैल -बैसाखी – दिल्ली मंदिर का शिलान्वास दिन तथा पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी को भागवती दीक्षा लिए 40 वर्ष पूर्ण हो रहे थे। सो, ऐसे दो मंगलमय अवसर पर आशीष प्राप्त करने हेतु भक्तगण सायं 7:00 बजे कल्पवृक्ष हॉल में एकत्रित हुए। कार्यक्रम के आरंभ में मुक्तों द्वारा भावपूर्ण हृदय से गाए भजनों से वातावरण भक्ति-रस में डूब गया। प.पू. गुरुजी के पार्षदी दीक्षा

दिन निमित्त पू. राकेशभाई शाह ने नव रचित भजन—‘सबके चित्त में बसी  
मनोहारी छबि...’ प्रस्तुत करके भक्ति अदा की।

इसके उपरांत पू. भीखूभाई झोंसा तथा पू. ओ.पी. अग्रवालजी ने माहात्म्यगान करके भक्ति  
अदा की और प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दिया—

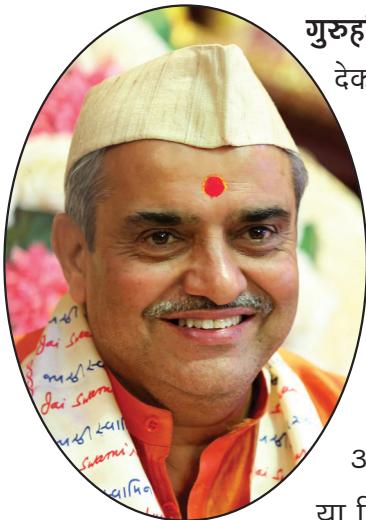
मुझे आशीर्वाद देने को कहा जाता है, मैं क्या कहता हूँ कि आशीर्वाद तो बापा ने दे ही दिये हैं।  
इन्होंने मुझे कहा था कि मानतस्वामी (महंतस्वामी) के पास से शेत कपड़े ले लेना। बापा ने  
मुझे आशीर्वाद तो महंतस्वामीजी द्वारा दे ही दिये हैं और तब जाकर आज मैं और आप आमने-  
सामने बैठे हैं। तो नया कोई आशीर्वाद देना नहीं है। लेकिन जैसे बापा ने हमारे अंदर ये  
महिमा-माहात्म्य भरा कि सब मुक्तों को दिव्य और सत्य मानो। दिव्य तो हम मानते हैं, मान  
भी पायेंगे, पर सत्य मानना बड़ा मुश्किल होता है। क्योंकि वहाँ हमारा सत्य बीच में आड़े आ  
जाता है। हमारी भी कई *convictions*-दृढ़ताएँ होती हैं, वो छूटनी बड़ी मुश्किल होती हैं। आज  
के दिन यही प्रार्थना करनी है कि बापा हमारी जो *convictions*-दृढ़ताएँ हैं, वो टालने के लिए  
आप करुणा करें। मैं कृपा नहीं, करुणा कह रहा हूँ। कृपा के लिये कुछ *qualities* होती भी हैं।  
जैसे माँ अपने बच्चे के ऊपर करुणा बरसाती है। उसे सुधारने के लिये मारती भी है, पर वो  
उसकी करुणा है। ऐसी करुणा में हम सभी हंसते-खेलते, आनंद करते हुए सत्संग में चलते रहें  
और ये सत्संगरुपी गंगोत्री के अंदर स्नान करते रहें, यही आज के दिन प्रार्थना है।

प.पू. गुरुजी से आशीष प्राप्ति के पश्चात् पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी ने प.पू. गुरुजी की पार्षद  
दीक्षा तिथि का संकेत देते हुए ‘शेत हार’ उन्हें अर्पण करके वंदना की। पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी  
द्वारा 40 वर्ष से की जा रही निरपेक्ष भक्ति से प्रसन्न होकर, प.पू. गुरुजी ने उन्हें अपनी प्रसादी  
का हार अर्पण करके गुरुहरि योगीजी महाराज की स्मृति कराते हुए जोर से पीठ थपथपाई और  
भावुक हृदय से कहा—

...विनम्रता नहीं है, हक्कीकत कहता हूँ कि अकेले ये मंदिर का *load* खींचना, वो मेरे लिये  
असंभव-नामुमकिन है। पर, ये स्वामी हैं वो सारा खींचते रहते हैं और मेरा नाम आता रहता  
है...

अंत में पू. उज्ज्वल अग्रवाल ने श्रीजी महाराज की वंदना प्रस्तुत करके सभा का समापन किया  
और सभी ने प्रसाद लिया।

## दिल्ली सत्संग समाज की नींब के भक्त पू. बच्छराज वर्माजी को अलविदा...



गुरुहरि काकाजी महाराज ने वर्षों पहले प.पू. गुरुजी को निम्न आशीर्वाद देकर दिल्ली भेजा था—

**तुम्हें निष्ठा वाले मुक्त मिल जाएँगे...**

गुरुहरि काकाजी महाराज के वचन से प.पू. गुरुजी ने सत्संग के प्रचार-प्रसार हेतु कभी भी कोई commercial गतिविधियाँ स्वयं भी नहीं कीं और न ही उनके संबंध में आए मुक्तों को भी इसी राह पर अग्रसर किया। गुरुहरि काकाजी महाराज के आशीष से वर्तमान समय में जितने भी हरिभक्त सपरिवार जिस आत्मीयता से जुड़े हैं, वे अपने किसी सगे - संबंधी, मित्र, व्यवसाय या किसी निजी परेशानी के निवारण हेतु संपर्क में आए और...

गुरुहरि काकाजी महाराज व प.पू. गुरुजी से अपनेपन के नाते जुड़ गए।

ऐसे 73 वर्षीय पू. बच्छराज वर्माजी लंबी बीमारी के पश्चात् 24 अप्रैल 2025 की सुबह अक्षरधाम निवासी हुए। उनका जन्म महाराष्ट्र के ‘पांचोरा’ कसबे में 20 अगस्त 1952 यानि गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार के वर्ष में हुआ। युवावस्था में नौकरी के सिलसिले में सन् 1974-75 में दिल्ली आकर कपड़े के व्यापार की salesmanship करते हुए भगवान् स्वामिनारायण के आश्रित पू. नवीनभाई शाह से परिचित हुए। उन्होंने गुरुहरि काकाजी महाराज एवं प.पू. गुरुजी का संपर्क करवाया और... पू. बच्छराजजी अनन्यभाव से ऐसे जुड़े कि प्रगट की भक्ति को ही अपने जीवन का मंत्र बनाया। पश्चात् पू. शारदा भाभी से विवाह किया और पू. गौरांग (सेवक अभिषेक) व पू. हृदय—दो पुत्र रत्न प्राप्त हुए।

पू. बच्छराजजी ऐसे व्यक्ति थे जिनकी निष्ठा, भक्ति और समाज सेवा ने सबका दिल जीत लिया। उनके प्रेरणादायी जीवन की यादें हमेशा सबके दिल में रहेंगी...

\* हमेशा चेहरे पर मुरकान लिए वे हर एक के साथ आत्मीय संबंध रखते। गुरुहरि काकाजी महाराज के सर्वदेशीय सिद्धांत से गुणातीत समाज के सभी खरूपों के साथ उनका अनोखा संबंध था। सभी उन्हें भली भाँति पहचानते थे। प.पू. गुरुजी के साथ वे हर कार्य में सर्वथा खड़े रहते। ‘गुरु’ मानकर गुरुभक्ति तो अदा करते ही और सखाभाव से उनके साथ आनंद भी करते।

- \* भक्तों के साथ सत्संग की बातें करने या किसी भी सभा में संबोधन या संचालन करने की सेवा के लिए तत्पर रहते। सत्संग की सभा में प्रवचन करने के लिए वे ‘सत्संग का तेंदुलकर’ रूप जाने जाते। साथी-मुक्तों के साथ मिलजुल कर सेवा करते हुए वे ज्ञान की बातें, कथा-वार्ता और गुरुहरि काकाजी महाराज व प.पू. गुरुजी की महिमा जाते थे।
- \* जब कभी मुक्तों के साथ travelling में होते, तो रास्ते में खूब धुन कराते और ‘सायं आरती’ - स्तुति वंदना अचूक करवाते। उसके बाद अपनी पसंद के गुजराती या हिन्दी भजन गाते। यूँ उनकी निष्ठा और भवित ने उन्हें एक सच्चा भक्त बनाया।
- \* समय के वे खूब पाबंद थे। जब भी कभी मंदिर से कहीं किसी से मिलने जाना या प.पू. गुरुजी के साथ पथरावनी में जाना होता, तो वे इतना ही पूछते कि मुझे कितने बजे पहुंचना है? उन्होंने कभी कारण नहीं पूछा और यही कहते— गुरुजी ने मुझे चलने के लिए कहा है, इतना ही काफ़ी है। मुझे detail मत बताओ, मैं पहुंच जाऊँगा। और... वे समय से पहले ही पहुंच जाते।
- \* व्यापार में भी उनकी शैली बहुत प्रभावशाली थी। पहले वे सामने वाली party को अपना बना लेते और फिर अपनी बात रखते थे। साथ ही उन्हें मंदिर से, सत्संग से जोड़ने की भी कोशिश करते। ऐसे ही उन्होंने प.पू. गुरुजी से आज्ञा लेकर पू. मल्कानी अंकल जैसे business tycoon का मंदिर से संपर्क कराया। उसके बाद तो पूरा गुणातीत समाज जानता है कि प.पू. गुरुजी के वचन से पू. मल्कानी अंकल ने किस प्रकार सभी गुणातीत स्वरूपों से सर्वदेशीय संबंध बना कर हङ्कदावे का अधिकार दिया व दिल्ली मंदिर के निर्माण कार्य में प.पू. गुरुजी को संपूर्ण साथ दिया।  
सो, पू. बच्छराजजी ने सत्संग में भी एक अच्छे salesman की तरह लोगों को प्रगट प्रभु से जोड़ने की सेवा की है।
- \* गुरुहरि काकाजी महाराज के सेवक, प.पू. गुरुजी से सखाभाव से जुड़े, धुन-भजन के धनी बच्छराजजी के नाम का अर्थ है—बच्चों में राजा! वे सच में काकाजी महाराज का भुलका बने। अपने नाम के अनुरूप उन्हें बच्चों से बहुत प्रेम था। सत्संगियों के बच्चों के साथ वे खूब खेलते, उन्हें अपने पैरों पर बिठा कर झूला झूलाते।
- \* पू. बच्छराजजी ने प.पू. गुरुजी के साथ कैसा संबंध बनाया होगा कि वे अकसर उन्हें याद करते। मंदिर के नज़दीक ही उनका घर था और उनकी दुनिया इतनी ही थी कि घर से मंदिर दर्शन करते हुए office जाना और शाम को काम पूरा करके सीधा मंदिर या घर आना। अधिकतर प.पू. गुरुजी उन्हें फोन करके मंदिर में रात को सोने के लिए बुलाते ही थे। वे भी



**88** भले ही शरीर से कितने थके हों, मन हो या न हो, लेकिन प.पू. गुरुजी की आङ्गा मान कर तुरंत मंदिर चले आते और चुटकुले आदि सुना कर आनंद कराते।

\* बोटाद के पू. शिवलाल सेठ के साथ का मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी का प्रसंग सत्संग में सभी जानते हैं कि स्वामीश्री ने उन्हें व्यावहारिक कार्य में अधिक ओतप्रोत देख कर नाराज़गी ग्रहण करके सच्ची सूझ दी थी। पू. बच्छराजजी ने भी प.पू. गुरुजी को ऐसा अधिकार दिया कि यदि कभी वे भोलेपन में सैद्धांतिक बातों को नज़रअंदाज़ करते हुए दिखते, तो प.पू. गुरुजी हँक से जाहिर में उन्हें कुछ भी कहने में हिचकते नहीं थे। यूँ कहें कि उनका मन किसी चीज़ के लिए माने या न मानें, पर प.पू. गुरुजी उन्हें अपना निजी मान कर उन पर अपना आधिपत्य रखते थे।

देखा जाए तो अपने गुरु के प्रति समर्पित प्रत्येक शिष्य की यही भावना होती है कि वो इस योग्य बने कि गुरु उस पर शासन कर सके। पू. बच्छराजजी का प.पू. गुरुजी के साथ का ये संबंध सबको ऐसा जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

\* प.पू. गुरुजी का उनके प्रति इतना अथाह-निरपेक्ष प्रेम कि सभा में अपने साथ उनका सोफा लगवा कर उन्हें अपने साथ बिठाते। इसके अतिरिक्त अनुष्ठान शिविर में कई बार पू. बच्छराजजी को व्यास पीठ पर बिठा कर वचनामृत, स्वामी की बातें इत्यादि ग्रंथों का पठन करवा कर खुद उसका रहस्य समझाते।

सन् 2019 से पू. बच्छराजजी को Parkinson की बीमारी हुई और धीरे-धीरे उसका शरीर पर इतना असर हुआ कि 2023 तक वे bedridden हो गए। अतः मंदिर के संतों-सेवकों ने प.पू. गुरुजी की आङ्गा से अक्षरज्योति के प्रांगण में बने मकान ‘सरल’ के द्वितीय तल पर उनके रहने की व्यवस्था कर दी, ताकि उनकी पत्नी पू. शारदा भाभी को हूँफ मिलती रहे। दिन-प्रतिदिन पू. बच्छराजजी की तबीयत बिगड़ती देख कर प.पू. गुरुजी अकसर उनके लिए धुन कराते। जब भी प.पू. भरतभाई या प.पू. वशीभाई का दिल्ली आना हुआ, तो प.पू. गुरुजी ने उन्हें भी पू. बच्छराजभाई के पास जाकर धुन करने के लिए कहा।

24 अप्रैल 2025 की सुबह करीब 11:30 बजे पू. बच्छराजजी ने अक्षरधामगमन किया, तब उनका पूरा परिवार, प.पू. दीदी सहित सभी बहनें, पू. नवीनभाई शाह, पू. हरिवदनभाई दोशी आदि का पूरा परिवार उपस्थित था। इस दौरान प.पू. गुरुजी आराम में थे। उस समय गुरुहरि काकाजी महाराज के साथ भगवान् स्वामिनारायण स्वयं उन्हें लेने आए ही होंगे। पू. बच्छराजजी को पूरा सत्संग समाज भली भाँति जानता है, तो स्वाभाविक ही काफ़ी मुक्त उनकी अंतिम यात्रा में शामिल होने आएँगे। सो, पू. आशिष शाह ने सुझाव दिया कि यह जगह छोटी पड़ेंगी, सो मंदिर के प्रांगण में बने shed में उनका पार्थिव शरीर रखा जाए और अंत्येष्टि के लिए सायं

4:00 बजे 'निगम बोध घाट' ले जाया जाए। प.पू. गुरुजी दोपहर को करीब 1:00 बजे आराम में से जागे, तब उन्हें इस घटना के बारे में बताया। तब अपने कमरे की balcony में से दूर से पू. बच्छराजजी को देख कर नम आँखों से अंदर चले गए। फिर जेतलपुर cabin में बैठने के बाद उन्होंने सेवकों से कहा कि प.पू. वशीभाई को बुला लें और अंत्येष्टि आज न करके कल सुबह करें। तुरंत ही स्थानिक हरिभक्तों को इस बदलाव की सूचना दी। रात तक में मुंबई से प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, पू. ओ.पी. अग्रवालजी, पू. अनिलभाई माणेक व पू. रमेशभाई त्रिवेदी दिल्ली मंदिर पहुँच गए।

प.पू. गुरुजी का मंदिर में पू. बच्छराजजी के पार्थिव शरीर को एक रात रोकना सांकेतिक कहा जाए। प.पू. गुरुजी आग्रह करके उन्हें रात को मंदिर में सोने के लिए बुलाते थे। लेकिन, अब बीमारी के कारण पिछले चार साल से वे मंदिर में नहीं रुक पा रहे थे। पर, प.पू. गुरुजी ने कैसी योजना रची कि पू. बच्छराजजी को जीवन यात्रा समाप्त करने के अंतिम दिन भी उन्हें मंदिर में ही रात को रखा।

25 अप्रैल की सुबह 10:00 बजे तक प.पू. वशीभाई, पू. अश्विनभाई, पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, संतों, युवकों, प.पू. दीदी, बहनों तथा हरिभक्तों द्वारा पूजन-हार तथा शाल अर्पण करने के बाद सभी उन्हें बारी-बारी से कंधा देते हुए जेतलपुर cabin के नज़दीक लाए। तब प.पू. गुरुजी ने स्वहस्तों से पू. बच्छराजजी के पार्थिव देह को चंदन का हार व शाल ओढ़ा कर अंतिम विदाई दी। तत्पश्चात् स्वामिनारायण मंत्र का जाप करते हुए मंदिर से थोड़ी दूर तक उन्हें ले गए और ambulance में उन्हें रखा था कि संदेश आया कि प.पू. गुरुजी आ रहे हैं, सो उनकी गाड़ी के आगे - आगे ambulance चलाना। जैसे ही प.पू. गुरुजी की गाड़ी आई, तो सब निगम बोध घाट के लिए रवाना हो गए। सेवकों को ऐसा था कि प.पू. गुरुजी बाहर से ही मंदिर लौट जाएंगे, परंतु वे तो wheel chair पर बैठ कर न केवल अंत्येष्टि स्थल पर गए, अपितु स्वयं मुखाग्नि देकर उन्हें अक्षरधाम की ओर अग्रसर किया। पू. भाईस्वामीजी के बाद यह पहली घटना बनी कि प.पू. गुरुजी ने एक हरिभक्त की अंत्येष्टि विधि संपन्न की। अक्षरनिवासी पू. बच्छराजजी की धर्मपत्नी पू. शारदा भाभी तथा छोटे बेटे पू. हृदय को तो जीवनभर की यह अकल्पनीय स्मृति प.पू. गुरुजी ने दे दी।

दोपहर को मंदिर में सेवकों ने प.पू. गुरुजी से पूछा — आपने क्यों बच्छराजजी को मुखाग्नि दी? एकदम भावुक होकर प.पू. गुरुजी यह बोले — वह मेरा बेटा था...

महाराज के समय का प्रसंग है कि उन्होंने अपने एक भक्त झीणाभाई की शव-शय्या को कंधा देकर उनके द्वारा की गई सेवा के प्रति प्रसन्नता व्यक्त की थी, इसी प्रकार प.पू. गुरुजी ने पू. बच्छराजजी को मुखाग्नि देकर उनके द्वारा की गई सत्यंग सेवा को मान्यता दी।



पू. बच्छराजजी तथा उनकी धर्मपत्नी पू. शारदा भाभी दोनों ही गुरुहरि काकाजी महाराज तथा प.पू. गुरुजी को ऐसे समर्पित थे कि अपने बड़े बेटे पू. गौरांग (अभिषेक) को 16 वर्ष की आयु में प.पू. गुरुजी की सेवा में अहोभाव से समर्पित करके अपनी 71 पीढ़ियों को कल्याण का अधिकारी बनाया। आज प.पू. गुरुजी की निजी सेवा में वह पूर्ण रूप से निमग्न रह कर, एक आदर्श सेवक की मिसाल बन कर प्रगट प्रभु का विश्वास पात्र बना है। सभी गुणातीत स्वरूपों का वह लाड़ला व प्रसन्नता का पात्र बना है।

जब पू. बच्छराजजी को बीमारी हुई, उसे पू. शारदा भाभी ने महाराज की मरजी मान कर यही सोचा कि बच्छराजजी और हमारे हित में ही यह किया होगा। ऐसे विश्वास एवं निष्ठा से उन्होंने खूब सेवा की और कभी भी कोई प्रश्न नहीं किया। पू. बच्छराजजी को लंबे समय तक बीमारी से जूझता देख कर कइयों के मन में प्रश्न भी उठे कि इतनी पीड़ा क्यों झेलनी पड़ी? तब 26 अप्रैल की सुबह उनकी श्रद्धांजली सभा में प.पू. गुरुजी व प.पू. वशीभाई ने समझाया कि महाराज ने उनका आखिरी जन्म कराने के लिए देह की ऐसी बीमारी दी और जन्मों जन्म के आवागमन से आसानी से मुक्ति दिला कर उन्हें अक्षरधाम में बिठा दिया है।

पू. बच्छराजजी ने संत से संबंध दृढ़ करके जिस प्रकार अपना जीवन धन्य किया, उनकी पत्नी पू. शारदा भाभी, पुत्र पू. हृदय-पुत्रवधू पू. ईशा तथा पौत्री—पू. वृदा-पू. दीवा भी गुरुहरि काकाजी महाराज-प.पू. गुरुजी को जीवन के केन्द्र में रख कर उस राह पर अग्रसर हैं। हम सभी उनके गुणों को माहात्म्यसहित याद करते रहें और उनके जैसी जीवनशैली से प.पू. गुरुजी के अंतर में ‘ठंडक’ कर दें—यही सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना!

### ब्रतोत्सवसूची

- (1) दि. 28.5.'25, बुधवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का शाश्वत स्मृति दिन
- (2) दि. 1.6.'25, रविवार — गुरुहरि पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन  
गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
- (3) दि. 5.6.'25, गुरुवार — भगवान र्वामिनारायण का स्वधामगमन दिन
- (4) दि. 7.6.'25, शनिवार — भीम एकादशी, ब्रत
- (5) दि. 10.6.'25, मंगलवार — वटसावित्री
- (6) दि. 12.6.'25, गुरुवार — गुरुहरि काकाजी महाराज का 107वाँ प्राकट्य दिन
- (7) दि. 22.6.'25, रविवार — एकादशी, ब्रत
- (8) दि. 27.6.'25, शुक्रवार — रथयात्रा
- (9) दि. 6.7.'25, रविवार — देवशयनी एकादशी, ब्रत—चातुर्मास प्रारंभ
- (10) दि. 10.7.'25, गुरुवार — गुरुपूर्णिमा
- (11) दि. 21.7.'25, सोमवार — एकादशी, ब्रत



**Bhaav Samadhi**



**APSM**

Most of you must be getting Mandir Information Messages about Functions, Events And Sabha, on WhatsApp.

Those who are not getting please save this number  
**7011521488**

Save the above number by name –

**Our Temple Updates**

After saving, please send Jay Swaminarayan message on the above number and mention your name also.

Thanks!

## Install Our Mobile Applications

### Bhaav Samadhi - APSM

This app contains...

Arti, Bhajan, Swaroop Dhun  
Mahapooja Shlok  
Vachanamrut, Swamini Vato  
H.D. Kakaji Maharaj's Blessings  
P.P. Guruji's Blessings



This app contains...

Calender, Murti Darshan,  
Function Photo & Video  
Mandir Books  
Patrika - Delhi (Bhagwat Kripa)  
Powai (Snehal Sindhu)



आप में से अधिकांश मुक्त WhatsApp द्वारा मंदिर में होते उत्सवों, कार्यक्रमों एवं सत्संग सभाओं की सूचना प्राप्त करते होंगे।

यदि किसी को ये सूचनायें नहीं मिलतीं, तो कृपया  
**7011521488**

नंबर को **Our Temple Updates** के नाम से save कर लें और एक बार अपने नाम के साथ इस नंबर पर जय स्वामिनारायण का संदेश मेज दें।  
धन्यवाद!



ਸਤਸੰਗ ਦੇ ਬੀਜ ਕੀਏ ਜਿਤਥੇ ਧਰਤੀ ਸੀਵਣੀ ਧੰਜਾਬ, ਸ਼੍ਰੀਜੀ ਦੀ ਅਲਖ ਜਗਾਈ ਸਬਦੀ-ਸੀਮਾ-ਜਗਥਾਅਂ  
ਹਮਾਤ ਫੇਰਿਆਂ ਕੀਤਿਆਂ ਗਲੀ-ਗਲੀ ਚਿਚ ਘੁਸੇ ਆਪ, ਜੀ ਮਿਲਿਆ ਅੰ ਭੁਲ ਨ ਵਾਦਾ  
ਤੁਵਾਡੀ ਮੂਰਤਿ ਰਾ ਘਰਾਵ  
ਕਾਕਾਜੀ ਦੀ ਜਥ ਹੀ-ਜਥ ਹੀ-ਜਥ ਹੀ...

